श्रावण मास, कृष्ण पक्ष, 22 वर्ष, अंक 182, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | सोमवार 31 जुलाई 2023 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

मन की बातः शहीद वीर-वीरांगनाओं को सम्मान देने के लिए 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान शुरू होगा, इस साल भी हर घर फहराएं तिरंगा, देश के अलग-अलग हिस्सों से आई मिट्टी से बनेगी अमृत वाटिका

'मेरी माटी, मेरा देश' अभियान चलेगाः मोदी

नई दिल्लीः प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 30 जुलाई को मन की बात प्रोग्राम के जरिए देशवासियों से बात की। मन की बात के 103वें एपिसोड को सुबह 11 बजे टेलीकास्ट किया गया। कार्यक्रम में पीएम मोदी ने शहीदों के सम्मान में 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान चलाने की घोषणा की। उन्होंने कहा- आज देश में अमृत महोत्सव की गूंज है, 15 अगस्त पास ही है। शहीद वीर-वीरांगनाओं को सम्मान देने के लिए 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान शुरू होगा। इसके तहत देश-भर में हमारे शहीदों की याद में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इन विभूतियों की याद में, देश की लाखों ग्राम पंचायतों में विशेष शिलालेख भी स्थापित किए जाएंगे। प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले साल स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 'हर घर तिरंगा अभियान' के लिए जैसे पूरा देश एक साथ आया था। वैसे ही हमें इस बार भी फिर से हर घर तिरंगा फहराना है और इस परंपरा को लगातार आगे बढ़ाना है। पिछले साल हर घर तिरंगा अभियान की शुरूआत हुई थी। इसके तहत लोगों ने 15 अगस्त के दिन अपने घरों पर तिरंगा फहयारा था।

देश के अलग-अलग हिस्सों से आई मिट्टी से बनेगी अमृत वाटिकाः प्रधानमंत्री ने कहा कि इस अभियान के तहत देश-भर में 'अमृत कलश यात्रा' भी निकाली जाएगी। देश के गाँव-गाँव से, कोने-कोने से 7500 कलशों में मिट्टी लेकर ये यात्रा देश की राजधानी दिल्ली पहुचेंगी। ये यात्रा अपने साथ देश के अलग-अलग हिस्सों से पौधे लेकर भी आएगी। 7500 कलश में आई मिट्टी और पौधों से नेशनल वॉर मेमोरियल के पास अमृत वाटिका बनाई जाएगी।

सावन का मतलब ही आनंद और उल्लास हैः पीएम ने कहा- इस समय सावन का महीना चल रहा है। महादेव की आराधना के साथ सावन हरियाली और खुशहाली से जुड़ा होता है। इसका बहुत महत्व रहा है। सावन के झूले, सावन की मेंहदी, सावन के उत्सव। सावन का मतलब ही आनंद और उल्लास है। इस आस्था और परंपराओं का एक पक्ष और भी है। ये हमें गतिशील बनाते हैं। शिव अराधना के लिए कितने ही भक्त कांवड़ यात्रा पर निकलते हैं। 12 ज्योतिलिंगों पर भी श्रद्धालु पहुंच रहे हैं।

अमेरिका ने 100 से ज्यादा दुर्लभ कलाकृतियां लौटाईं

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा- अमेरिका ने हमें सौ से ज्यादा दुर्लभ और प्राचीन कलाकृतियां वापस लौटाई हैं। ये कलाकृतियाँ ढाई हजार साल से लेकर ढाई सौ साल तक पुरानी हैं` इनका नाता देश के अलग-अलग क्षेत्रों से है। 2016 और 2021 में भी जब मैंने अमेरिका की यात्रा की थी, तब भी कई कलाकृतियां भारत को लौटाई गई थी`इस खबर के सामने आने के बाद सोशल मीडिया पर इन कलाकृतियों को लेकर खूब चर्चा हुई। युवाओं में अपनी विरासत के प्रति गर्व का भाव दिखा।

उज्जैन में 18 कलाकर बना रहे चित्रकथाएं: प्रधानमंत्री ने कहा- हम न केवल अपनी विरासत को अंगीकार करें, बल्कि उसे जिम्मेदारी से साथ विश्व के सामने प्रस्तुत भी करें` मुझे खुशी है कि ऐसा ही एक प्रयास इन दिनों उज्जैन में चल रहा है` यहाँ देशभर के 18 चित्रकार, पुराणों पर आधारित आकर्षक चित्रकथाएँ बना रहे हैं ।

ये चित्र, बूंदी शैली, नाथद्वारा शैली, पहाड़ी शैली और अपभ्रंश शैली जैसी कई विशिष्ट शैलियों में बनेंगे` इन्हें उज्जैन के त्रिवेणी संग्रहालय में प्रदर्शित किया जाएगा, यानी कुछ समय बाद जब आप उज्जैन जाएंगे, तो महाकाल महालोक के साथ-साथ एक और दिव्य स्थान के आप दर्शन कर सकेंगे ।

शहडोल में बन रहा है मिनी ब्राजीलः पीएम

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, 'कुछ समय पहले मैं एमपी के शहडोल गया था। वहां आदिवासी भाइयों से मुलाकात हुई। पकरिया गांव के आदिवासियों ने प्रकृति और जल संरक्षण के लिए काम कर दिया है। 100 कुओं को वाटर रिचार्ज सिस्टम में बदल दिया है। बारिश का पानी इन कुओं में जाता है और वहां से जमीन में। सभी गांववालों ने 800 कुओं को रिचार्ज के लिए उपयोग में लाने का लक्ष्य बनाया है। एमपी के शहडोल में विचारपुर गांव है, इसे मिनी ब्राजील कहा जाता है। ये गांव आज उभरते सितारों का गढ़ बन गया है। यहां मेरी मुलाकात इन खिलाड़ियों से हुई। विचारपुर गांव के मिनी ब्राजील बनने की यात्रा 2 दशक पहले शुरू हुई। यह कभी नशे का शराब का गढ़ था। रईस अहमद जो पूर्व फुटबॉलर हैं और कोच हैं, उन्होंने युवाओं को फुटबॉल सिखाना शुरू किया। अब विचारपुर की पहचान फुटबॉल से होने लगी। फुटबॉल क्रांति नाम से एक प्रोग्राम चल रहा है।

शहडोल के विचारपुर से 40 नेशनल और स्टेट लेवल प्लेयर निकलेः पीएम ने बताया कि विचारपुर से नेशनल और स्टेट लेवल के 40 से ज्यादा खिलाड़ी निकले हैं। काफी बड़े इलाके में 1200 से ज्यादा फुटबॉल क्लब बन गए हैं। कई पूर्व खिलाड़ी और कोच यहां युवाओं को ट्रेनिंग दे रहे हैं। एक आदिवासी इलाका जो अवैध शराब के लिए जाना जाता था, नशे के लिए बदनाम था, वो आज देश की फुटबॉल नर्सरी बन गया है। जहां चाह, वहां राह। प्रतिभाओं की कमी नहीं है। उन्हें तलाशने और तराशने की जरूरत है।

मणिपुर का दौरा कर दिल्ली लौटे 'इंडिया' के 21 सांसद

● गवर्नर से मिलकर कहा- एक्शन जरूरी; पीएम की चुप्पी दिखाती है वो गंभीर नहीं

इंफालः विपक्षी गठबंधन इंडिया के 21 सांसदों का प्रतिनिधिमंडल दो दिन का मणिपुर दौरा पूरा कर रविवार दोपहर दिल्ली लौट आया। एयरपोर्ट पर राजद सांसद मनोज झा ने कहा, हम चाहते हैं कि मणिपुर में शांति बहाल हो। हमारी एकमात्र मांग है कि दोनों समुदाय सद्भाव से रहें। मणिपुर में स्थिति पीड़ादायक है। संसद में पहले ही चर्चा हो चुकी है कि सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल को मणिपुर का दौरा करना चाहिए। कांग्रेस सांसद गौरव गोगोई ने कहा कि एनडीए गठबंधन और पीएम मोदी को भी मणिपुर का दौरा करना चाहिए। उनके मंत्री दिल्ली में बैठकर बयान दे रहे हैं।

जल्द होगा गगनयान टेस्टः इसरो

श्रीहरिकोटाः इसरो ने रविवार (30 जुलाई) को पीएसएलवी से सिंगापुर के 7 सैटेलाइट लॉन्च किए। इसके बाद इसरो ने एक बुक लॉन्च की, जिसमें इस साल के आगामी प्लान के बारे में बताया गया है। इसरो प्रमुख एस सोमनाथ ने कहा कि हम अगस्त या सितंबर की शुरूआत में एक और पीएसएलवी मिशन लॉन्च करेंगे।

गगनयान का करेंगे परीक्षणः इसरो के अनुसार, गगनयान टेस्ट में तीन लोगों को स्पेस में भेजा जाएगा। ये तीन दिन का मिशन होगा, जिसमें 400 किमी की दूरी तय कर उन्हें धरती पर सुरक्षित वापस लाया जाएगा।

अयोध्याः भक्तों के लिए खोला गया श्री रामजन्म भूमि पथ

600 मीटर लंबा और 100 फिट चौड़ा है यह मार्ग

अयोध्याः रविवार को श्री रामजन्म भूमि पथ भक्तों के लिए खोल दिया गया। पथ के खुलते ही भक्तों ने रामलला के जयकारे लगाए। यह पथ बिरला धर्मशाला से सुग्रीव किला होते रामलला के दरबार में जाएगा। यह पथ 600 मीटर लंबा व करीब 100 फुट चौड़ा है। मंदिर ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस पथ के खुलने से भक्त 500 मीटर कम चलकर दर्शन कर सकेंगे। रामलला के दर्शन और निकासी दोनों इसी पथ से होगी।

श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र में भक्तों की सुविधा के लिए निःशुल्क लॉकर व्यवस्था शुरू की है। जिसमें यात्री अपना कीमती सामान रख सकेंगे। ताकि वह मंदिर कम से कम सामान लेकर जा सकें। इसके साथ ही यात्रियों के सुविधा के लिए सुलभ शौचालय का भी निर्माण कराया गया है। मंदिर ट्रस्ट के महासचिव ने बताया कि इन सुविधाओं से भक्तों को आसानी होगी। कार्यक्रम के दौरान ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय, ट्रस्ट के सदस्य अनिल मिश्र, विमलेंद्र मोहन प्रताप मिश्र, महापौर महंत गिरीशपति त्रिपाठी, पूर्व महापौर ऋषिकेश उपाध्याय, कमिश्नर गौरव दयाल, डीएम नीतीश कुमार व एसएसपी राज करण नैयर मौजूद रहे।

सीएम कमांड सेंटर-डैशबोर्डः यूपी को सुशासन का उपहार

गोरखपुर। मुख्यमंत्री कमांड सेंटर व सीएम डैशबोर्ड से योगी आदित्यनाथ ने यूपी वालों को सुशासन का उपहार दे दिया। आमजन की समस्याओं का समयबद्ध निस्तारण और सरकार की योजनाओं का बेहतर ढंग से लाभ देने में यह काफी कारगर होगा। मुख्यमंत्री योगी की दूरदर्शी सोच से यूपी के 24 करोड़ लोगों की सुविधाओं पर "सरकार" की नजर रहेगी। वहीं पुलिस-प्रशासन के आलाधिकारियों, नगर निगम, विकास प्राधिकरण, विश्वविद्यालयों की परफॉर्मेंस व सरकार के विभिन्न योजनाओं के प्रदर्शन के अनुसार मासिक रैंकिंग व ग्रेडिंग भी की जाएगी। मुख्यमंत्री डैशबोर्ड की मदद से रियल टाइम मॉनीटरिंग की जाएगी। सबका प्रयास, सबका साथ पाने वाले मुख्यमंत्री योगी

● सीएम योगी की दूरदर्शी सोच से यूपी के 24 करोड़ लोगों की सुविधाओं पर रहेगी नजर

आदित्यनाथ अब यूपी के हर नागरिक का विकास कर उनका विश्वास जीत चुके हैं। सीएम योगी के प्रति आमजन के विश्वास में यह योजना भी महत्वपूर्ण कदम निभाएगी। जनसामान्य को डिजिटल टेक्नोलॉजी से जोड़ा गया

डिजिटल इंडिया अभियान ने जनकल्याणकारी योजनाओं की समयबद्ध प्रभावी मॉनीटरिंग सुनिश्चित करके जनसामान्य को डिजिटल टेक्नोलॉजी से जोड़ा है। पहली बार तकनीक आधारित गुड गवर्नेंस के आधार पर शासन की सभी योजनाओं का संचालन किया जा रहा है।

कांग्रेस सरकार ने बंद की थी शिवराज की 51 योजनाएंः शाह

इंदौर में अमित शाह ने कमलनाथ को बताया करप्शननाथ

भोपालः केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को मध्य प्रदेश के इंदौर में बूथ सम्मेलन को संबोधित करते हुए देवी अहिल्या बाई होल्कर को याद किया। इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर सहित कई गणमान्य नेता मौजूद रहे। अमित शाह ने कहा कि मध्य प्रदेश की जनता का ह्रदय से धन्यवाद करता हूं कि जिसने भाजपा पर कृपा करके, भाजपा की झोली वोटों से भर दी। आज कार्यकताओं का ये उत्साह बता रहा है कि 2023 और 2024 के चुनाव में भाजपा की सरकार बनने जा रही है।

'मालवा में हो रहा प्रदेश का पहला सम्मेलन': उन्होंने कहा कि कार्यकताओं से आह्वान करने आया हूं। एक प्रकार से विधानसभा चुनाव 2023 की आज यहां शुरूआत हो जा रही है। पूरे मध्य प्रदेश में और हर संभाग में इसी तरह के सम्मेलन होने हैं और मध्य प्रदेश में सबसे पहला सम्मेलन मालवा प्रदेश में हो रहा है। आज मोदी जी ने दुनिया में भारत का झंडा बुलंद करने का काम किया है। हर जगह सिर्फ मोदी-मोदी के नारे लग रहे हैं और ये नारे मध्य प्रदेश, भारत और देश की 140 करोड़ जनता के सम्मान में लग रहे हैं। उन्होंने कहा कि पहले आए दिन पाकिस्तान से आलिया, मालिया, जमालिया आते थे।

कुलगामः आतंकियों ने सेना के जवान को अगवा किया

कुलगामः कश्मीर के कुलगाम में आतंकियों ने आर्मी के एक जवान को अगवा कर लिया है। 25 साल के इस जवान का नाम जावेद अहमद वानी है। वह कुलगाम जिले के अस्थाल गांव का रहने वाला है। आतंकियों ने शनिवार रात करीब 8 बजे उसे उसकी गाड़ी से किडनैप कर लिया था। कार में खून के निशान भी मिले हैं। वानी की पोस्टिंग लेह में है। जावेद के माता-पिता ने आतंकियों से बेटे को छोड़ने की गुहार लगाई है। वानी ईद की छुट्टी मनाने घर आया था। शनिवार को वानी अपनी कार से चावलगाम जा रहा था। कई घंटों तक लापता रहने के बाद गांव के लोगों ने उसे ढूंढना शुरू किया।

जवान की चप्पलें और खून के निशान मिलेः तलाशी के दौरान उसकी अनलॉक कार कुलगाम के पास ही प्रानहाल से बरामद की गई। कार से जवान की चप्पलें और खून के कतरे मिले हैं। सेना और पुलिस की एक टीम सर्च ऑपरेशन चला रही है। इलाके में नाकाबंदी कर दी गई है।

मां बोलीं- मुझे मेरा बेटा लौटा देंः जावेद की मां ने कहा कि मेरा बेटा मासूम है। अगर उसने कुछ गलत किया है, तो मैं माफी मांगती हूं। भगवान के लिए मुझे मेरा बेटा लौटा दें। हम सभी से माफी चाहते हैं। कृपया उसे रिहा कर दें।

कश्मीर-लद्दाख को जोड़ने वाली जोजिला टनल का 40% काम पूरा

डेडलाइन चार साल बढ़ाई, 4 घंटे का रास्ता 15 मिनट में तय होगा

लेहः कश्मीर घाटी और लद्दाख को जोड़ने वाली जोजिला टनल की डेडलाइन बढ़ा दी गई है। इलाके में बार-बार बदलते मौसम के चलते नई डेडलाइन अब दिसंबर 2030 कर दी गई है। हालांकि, टनल का काम 40% तो पूरा हो गया है। यह टनल एशिया की सबसे लंबी और ऊंचाई पर बनने वाली टनल है। टनल 4 घंटे के रास्ते को महज 15 से 20 मिनट का बना देगी। टनल की टोटल लंबाई 13 किलोमीटर है, जिसमें दोनों तरफ से 3-3 किलोमीटर (कुल 6 किमी) की खुदाई की जा चुकी है।

खराब मौसम के कारण डेडलाइन बढ़ीः बॉर्डर रोड आर्गनाइजेशन के अधिकारी कैप्टन आईके सिंह ने बताया कि इस इलाके में हिमस्खलन की घटनाएं होती रहती हैं। इसके चलते काम को बारा-बार रोकना पड़ता है। जोजिला टनल का काम दिसंबर 2026 में पूरा होना था। लेकिन बार बार बदलते मौसम के चलते डेडलाइन बढ़ाकर दिसंबर 2030 की गई है।

ऑस्ट्रियन ट्युनलिंग मेथड से बनाई जा रहीः यह प्रोजेक्ट 11,678 फीट की ऊंचाई पर हो तैयार हो रहा है। ठल्-1 श्रीनगर-कारगिल-लेह नेशनल हाईवे आर्मी के लिए खास महत्व रखता है। ये हाईवे ठंड के मौसम में भारी बर्फबारी के चलते लद्दाख को कश्मीर सहित पूरे देश डिसकनेक्ट कर देता है। टनल बनने से हर मौसम में लद्दाख से कनेक्टिविटी बनी रहेगी। गांदरबाल जिले से सेंट्रल लद्दाख के कारगिल जिले के मिनीमार्ग से जोड़ेगा। टनल प्रोजेक्ट में शामिल 18 किलोमीटर सड़क बनाने तैयारी की जारी है।

सुप्रीम कोर्ट ने सेना में अनुशासन को सर्वोच्च बताया

नई दिल्लीः सुप्रीम कोर्ट ने सेना में अनुशासन को सबसे जरूरी बताया है। कोर्ट ने ये बात एक जवान की याचिका को खारिज करते हुए कही। इस जवान को जरूरत से ज्यादा छुट्टी लेने पर सेना से निकाल दिया गया था। कोर्ट ने कहा- जवान ने सेना के अनुशासन को तोड़ा है। जवान को पहले 39 दिन और फिर 30 दिन की छुट्टी दी गई थी। इसके बाद भी जवान ने जॉइन नहीं किया। इसके बाद सेना ने कार्रवाई करते हुए उसे बर्खास्त कर दिया।

घाटी में उड़ान की प्रैक्टिस कर रहे पायलट; यह इलाका चीन-पाकिस्तान बॉर्डर के चलते संवेदनशील

वायुसेना ने लड़ाकू विमान तेजस को कश्मीर भेजा

श्रीनगरः भारतीय वायु सेना ने जम्मू-कश्मीर के अवंतीपोरा एयरबेस पर हल्के लड़ाकू विमान तेजस को तैनात किया है। सेना का कहना है कि उनके पायलट्स घाटी में उड़ान का अनुभव इकट्ठा कर रहे हैं। कश्मीर, पड़ोसी देशों चीन-पाकिस्तान के लिहाज से संवेदनशील है। तेजस मल्टीरोल हल्का लड़ाकू विमान है जो वायुसेना को कश्मीर के जंगल और पहाड़ी इलाकों में और मजबूत करेगा। भारतीय वायु सेना के पास मौजूदा वक्त में 31 तेजस विमान हैं। इसके अलावा, सेना जम्मू-कश्मीर और लद्दाख में अपने

विमानों को ले जाती रहती है ताकि उन्हें हिमालय की घाटियों में उड़ान भरने का एक्सपीरियंस मिलता रहे। वेस्टर्न कमांड के एयर ऑफिसर कमांडिंग इन चीफ एयर मार्शल पीएम सिन्हा ने 27 जुलाई को अवंतिपोरा एयरबेस का दौरा किया। तेजस के साथ उनकी यह तस्वीर वेस्टर्न कमांड के ट्विटर हैंडल ने शेयर की है। भारतीय वायुसेना तेजस में ज्यादा कैपेबिलटीज जोड़कर इसका पुरजोर समर्थन कर रही है। वायुसेना ने पहले ही अपने दो स्क्वाड्रनों को इसके इनीशियल और फाइनल ऑपरेशन की मंजूरी दे दी है। वहीं 83 माक$ के लिए एक कॉन्ट्रैक्ट साइन किया है। ये सभी 83 विमान एक या दो साल में सेना को मिल जाएंगे। हालांकि सेना की नजर डीआरडीओ में डेवलप किए जा रहे मार्क-2 और एडवांस्टड मल्टीरोल कॉम्बैट एयरक्राफ्ट अटउअ पर भी है।

क्रिकेटर्स को पैसों का घमंड : कपिल देव

नई दिल्लीः वर्ल्ड कप 1983 के विजेता कप्तान कपिल देव ने हाल ही में दिए एक इंटरव्यू में कहा- कभी-कभी ज्यादा पैसे होने से घमंड भी आ जाता है। मौजूदा दौर के खिलाड़ी पैसों के घमंड में पूर्व खिलाड़ियों से सलाह लेने नहीं जाते हैं और बार-बार एक ही गलती को दोहराते हैं। जबकि खेल में हमेशा सुधार की गुंजाइश रहती है।

उन्हें लगता है कि वे सब कुछ जानते हैंः कपिल देव ने इंटरव्यू में कहा- क्रिकेटर्स को लगता है कि वे सब कुछ जानते हैं। पहले और आज के क्रिकेटर में यही अंतर है। मैं कहूंगा कि बहुत सारे क्रिकेटर हैं

जिन्हें मदद की जरूरत है। जब सुनील गावस्कर हैं, तो आप उनसे बात क्यों नहीं कर सकते? उन्हें लगता है कि हम सब कुछ जानते हैं। हो सकता है कि वे सब कुछ जानते हों, लेकिन जिसने क्रिकेट के 50 सीजन देखे हों, उसकी अतिरिक्त मदद से कोई नुकसान नहीं होगा।

कपिल देव की कप्तानी में भारतीय

● इन्हें लगता है वे सब जानते हैं; सीनियर्स की सलाह नहीं लेते, इसलिए गलतियां दोहरा रहे

टीम ने जीता था वर्ल्ड कपः कपिल देव की कप्तानी में ही भारतीय टीम ने 1983 में पहली बार वर्ल्ड कप जीता था।

लॉर्ड्स के मैदान पर खेले गए फाइनल मुकाबले में भारत ने वेस्टइंडीज को 43 रनों से मात दी थी। विंडीज टीम इससे पहले 1975 और 1979 में विश्वकप जीत चुकी थी, ऐसे में फाइनल मुकाबले में वेस्टइंडीज को जीत का दावेदार माना जा रहा था।

खबर संक्षेप

दबंगों ने गिराई दीवार, पुलिस कर रही जांच

जारी। ग्राम पंचायत खीरी के नेचुना में न्यायालय में वाद विचाराधीन होने के बावजूद शुक्रवार की रात में दबंगों ने बाउंड्री की दीवार ध्वस्त कर दिया। सुबह जानकारी होने पर भुक्तभोगी ने पुलिस से लिखित शिकायत की है। काशी नरेश पुत्र विजय शंकर का घर से 100 मीटर दूर बनी बाउंड्री का गांव के ही लोगों से स्वामित्व को लेकर दीवानी न्यायालय में वाद विचाराधीन है। इसके बावजूद दबंगों ने बाउंड्री की दीवार रात में क्षतिग्रस्त कर दी। सुबह जानकारी होने पर काशी नरेश ने नामजद शिकायती पत्र देकर कार्रवाई की मांग की है पुलिस की जांच कर रही है। इंस्पेक्टर कौधियारा संजय कुमार द्विवेदी ने बताया कि हल्का दरोगा को मौके पर भेजा गया है जांच कर कार्यवाही की जाएगी।

दहेज के लिए ससुरालियों ने गर्भवती बहू को निकाला

पीड़िता बोली-शादी के बाद से प्रताड़ित किया जाता था, 5 लाख रुपए मांगा जा रहा था

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। अलोपीबाग मोहल्ले की महिला ने अपने पति, सास और ननद के खिलाफ दहेज उत्पीड़न का केस दारा गंज कोतवाली में दर्ज कराया है। पीड़िता ने बताया कि दो साल पहले उसकी शादी हुई थी। तब से उसे दहेज के लिए शारीरिक एवं मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जा रहा है। उसके साथ मारपीट की जाती है। पुलिस का कहना है एफआर दर्ज कर-के जांच की जा रही है ।नगरअलोपीबाग निवासी खुशबू सोनकर की ओर से दर्ज कराई गई एफआईआर के मुताबिक अभय जायसवाल पुत्र संतलाल जायसवाल के साथ उसकी शादी वर्ष 2021 में हुई थी। शादी के बाद से ही दहेज के लिए उसका पति उसे प्रताड़ित करने लगा था। पांच लाख रुपए मायके वालों से मांग कर लाने की डिमांड की जाने लगी। न मिलने पर उसके साथ मारपीट की गई और घर से बाहर निकाल दिया गया।

बेटा पैदा होने पर कोई मिलने नहीं आया : पीड़िता ने सिविल लाइन महिला थाने में शिकायत की। वहां पुलिस ने दोनों पक्षों को बुलाकर

समझौता करा दिया। कुछ दिन तक तो सब ठीक रहा। बाद में पति, सास व ननद मिलकर उसे घर से मारपीट कर बाहर निकाल दिए। इसमें उसे घर से निकाल दिया गया। उस वक्त वह गर्भवती थी। कुछ दिन बाद उसने एक बेटे को जन्म दिया। जिसको देखने के लिए ससुराल पक्ष से कोई नहीं आया।

पुलिस ने दर्ज किया मुकदमा : खुशबू अपने बेटे को लेकर अपने ससुराल गई। वहां उसके साथ मारपीट की गई और कहा गया कि जब तक दहेज के रुपए नहीं लेकर आएगी घर में घुसने नहीं दिया जाएगा। खुशबू की तहरीर पर दारागंज पुलिस ने 30 जुलाई को पति अभय जायसवाल, सास गुड्डी जायसवाल और ननद के खिलाफ दहेज उत्पीड़न विभिन्न धाराओं में एफआईआर दर्ज की है। इंस्पेक्टर दारागंज आशीष भदौरिया ने बताया कि दहेज उत्पीड़न केस रजिस्टर करके जांच की जा रही है।

ऑनलाइन ट्रेडिंग के खिलाफ मुखर हुए व्यापारी

प्रयागराज। प्रयागराज में प्रयाग व्यापार मंडल की ओर से रविवार को करेली के गुरुनानक नगर स्थित शगुन गेस्ट हाउस में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें जिले के व्यापारियों की समस्याओं और समाधान की दिशा में रणनीति तैयार करने पर चर्च हुई। अध्यक्षता प्रयाग व्यापार मंडल के कार्यवाहक अध्यक्ष राणा चावला ने की। बताया कि अध्यक्ष विजय अरोरा ने इस संस्था को मजबूती दी। कई संस्थाओं को जोड़कर एक माला में पिरोने का काम किया। संगठन की मजबूती बनाए रखने पर हर संभव सहयोग दिया जाएगा। महामंत्री सुहैल अहमद ने कहा कि व्यापारियों पर अत्याचार का संगठन ने हमेशा मुंहतोड़ जबाव दिया। आज व्यापारी समाज निर्भीक होकर व्यापार कर रहे हैं। कहा कि ऑनलाइन हट्रेडिंग की वजह से खुदरा व्यापार चौपट हो गया है। सरकार ऑनलाइन ट्रेडिंग पर रोक लगाए। इससे जुड़े कारोबार पर भी जीएसटी तय की जाय। नैनी इंडस्ट्रीज के अध्यक्ष राजीव नैयर ने व्यापार को बढ़ावा देने की दिशा में सरकार की ओर से दी जाने वाली सुविधाओं पर चर्चा की। वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुशील खरबंदा ने कहा कि प्रयाग व्यापार मंडल को हर तरीके का सहयोग दिया जाएगा। जिला अध्यक्ष मौहम्मद कादिर ने कहा कि फुटपाथ पर ठेला लगाने वाले व्यापारियों को व्यवस्थित करने की दिशा में आवाज उठाने की जरूरत है। इस मांग को जिला प्रशासन के यहां रखा जाएगा। जिला महिला व्यापार मंडल की अध्यक्ष अवंतिका टंडन ने कहा कि प्रयाग व्यापार मंडल से जुड़ने के बाद महिला व्यापारी खुद को सुरक्षित महसूस करती हैं। सिविल डिफेस के अनिल गुप्ता ने कहा कि प्रयाग व्यापार मंडल की ओर से शहर के व्यापारियों की समस्याएं मुखरता से उठाई जाती रही हैं।

आईटीआई में अप्रेंटिसशिप मेले का आयोजन आज

नैनी। नैनी राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान नैनी प्रयागराज के प्रधानाचार्य एस.के. श्रीवास्तव के अनुसार राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान नैनी प्रयागराज में 31 जुलाई 2023 को प्रातः 10:30 से 3:30 तक अप्रेंटिसशिप मेले का आयोजन होना सुनिश्चित किया गया है, जिसमें कई कंपनियां प्रतिभाग कर रही हैं। 50 पदों के लिए विभिन्न व्यवसायों की आवश्यकता है जैसे कि फिटर, इलेक्ट्रीशियन, इलेक्ट्रॉनिक, टर्नर मशीनिस्टआदि आईटीआई पास के लिए अप्रेंटिस हेतु पद खाली है। नोट 1 सभी अभ्यार्थियों को मूल प्रमाण पत्र व छाया प्रति ले आना अनिवार्य है। 2 आईटीआई पास अभ्यर्थियों का एनएपीएस पोर्टल पर पंजीकरण होना अनिवार्य है।

विधायक हर्षवर्धन बाजपेई का जन्मदिन मनाया गया

सिविल लाइन सुभाष चैराहे पर श्री सूंदरकांड पाठ एवम भजन का आयोजन

प्रयागराज। शहर उत्तरी के विधायक इंजीनयर हर्षवर्धन बाजपेई का जन्मदिन उनके समर्थक और भाजपा के कार्यकर्ता,पदाधिकारियों के द्वारा सिविल लाइन के सुभाष चौराहे पर श्री सुंदरकांड पाठ,भजन के बाद प्रसाद ग्रहण के बाद संपन्न हुआ।आपको बता दे कि हर्षवर्धन बाजपई के जन्मदिन पर सुबह से ही उनके रामबाग स्तिथ आवास कार्यालय पर उनके चाहने वाले ,प्रशंसकों, शहर के नामचीन, भाजपा कार्यकर्ता, पदाधिकारी,टीम हर्ष बाजपेई के लोगो का बधाई देने के लिए तांता लगा रहा। आने वाले सभी लोगो को विधायक ने आभार व्यक्त किया। उसके बाद सिविल लाइन के सुभाष चौराहे पर श्री सुंदरकांड पाठ का आयोजन उसके बाद विधाय आरती ,भजन के बाद विधायक की माता जी डॉ रंजना बजपपी द्वारा केक को काटा गया।इस अवसर पर विधायक हर्षवर्धन बाजपेई ने आये हुए सभी लोगो का दिल से आभार व्यक्त करते हुए कहा आपके इस प्यार औ? लगाव से अभिभूत हु और इस प्रयागराज के लोगों से जो मुझे प्यार मिला उसका मैं ऋणी हु।और जब तक मेरी सांस चलेगी तब तक आपके और क्षेत्र के विकास के लिये कार्य करता रहूंगा। इस अवसर पर मेयर गणेश केशरवानी,एमएलसी सुरेंद्र चौधरी, पूर्व विधायक दीपक पटेल ,जया पाल, समस्त पार्षद, भाजपा के पदाधिकारी,कार्यकर्ता, टीम हर्ष बाजपई के सदस्य एवम शुभचिंतक एवम प्रशंसक भारी संख्या में उपस्थित रहे।

जमुनापार के लोक कलाकारों ने कजरी महोत्सव में बांधी समा

अखंड भारत संदेश

करछना। क्षेत्र के रामपुर स्थित लोकमंगल संस्थान में आयोजित कजरी महोत्सव में जुटे यमुनापार के लोक कलाकारों ने प्रस्तुतियों से खूब समां बांधी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में जागृति मिशन के संयोजक डॉ.भगवत पांडेय, एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ.व्यंजना पांडेय,डॉ.आयुषी पांडेय,डॉ.योगेन्द्र प्रताप सिंह मौजूद रहे। अध्यक्षता संस्थान के निदेशक रामलोचन सांवरिया और संचालन वरिष्ठ गीतकार डॉ.राजेंद्र शुक्ल ने किया। त्रिभुवन नाथ गौड़ द्वारा प्रस्तुत देवी गीत के उपरांत कलाकारों ने कजरी के कई रंग उकेरे। आकाशवाणी दूरदर्शन के चर्चित कलाकार

श्यामलाल बेगाना की चौलर कजरी खूब सराही गई तो वहीं वरिष्ठ लोकगायक बचऊलाल यादव द्वारा प्रस्तुत बनारसी कजरी ने खूब तालियां बटोरी। जनक जी,राजेश कुमार,विभव शंकर यादव,दुखीराम गुप्ता, मोनू मस्ताना,दीपेश कुमार बबलू और सत्यवान ने मिजार्पुरी कजरी की बानगी प्रस्तुत करते हुए खूब वाहवाही लूटी। रंजीत कुमार,पवन कुमार, आनंद, रामअवतार कुशवाहा के उपरांत इन्द्रजीत यादव, रामभोर मिश्र, कौशिल्या देवी और मोहिनी श्रीवास्तव ने मिजार्पुरी कजरी से खूब शमा बांधी। मुख्य अतिथि ने लोक कलाकारों को संस्कृति का संवाहक बताते हुए इसकी अलख जगाए रखने पर जोर दिया। कार्यक्रम के उपरांत दिवंगत समाजसेवी नारायण दत्त तिवारी एवं दिवंगत लोक कलाकार रामबाबू जूनियर को श्रद्धांजलि दी गई। लोक कलाकार रामबाबू यादव ने सभी के प्रति स्वागत आभार प्रकट किया। इस मौके पर वेद श्रीवास्तव, जीतेंद्र जलज, आचार्य मंगला प्रसाद, मोहन जी शुक्ला, फूलचंद यादव, रंजीत कुमार अमर बहादुर, राम सुचित, अतुल तिवारी, पिंटू गुप्ता विजयपाल, शिवा समेत बड़ी संख्या में संगीत प्रेमी श्रोता मौजूद रहे।

लो वोल्टेज से आजिज उपभोक्ताओं ने उपकेंद्र पर किया प्रदर्शन

अखंड भारत संदेश

करछना। प्रयागराज बिजली कटौती और लो वोल्टेज से बौखलाऐ उपभोक्ताओं का सब्र का बांध टूटा घंटों उप केंद्र पर किया प्रदर्शन भीरपुर घोड़े डी उपकेंद्र पर बड़ी संख्या में उपभोक्ताओं का हुजूम जिला पंचायत सदस्य डॉ विजय बाबू के नेतृत्व में घंटों प्रदर्शन कर अधिकारियों को चेता दिया कि बिजली की समस्या तत्काल दुरुस्त नहीं की गई तो धरना प्रदर्शन अनवरत जारी रहेगा बता दें कि घोड़े की भीरपुर उप केंद्र से तराई क्षेत्र के डीहा , भीरपुर भिटरिया मछुआ अमिलो हरई पिपराव लोहारी लटकहा खजुरौल पनासा आदि 2 दर्जन से अधिक गांव को बिजली की सप्लाई की जाती है लेकिन महीनों से बिजली के लो वोल्टेज करंट के चलते सरकारी व गैर सरकारी नलकूप संचालित नहीं हो पा रहे हैं जिससे किसानों की धान की रोपाई

सिंचाई पूरी तरह प्रभावित है अधिकारियों को कई बार चेताया गया था लेकिन किसी ने उक्त समस्या पर विचार कर समाधान नहीं निकाला जिसको लेकर सैकड़ों की संख्या में उपभोक्ताओं ने जिला पंचायत सदस्य के नेतृत्व में उप केंद्र पर धरना प्रदर्शन कर अवर अभियंता को ज्ञापन देकर 24 घंटे के अंदर बिजली की समस्या बहाल किए जाने की मांग की है इस मौके पर राज प्रताप सिंह राज प्रताप सिंह सुरेंद्र सिंह दीपक शुक्ला सत्य मिश्रा ओमप्रकाश आदिवासी प्रधान बब्बू पांडे सोनू मिश्रा एडवोकेट अरुण कुमार द्विवेदी ब्रह्मानंद द्विवेदी ज्वाला यादव समीर पांडे छोटे लाल शर्मा भूलीशुक्ला अंशु शुक्ला पवन शुक्ला , आदि बड़ी संख्या में बिजली उपभोक्ता शामिल रहे।

सहसों ब्लॉक सभागार में सुनी गई पीएम की मन की बात

सहसों। पीएम की मन की बात का 103वां संस्करण बूथ संख्या 118 थानापुर का कार्यक्रम ब्लॉक सभागार सहसों में ब्लाक प्रमुख गीता सिंह की अध्यक्षता में सुना गया। जिसमें भारी संख्या में ग्रामीण किसान एवं भाजपा कार्यकताओं ने उपस्थित होकर प्रधानमंत्री द्वारा देश की उपलब्धियों एवं विशेष कार्यों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा 30 करोड पौधारोपण व देश में आई बाढ़ और नदियों के उफान के विषय पर चर्चा किया। पीएम ने नशा मुक्ति एवं विदेशी पर्यटकों का अमरनाथ यात्रा पर आना तथा हज यात्रा के लिए बिना पुरुष के साथ लिए चार सौ मुस्लिम महिलाओं ने यात्रा किया जिसकी सफलता के लिए प्रधानमंत्री ने सऊदी अरब के सरकार को धन्यवाद किया। उत्तराखंड की माताओं और बहनों के लिए आजीविका मिशन द्वारा भोजपत्र को सहेजने एवं उससे रोजगार के लिए अवसर प्रदान हेतु पीएम ने आभार व्यक्त किया। मुख्य रूप से भाजपा नेता राकेश बहादुर सिंह, पवन कुमार शुक्ल, राकेश प्रसाद मिश्रा, प्रमुख प्रतिनिधि शिव नारायण सिंह गप्पू , के के चौरसिया, राहुल सिंह, डॉ राजेंद्र वर्मा, दीनानाथ पटेल, अखंड प्रताप सिंह, सुशील सिंह सहित आदि लोग उपस्थित रहे। इसी तरह भाजपा मंडल सहसों के शक्ति केन्द्र चकिया घरहरा बूथ संख्या 153 पर पूर्व जिला उपाध्यक्ष भाजपा गंगापार एवं अध्यक्ष भूमि विकास बैंक फूलपुर वीरेन्द्र बहादुर सिंह की अगुवाई में ग्रामीणों एवं कार्यकताओं सहित पीएम मोदी के मन की बात का एपिसोड 103 बहुत ही उत्साह के साथ ध्यान से सुना गया। मुख्य रूप से मंडल अध्यक्ष अनिल कुमार सरोज, संतोष कुमार सिंह, विंध्यवासिनी प्रसाद मिश्र, आलोक कुशवाहा, आलोक सिंह, राम शुक्ल, कृष्ण मुरारी शुक्ला, बालमुकुंद ओझा, शंभू नाथ मिश्रा, कमलाकांत पांडेय, कुमार पांडेय, मिथिलेश गुप्ता आदि मौजूद रहे। इसी क्रम में सहसों बाजार में बूथ संख्या 196 सहसों पर जिला संयोजक नमामि गंगे भाजपा गंगापार राजभर द्विवेदी के नेतृत्व में पार्टी

कार्यकताओं, व्यापारियों एवं युवाओं, छात्रों ने उपस्थित होकर प्रधानमंत्री की मन की बात को बड़े ही ध्यान से सुना। मन की बात में पीएम मोदी ने मेरी माटी, मेरा देश कार्यक्रम से देशवासियों को जोड़ने का लक्ष्य रखने की भी चर्चा किया। कार्यक्रम के उपरांत टिफिन कार्यक्रम कर उपस्थित लोगों ने आपस में मिलजुलकर जलपान किया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से श्रीकांत त्रिपाठी, शिव बाबू केसरवानी, कन्हैया केसरवानी, जगदीश, श्याम बाबू मोदनवाल, रामबाबू मोदनवाल, श्याम सुंदर, छोटे केसरवानी, सक्षम मोदनवाल सहित आदि कार्यकर्ता एवं व्यापारी मौजूद रहे।

आदर्श परियोजनाओं से बदलेगी यमुनापार की सूरत, यमुनापार में जल्द बदले जाएंगे 286 ट्रांसफार्मर

जल्द दूर होगी बिजली, पानी और सड़क की समस्या : सांसद

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। प्रयागराज सांसद रीता बहुगुणा जोशी ने रविवार को संसदीय क्षेत्र का दौरा किया। यमुनापार के जारी, जसरा, लोहगरा और शंकरगढ़ में लोगों से मुलाकात की और उनका दुख-दर्द साझा किया। प्राइड कालेज आफ एजुकेशन करियाखुर्द, अमरपुर में सांसद ने बैठक कर क्षेत्र से आए लोगों की समस्याएं सुनीं।

इस दौरान ग्रामीणों ने जर्जर हो चुकी सड़कों को फिर से बनवाने की मांग की। इसी तरह ग्रामीणों ने बताया कि टंडन वन की सड़क काफी खराब है। जहां पर पूर्व में सड़कें बनाई गई थीं, वह अब काफी जर्जर हो गई हैं। इसके साथ ही पेयजल की समस्या हो रही है। नहर में समय से पानी नहीं आने से धान की रोपाई और सिंचाई का कार्य बाधित हो रहा है। समस्याओं को सुनने

के क्रम में सांसद ने कहा, जनसमस्याओं पर उनकी पूरी नजर है। जर्जर सड़कों को शीघ्र बनवाया जाएगा। जहां पर घटिया निर्माण हुआ है, उसकी जांच करवाई जाएगी। जनसमस्याओं की लगातार मानीटरिंग की जा रही है।

सांसद ने कहा कि पानी की समस्या के लिए यूपी सरकार को केंद्र की तरफ से दस हजार करोड़ रुपये दिए गए हैं। सरकार का प्रथम ध्यान पानी की समस्या से निजात दिलाना है। प्रथम फेज में प्रयागराज को 900 करोड़ रुपये मिले हैं। पेयजल से जुड़ी तमाम योजनाओं पर काम चल रहा है। ओवरहेड टैंक के निर्माण के साथ पाइपलाइन बिछाई जा रही है। आने वाले तीन-चार साल में समस्याएं दूर हो जाएंगी। सांसद ने बताया कि यमुनापार में कई आदर्श परियोजनाओं का प्रस्ताव मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को दिया जाएगा। इसके अलावा यमुनापार के लिए 286 ट्रांसफार्मर की सूची बनाई गई है। इससे लोगों को लो वोल्टेज की समस्या से निजात मिलेगी। लोग बिजली और पानी को बचाने की कोशिश करें। इसके अलावा आदर्श नहर परियोजना के तहत नैनी रजबहा प्रस्तावित है। बैजला में भी काम करवाया जाना है। बताया कि बाघला पंप कैनाल में दस पंप चल रहे हैं, इसमें से नौ पंप पुराने हो गए हैं, शीघ्र ही उनको बदला जाएगा। इसी तरह भोडी में भी चार पंप बदले जाएंगे। सांसद ने कहा कि इसके अलावा जगदीशपुर तरहार की सड़कें बनाई जानी हैं, जिनका प्रस्ताव दिया जा चुका है। लोहरा पंप कैनाल के साथ-साथ यमुनापार की अन्य समस्याओं का प्रस्ताव अगले सप्ताह सीएम योगी आदित्यनाथ के समक्ष रखा जाएगा। इस मौके पर कालेज के प्रबंधक कुंवर बहादुर सिंह,गिरिजा सिंह, राजेंद्र कुमार मिश्र, प्रतिनिधि संतप्रसाद पांडेय, विजयबहादुर सिंह, अभिषेक मिश्र, पूर्वप्रधान चंद्रबली सिंह, पुष्पराज तिवारी, सौरभ संह, आत्माप्रसाद सिंह, नर्वदा सिंह, विपिन सिंह, कुलदीप सिंह, आशीष सिंह, रामहित, देशराज सिंह, सुनीता सिंह, प्रमोद सिंह, राघवेंद्र सिंह, अरविंद सिंह, अनूप केसरवानी, ऋचा सिंह, पूनम विश्वकर्मा सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

गरीब मजदूर विरोधी है भाजपा सरकार : नरेंद्र गौतम

भीम आर्मी आजाद समाज पार्टी का सदस्यता एवं जन जागरूकता कार्यक्रम हुआ आयोजित

रत्योरा। भाजपा गरीब मजदूर विरोधी है। देश के सरकारी संस्थानों का निजीकरण कर गरीब मजदूरों पिछड़ों के आरक्षण के साथ छेड़छाड़ किया जा रहा है। यह बातें भीम आर्मी आजाद समाज पार्टी के मंडल महासचिव

प्रयागराज नरेंद्र गौतम ने कोरांव बाजार के सीएन सिंह गेस्ट हाउस में आयोजित पार्टी के सदस्यता एवं जन जागरूकता अभियान कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बतौर मुख्य अतिथि कही। पार्टी पदाधिकारियों व कार्यकताओं को संबोधित करते हुए नरेंद्र गौतम ने कहा कि देश एवं प्रदेश की भाजपा सरकार सरकारी संस्थानों का निजीकरण कर पिछड़ों दलितों शोषित वंचित समाज के आरक्षण को खत्म करने का काम कर रही है। निजी करण के बाद किसी भी विभाग में कोई आरक्षण नहीं रहेगा। उन्होंने कहा कि आज जरूरत है निजीकरण का विरोध करने की अपने हक व अधिकारों को संजोए रखने के लिए आगे आने की। जिससे पिछड़ों दलितों शोषित वंचित समाज का हक व अधिकार सुरक्षित रह सके। इसी प्रकार विधानसभा अध्यक्ष प्रतापपुर इंजीनियर बृजेश यादव ने संबोधित करते हुए कहा कि मणिपुर, मध्य प्रदेश, राजस्थान एवं उत्तर प्रदेश में गरीबों दलितों पर हो रहे अत्याचार के विरोध में भाजपा की सरकारें चुप्पी साधे बैठी हैं। भीम आर्मी के राष्ट्रीय अध्यक्ष चंद्रशेखर आजाद की अगुवाई में दलितों पिछड़ों के हक अधिकार की लड़ाई लड़ते हुए उन्हें न्याय दिलाने का काम किया जा रहा है। भीम आर्मी आजाद समाज पार्टी के सदस्यता एवं जन जागरूकता अभियान कार्यक्रम को प्रमुख रूप से जिलाध्यक्ष विजय सरोज, विधानसभा अध्यक्ष फूलपुर रोशन यादव, जिला सचिव डॉ कमलेश कुमार गौतम, विधानसभा अध्यक्ष कोरांव डॉ दिनेश गौतम, विधानसभा उपाध्यक्ष डॉ कृष्णकांत गौतम आदि वक्ताओं ने संबोधित किया। सदस्यता एवं जागरूकता अभियान कार्यक्रम में भारी संख्या में पार्टी के कार्यकर्ता व पदाधिकारी मौजूद रहे।

शुआट्स छात्रा ने जीता पोस्टर प्रजेंटेशन में प्रथम पुरस्कार

नैनी, प्रयागराज। एथिलिण्ड कॉलेज ऑफ कम्यूनिटी साइंस, शुआट्स , प्रयागराज की शोध छात्रा तृप्ती वर्मा (खाद्य पोषण एवं जन स्वास्थ्य विभाग) एवं सलाहकार डॉ अल्का गुप्ता (खाद्य पोषण एवं जन स्वास्थ्य

विभाग) ने कापटोजेनेटिक्स लैब (सेंटर फार एडवान्स रिसर्च) , किंग जार्ज मेडिकल कॉलेज, लखनऊ द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे शोध पत्र इनवेस्टिगेटिंग द कोरिलेशन बिटविन ओवेसटी एंड हाइपोथाइरोयडिस्म एण्ड क्रिएटिंग एवैरनस एमंग ओबीस यंग एइल्टस पर पोस्टर प्रजेटेशन दिया तथा प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। सम्मेलन में कैंसर कोशिकाओं की पहचान में जेनेटिक्स की भूमिका पर विस्तार से चर्चा की गयी । तृप्ति वर्मा ने कमला नेहरू भौतिक एवं समाजिकी विज्ञान अकादमी द्वारा आयोजित अर्न्तार्ष्ट्रीय सम्मेलन ह्यह्यइकोलॉजिकल परस्पैक्टिव ऑफ एग्रीकल्चर एण्ड बायोलॉजिकल साइन्ससह्यह्य मे शोध पत्र ह्यह्यक्लीनकल रिव्यू ऑन एसोसिएशन बिटविन हरबल मेडिसन, बायोडाइर्वसिटी एण्ड ह्यूमन हैल्थः ए होलिस्टिक, न्यूट्रीशनल एण्ड एनवायरमेन्टल अप्रोचह्यह्य पर ओरल प्रजेन्टेशन दिया तथा ह्यबेस्ट ओरल प्रेसन्टेशनह्य एवार्ड प्राप्त किया । सम्मेलन में कृषि , बायोडाइवर्सिटी तथा जन स्वास्थ्य पर विशेष चर्चा की गयी।

पुरसोत्तम मास के तेरस पर मनकामेश्वर धाम में उमड़ा भक्तों का जनसैलाब , भंडारे में भक्तों ने लिया प्रसाद

लालापुर। क्षेत्र के स्वयं भू मनकामेश्वर धाम में पुरसोत्तममास के तेरस के दिन भक्तों की भीड़ ने मनकामेश्वर धाम पहुंच जलाभिषेक व पूजन किया । मेले में क्षेत्र के हरीकृष्ण शुक्ल शास्त्री जी के द्वारा भव्य भंडारे का आयोजन

किया गया।जिसमे क्षेत्र के अलावा जनपद के अलग अलग हिस्सों से पहुंचे लोगो ने भाग लिया। लालापुर स्थित मनकामेश्वर धाम में पुरसोत्तममास के तेरस तिथि पर रविवार के दिन भक्तों की भीड़ दर्शन पूजन करने के लिए पहुंची । भक्तों ने अपने अपने तरीके से भूत भावन भोलेनाथ की पूजा अर्चना की और जलाभिषेक करते हुए आराधना की । मेले में भाजपा के वरिष्ठ नेता आचार्य हरीकृष्ण शुक्ल द्वारा भंडारे का भी आयोजन किया गया । जिसमें हाईकोर्ट के न्यायायधीश सहित नगर प्रमुख सहित कई राजनेताओं ने प्रतिभाग किया । इस मौके पर भजन गायक मिश्र बंधु द्वारा भजनों का आनंद भी लोगो ने लिया । कार्यक्रम में एसओ लालापुर अजय कुमार मिश्र ,प्रधान लालापुर शंकर लाल पांडेय,अजय सिंह,अमर सिंह,शशिकान्त, सहित सैकड़ों गणमान्य लोग मौजूद रहे।

व्यक्ति का सच्चा साथी उसका अंतःकरण होता है

सहसों। इस सांसारिक जीवन में उप भोग एवं तपस्या के लिए हर एक व्यक्ति का अंतःकरण यानी ह्रदय जो मानव के कर्म क्षेत्र में अत्यंत सहायक होता है तथा इससे मानव अपने जीवन में कभी असफल नहीं हो सकता है। उक्त बातें पुरुषोत्तम मास के इस पवित्र दिनों में बूढ़ेश्वर महादेव मंदिर के प्रांगण में मानस महायज्ञ में सच्चा बाबा आश्रम अरैल प्रयागराज से पधारे स्वामी दिव्यानंद महाराज ने अपने आशीर्वचन

में कही। उन्होंने कहा ह्रदय बड़ा पवित्र होता है मानव से स्वयं कलुषित कर रखा है यदि मानव कहीं गलत काम कर नहीं सकता है परंतु बुद्धि एवं मन पर अधिक विश्वास के कारण मानव पतन की ओर चला जाता है। बुद्धि तार्किक है एवं मन चंचल दोनों मिलकर धोखा दे देते हैं। फिर भी ह्रदय पवित्र होता है। इसलिए मानव को चाहिए कि पवित्र ह्रदय की ही बात माने। उन्होंने कहा पवित्र मन एवं पूरी आस्था के साथ भगवान की आराधना करने से प्राणियों के समस्त पापों का नाश होता है तथा व्यक्ति के साथ संपूर्ण जगत का कल्याण निश्चित है। आशीर्वचन के उपरांत गुलालपुर निवासी परम शिव भक्त डा. प्रयाग दत्त तिवारी ने अंगवस्त्रम भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर भारी संख्या में भक्त उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री के मन की बात सुनने पहुचे पूर्व ब्लाक प्रमुख सुधीर मौर्य व कार्यकर्ता

मऊआइमा। भाजपा की सरकार मई 2014 में बनने पर नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री के सपथ ग्राहण किया। उसके बाद से मन की बात सुनाई जाने लगी। बता दें 3 अक्टूबर 2014 से पीएम के 'मन की बात' कार्यक्रम की शुरूआत हुई । जिसमें हर महीने के आखिरी रविवार को इस कार्यक्रम का प्रसारण रेडियों एंव टेलिविजन पर किया जाता है । इस कार्यक्रम के लिए जबरदस्त तैयारियां की जाती हैं । पूरा सरकारी तंत्र लगा दिया जाता है, ताकि 'मन की बात' कार्यक्रम जन-जन तक पहुंचाया जा सके। वही मऊआइमा स्थित हाई टेक कंप्यूटर इंस्टिट्यूट में 103 वे संस्करण में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात को सुना गया। इस मौके पर मऊ आइमा के पूर्व ब्लाक प्रमुख व योगी आदित्यनाथ यूथ ब्रिगेड के प्रदेश अध्यक्ष सुधीर मौर्य, ताकेश्वर मौर्य,ऋषि प्रजापति, अनिल मौर्या, राम भारत यादव, नीरज मौर्य, संजीव मौर्य, विकाश मौर्य, आशीष यादव विपिन पाल आदि मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

महंगा हुआ ई-बसों का सफर, 55 रुपये पहुंचा अधिकतम किराया

प्रयागराज। संगमनगरी में चल रहीं ई बसों का सफर अब महंगा हो गया है। ई बसों का न्यूनतम किराया 10 की जगह अब 12 रुपये हो गया है। अधिकतम किराया भी 50 की जगह 55 रुपये कर दिया गया है। प्रयागराज सिटी ट्रांसपोर्ट सर्विसेज लिमिटेड ने तत्काल प्रभाव से बढ़ी हुई दर लागू कर दी है। प्रयागराज में ई बसों का संचालन 30 दिसंबर 2021 से शुरू हुआ। तब 15 बसें थीं। अब इनकी संख्या बढ़कर 50 हो गई है। वर्तमान में पांच रूट प्रयागराज जंक्शन से लालगोपालगंज, न्यू शांतिपुरम फाफामऊ से रेमंड नैनी, त्रिवेणीपुरम झूंसी से पुरामुफ्ती, बैरहना से शंकरगढ़ एवं सिविल लाइंस बस स्टेशन से प्रतापपुर तक ई बसों का संचालन हो रहा है। डीजल से चलने वाली सिटी बसों का संचालन बंद होने के बाद ई बसों में सफर करने वाले यात्रियों की संख्या में इजाफा हुआ है ई बसों में सफर करने वाले यात्रियों की संख्या में प्रयागराज सूबे में पांचवें स्थान पर है। प्रयागराज सिटी ट्रांसपोर्ट सर्विसेज लिमिटेड के निदेशक एमके त्रिवेदी ने बताया कि जहां ई बसें चल रही हैं उन सभी जगह किराया बढ़ाया गया है। जीएसटी-एक्सीडेंटल फंड के अलावा ई बसों के किराये में एकरूपता लाने के लिए यह वृद्धि की गई है।

ब्लैकमेलिंग से तंग छात्रा ने किया था सुसाइड

मोहल्ले के युवक करते थे परेशान, पिता की तहरीर पर 3 के खिलाफ एफआईआर ,एक गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। छात्रा के सुसाइड प्रकरण में पुलिस ने 3 लोगों के खिलाफ नामजद एफआईआर दर्ज की है। लड़की के पिता ने मोहल्ले के रहने वाले तीन लड़कों के खिलाफ बेटी को ब्लैकमेल करने और धमकी देने की एफआईआर दर्ज कराई है। जिसमें पुलिस ने एक युवक को गिरफ्तार कर लिया है। दो कि अभी तलाश की जा रही है। पोस्टमॉर्टम के बाद परिजन लड़की का शव लेकर पैतृक गांव बिहार चले गए।यमुनानगर के नैनी कोतवाली अंतर्गत प्रयागराज - मीरजापुर राजमार्ग पर स्थित बैजनाथ कंपनी में सिक्योरिटी सुपरवाइजर की नौकरी करने वाले बिहार के रहने वाले हैं। उकी पत्नी का काफी दिनों पहले देहांत हो चुका है। विजय यहां बैधनाथ कॉलोनी में अपनी बेटी के साथ रहते थे। अनुष्का इंटर की छात्रा थी। शनिवार को बेटी पंखे के में दुपट्टे के फंदे से फांसी पर लटक गई थी। ड्यूटी से लौटे पिता ने जब बेटी को फांसी पर लटका देखा तो दंग रह गए। सूचना के बाद पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा।30 जुलाई को विजय कुमार पांडेय नैनी कोतवाली में मोहल्ले प्रीतम सिंह पुत्र विपिन सिंह उसके भाई पीयूष सिंह और दोस्त राजू पांडे के खिलाफ नामजद तहरीर दी। उन्होंने तहरीर में आरोप लगाया कि तीनों लड़के उनकी बेटी को लगातार परेशान करते थे। इससे पहले 27 अप्रैल 2021 को इन लोगों ने घर में घुसकर उनकी बेटी के साथ छेड़खानी, मारपीट गाली-गलौज किया था। जिसमें उन्होंने नैनी कोतवाली में एफआईआर दर्ज कराई थी। बाद में दबाव में आकर उन्होंने समझौता कर लिया था। पिता के मुताबिक कुछ दिनों से लगातार उनकी बेटी को परेशान किया जा रहा था। एक मोबाइल नंबर से उसे धमकी दी जा रही थी। अश्लील मैसेज भेजे जा रहे थे और ब्लैकमेल किया जा रहा था। जिससे परेशान होकर उनकी बेटी ने फांसी लगा ली। इन लड़कों का जब वह विरोध करते थे, वह लोग इन्हें धमकाते थे पुलिस ने उनकी तहरीर पर तीनों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर लिया।इंस्पेक्टर नैनी वीरेंद्र सिंह यादव का कहना है कि छात्रा के पिता की तहरीर पर तीन लोगों के खिलाफ एफ आई आर दर्ज करने के बाद मुख्य आरोपी पीयूष सिंह पुत्र विपिन सिंह निवासी सलेमपुर, थाना सूर्यगढ़ा, बिहार, हाल पता बैधनाथ कालोनी, नैनी को रविवार शाम को बैधनाथ कालोनी गेट नं0-3 के पास मिजार्पुर रोड से गिरफ्तार कर लिया गया। बाकी दो आरोपियों की तलाश की जा रही है।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय : एलएलबी में दाखिले के लिए कटऑफ जारी

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय (इविवि) में एलएलबी सहित कई पाठ्यक्रमों में ई-काउंसलिंग के माध्यम से प्रवेश के लिए कटऑफ अंक जारी कर दिए गए हैं। एलएलबी में प्रवेश के लिए रजिस्ट्रेशन, डाक्यूमेंट अपलोडिंग, अभिलेख सत्यापन एवं फीस जमा करने की प्रक्रिया 30 जुलाई से दो अगस्त तक पूरी होगी। सभी पाठ्यक्रमों के कटऑफ अंक इविवि की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।वहीं, एमए एजूकेशन एवं एमएड एजूकेशन में प्रवेश के लिए 30 जुलाई से एक अगस्त तक रजिस्ट्रेशन, डाक्यूमेंट अपलोडिंग, अभिलेख सत्यापन एवं फीस जमा होगी। एमएससी फूड टेक्नोलॉजी में प्रवेश के लिए कटऑफ में शामिल अभ्यर्थियों को 29 जुलाई से एक अगस्त तक और एमए सितार, तबला, वोकल, एमकॉम, एमबीए सितार, तबला, वोकल में प्रवेश के लिए कटऑफ में शामिल अभ्यर्थियों को 28 जुलाई से 31 अगस्त तक का समय दिया गया है।इसके अलावा एमए संस्कृत, एमएससी एग्रीकल्चर जूलॉजी, एमएससी मैटेरियल साइंस, एमएससी जूलॉजी में दाखिले के लिए कटऑफ में शामिल अभ्यर्थियों को 28 जुलाई से दो अगस्त, एमवोक मीडिया स्टडीज में प्रवेश के लिए कटऑफ में शामिल अभ्यर्थियों को 28 जुलाई से आठ अगस्त तक, एमए राजनीति विज्ञान, एमए/एमएससी मनोविज्ञान, एमसीए, पीजीडीसीए में प्रवेश के लिए कटऑफ में शामिल अभ्यर्थियों को 28 से 31 जुलाई तक का समय दिया गया है।एमए पेंटिंग, एमएफए फाइन आर्ट्स में प्रवेश के लिए कटऑफ में शामिल अभ्यर्थियों को 29 जुलाई से दो अगस्त, एलएलएम, एमएससी रूरल टेक्नोलॉजी में प्रवेश के लिए कटऑफ में शामिल अभ्यर्थियों को 29 से 31 जुलाई और एमपीएड प्रवेश के लिए कटऑफ में शामिल अभ्यर्थियों को 31 जुलाई से दो अगस्त तक का समय दिया गया है।

प्रयागराज में आगामी 15 अगस्त से शुरू होगी संवाद यात्रा : योगेश शुक्ल

अतुल तिवारी

मेजारोड, मेजा। प्रयागराज।भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं सामाजिक कार्यकर्ता योगेश शुक्ल द्वारा आगामी 15 अगस्त से देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पंच प्रण के संदर्भ में संपूर्ण जनपद प्रयागराज में युवा संवाद यात्रा आयोजित किया जाएगा।उक्त आशय की जानकारी वरिष्ठ भाजपा नेता योगेश शुक्ल के प्रतिनिधि विनय कुमार ने देते हुए बताया कि बीते 15 अगस्त को जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश की आजादी के 75 वर्ष पूरे होने पर लाल कि ले से देश को संबोधित करते हुये उन्होंने पंच प्रण का संदेश देते हुए कहा था कि 2047 में जब हमारा देश अपने आजादी के 100 वर्ष पूरे कर रहा होगा तब भारत एक विकसित देश के रूप में आजादी का जश्न मनाएगा। श्री शुक्ल के प्रतिनिधि ने बताया कि इस यात्रा का विचार काफी दिनो से भाजपा नेता के मन में था। अब जब आगामी 15 अगस्त को देश के अंदर आजादी के अमृत महोत्सव समारोह का समापन होने वाला होगा । तब योगेश शुक्ल पंच प्रण के इस मुहिम को आगे बढ़ाने के लिए

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पंच प्रण के संदर्भ में पूरे एक माह तक संचालित होने वाली यात्रा में युवाओं की होगी भागीदारी, लेंगे संकल्प

योगेश शुक्ला भाजपा नेता

प्रधानमंत्री के विकसित भारत के सपनों की प्रेरणा से यह यात्रा प्रारम्भ करेंगे। संवाद यात्रा को लेकर योगेश शुक्ल का मानना है कि प्रधानमंत्री के पंच प्रण का मतलब विकसित भारत का गुलामी से मुक्ति है।इतना ही नहीं श्री शुक्ल का यह भी मानना है कि विरासत पर गर्व एकता और एकजुटता एवं नागरिकों का कर्तव्य है । भारत को एक महान राष्ट्र बनाने का मंत्र है। उन्होंने कहा विकसित भारत का मतलब देश के सभी राज्य , जनपद , शहर और गाँव भी विकसित हों । संवाद यात्रा का मुख्य उद्देश्य आने वाले समय में प्रयागराज के सभी मापदंडों पर पूर्णरुप से विकास हो ।श्री शुक्ल द्वारा संचालित संवाद यात्रा पूरे जनपद के सभी तहसीलों,ब्लॉको के पंद्रह सौ से अधिक ग्राम पंचायतों , दो हजार से अधिक गाँवों/कस्बों तथा शहर के सभी वार्डों तक जाएगी ।इस यात्रा के माध्यम से युवाओं से पंच प्रण के वैचारिक एवं व्यावहारिक स्वरूप पर चर्चा और संवाद किया जायेगा साथ ही साथ युवाओं को पंच प्रण का संकल्प दिलाया जायेगा। प्रतिनिधि विनय कुमार ने बताया कि यह संवाद यात्रा यही नहीं रुकेगी ।इस यात्रा के दौरान विकसित भारत के सपनों के अनुरूप प्रत्येक गाँव और कस्बे के समग्र विकास की अनंत कार्य योजना बनायी जाएगी। गौरतलब है कि महीनों तक चलने वाली इस यात्रा में 16 से लेकर 40 वर्ष तक के युवाओं से सीधे संवाद कर यात्रा का भागीदार बनाया जायेगा।

दो वांछित अभियुक्त चोरी के सामान के साथ गिरफ्तार

थरवई। पुलिस की सक्रियता से दो वांछित अभियुक्तों को चोरी किये गए सामान के साथ सहायक पुलिस आयुक्त थरवई जंग बहादुर यादव के पर्यवेक्षण में थाना थरवई प्रभारी निरीक्षक लोकेन्द्र त्रिपाठी के नेतृत्व में पुलिस टीम द्वारा उन्हें गिरफ्तार करते हुए जेल भेज दिया गया। मामला थाना क्षेत्र थरवई अंतर्गत नई बस्ती गोमती नंबर 40 पर राजू धुरिया पुत्र मथुरा प्रसाद धुरिया जो राकेश मिश्रा के यहाँ किराये पर कमरा लेकर परिवार सहित रहते थे बीते अगले माह 11 जून को राजू धुरिया कमरे को खाली कर चले गए थे जिसमें उनका कुछ घरेलू सामान छूट गया था बीते दस दीन पूर्व 20 जुलाई 2023 उनको सूचना मिली की उनके कमरे का ताला तोड़ कर कमरे में रखे सामान में सिलाई मशीन, स्टैंड फैन, कुकर आदि सामान को तीन व्यक्ति घनश्याम यादव, श्याम सिंह पुत्रगण स्व राम बहादुर यादव निवासी रंगपुरा थाना फाफामऊ, तीसरा भोला उर्फ जय शंकर निवासी चकिया घाट थाना थरवई जनपद प्रयागराज द्वारा बचे सारे सामान को चोरी कर ले गए तभी इसकी सूचना राजू धुरिया द्वारा 27 जुलाई को थाना थरवई में इसकी लिखित सूचना दी गई पुलिस मामले को संज्ञान में लेते हुए अभियुक्तों पर धारा 457 / 380 का मुकदमा पंजीकृत करते हुए उन अभियुक्तों व चोरी किये गए सामान की तलाश में पुलिस टीम जुट गई जो थरवई पुलिस की सक्रियता से दो दिनों के अंदर ही 30 जुलाई की सुबह ही मुखबिर द्वारा सूचना पर ही थाना क्षेत्र क्षेत्र थरवई के 40 नंबर गोमती के पास से अभियुक्त घनश्याम व श्याम सिंह पुत्रगण स्व राम बहादुर यादव इन दोनों अभियुक्तों को चोरी किये गए सामान के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। दोनों अभियुक्तों पर धारा 411 की बढ़ोत्तरी करते हुए उन्हें जेल भेज दिया गया।

सितंबर माह से मिलनी शुरू हो जाएंगी और नई ई-बसें

महाकुंभ तक प्रयागराज को 300 ई बसें देने का लक्ष्य

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। प्रयागराज में पांच माह से बंद चल रही सिटी बसों का स्थान ई बसें लेंगी। नगरीय परिवहन निदेशालय ने प्रयागराज को इसी वर्ष 100 ई बसें दिए जाने की हरी झंडी दिखा दी है। इन बसों का आवंटन सितंबर 2023 से शुरू हो जाएगा। इस वर्ष चार चरणों में 25-25 ई बसें प्रयागराज को मिलेंगी।दरअसल, प्रयागराज में जेएनएनयूआरएम योजना के तहत संचालित 100 से ज्यादा सिटी बसों का संचालन फरवरी 2023 से बंद है। इन बसों का संचालन 20 से ज्यादा रूट पर हो रहा था। बसों के बंद हो जाने से लोगों को खासी परेशानी हो रही है। स्कूल, कॉलेज जाने वाले छात्र-छात्राएं इससे ज्यादा परेशान है। प्राइवेट वाहनों का सहारा लेकर अपने गंतव्य तक जाने का असर उनकी जेब पर भी पड़ा है। साथ ही सिटी बस संचालन से जुड़े संविदा कर्मी भी फरवरी 23 से बेरोजगार हो गए

हैं।आम लोगों को हो रही समस्या का मामला अमर उजाला ने शनिवार के अंक में प्रकाशित भी किया, जिसके बाद प्रयागराज सिटी ट्रांसपोर्ट सर्विसेज लिमिटेड के अफसरों ने बताया कि डीजल से चलने वाली बसों का स्थान नई ई बसें ही लेंगी।इस बारे में नगरीय परिवहन निदेशालय के संयुक्त निदेशक टीकेएस बिसेन का कहना है, सूबे में 1525 ई बसें चलाने की योजना तैयार हुई है। प्रयागराज को प्राथमिकता के आधार पर ई बसों का आवंटन किया जाएगा। इसी वर्ष प्रयागराज को 100 और ई बसें दी जाएंगी। सितंबर माह में बसों की पहली खेप के तहत 25 बसें दी जा सकती हैं।महाकुंभ तक प्रयागराज को 300 ई बसें मिल सकती हैं।

5 करोड़ की चोरी में पांच साल से वांछित, इनाम महज 25 हजार

प्रयागराज। शहर में पांच करोड़ की चोरी की वारदात में दर्ज केस की विवेचना पांच साल में भी पूरी नहीं हो सकी है। हाल यह है कि मुकदमे के दो आरोपी अब भी फरार हैं, लेकिन उन्हें पकड़ा नहीं जा सका है। यहां तक कि इन पांच सालों में उन पर इनाम की राशि भी नहीं बढ़ाई जा सकी।सिविल लाइंस में हुई इस घटना की जानकारी दो दिन बाद हो सकी थी। रोज की तरह 27 अप्रैल 2018 की शाम को भी कर्मचारी बैंक बंद कर चले गए। तीन दिन छुट्टी थी। एक मई को बैंक खुलने पर कर्मचारी पहुंचे तो भीतर का नजारा देखकर उनके होश उड़ गए। बैंक के 17 लॉकर काटकर उनमें रखे जेवरात व नकदी समेत करीब पांच करोड़ का माल चोरी कर लिया गया था।

नौ जेल भेजे गए, दो अब तक नहीं मिले : इस घटना का खुलासा 13 दिन बाद पुलिस ने झारखंड के साहिबगंज जिले के कुख्यात चोर गिरोह के छह सदस्यों को गिरफ्तार करके किया। इसके बाद दो अन्य गिरफ्तार किए गए, जबकि सरगना हसन चिकना को झारखंड पुलिस ने मुंबई में गिरफ्तार किया। गैंग के सदस्यों से पूछताछ में मिली जानकारी के आधार पर मुख्तार व लवरेज निवासी साहिबगंज झारखंड का नाम भी मुकदमे में शामिल किया गया। कुछ दिनों बाद ही उन पर 25 हजार का इनाम भी घोषित हुआ, लेकिन इसके बाद कार्रवाई अटक गई। हाल यह है कि पकड़ पाना तो दूर विवेचना में जुटी क्राइम ब्रांच आरोपियों पर इनाम की राशि भी नहीं बढ़वा पाई है।

कस्टडी रिमांड पर नहीं लिया जा सका सरगना : यूको बैंक में पांच करोड़ की चोरी की वारदात में भले ही नौ आरोपी गिरफ्तार हो चुके हों, लेकिन इससे जुड़े कई राज अनसुलझे ही रहे। यही वजह थी कि तत्कालीन अफसरों ने बताया था कि सरगना हसन चिकना को कस्टडी रिमांड पर लेकर उससे राज उगलवाए जाएंगे। लेकिन यह दावा खोखला साबित हुआ। मुंबई से चिकना को गिरफ्तार कर झारखंड पुलिस ने उसे जेल भेज दिया। इसके बाद जिला पुलिस ने उसे तलब कराकर वारंट बनवाया व दिसंबर 2021 में चार्जशीट दाखिल कर दी। लेकिन उसे कस्टडी रिमांड पर नहीं लिया जा सका।मुकदमे के संबंध में अद्यतन जानकारी विवेचक ही दे सकता है। उनसे ही इस बारे में पूछकर आगे की कार्रवाई कराई जाएगी।

- सतीश चंद्र, एडीसीपी अपराध

शाइन सिटी के मालिकों के खिलाफ दो और एफआईआर

प्रयागराज। यमुनापार इलाके में शाइन सिटी बसाने का सपना दिखाकर करोड़ों की ठगी कर-के फरार शाइन सिटी के मालिकान राशिद नसीम और आसिफ नसीम के खिलाफ दो और एफआईआर दर्ज की गई हैं। इस तरह से बीते 29 दिनों में दोनों ठग भाइयों पर 8 एफआईआर दर्ज हो चुकी है। कुल मिलाकर प्रयागराज में दोनों भाइयों पर दो दर्जन मुकदमे ठगी और धोखाधड़ी के लिखे जा चुके हैं। प्रयागराज पुलिस कमिश्नरट के सिविल लाइंस कोतवाली में नैनी बाजार के चक रघुनाथ मोहल्ले की रहने वाली रंजना गुप्ता पत्नी राधेश्याम गुप्ता और गंगानगर के फूलपुर कोतवाली अंतर्गत हुसैनगंज निवासी संगीता मौर्या पत्नी राजेश कुमार मौर्या ने एफआईआर दर्ज कराई है। जिसमें शाइन सिटी के मालिक राशिद नसीम और उसके भाई आसिफ नसीम के खिलाफ ठगी और धोखाधड़ी का केस रजिस्टर्ड किया गया है। रंजना गुप्ता ने अपनी तहरीर में बताया है कि प्लाटिंग के साथ लुभावने प्लान बताकर कंपनी के मालिकों ने उनसे कुल 22 लाख 745 रुपए जमा कराए थे। जबकि संगीता मौर्या ने शाइन सिटी में पांच लाख रुपए का इन्वेस्ट्मेंट किया था, जो समयावधि दी गई थी। उसके बीत जाने के बावजूद न तो पैसे वापस किए गए और न ही प्लाट आवंटित किए गए। जिसकी वजह से दोनों लोगों की आर्थिक स्थिति बिगड़ गई है। इंस्पेक्टर सेविल लाइंस भानु प्रताप ने बताया कि शाइन सिटी के मालिकों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर जांच की जा रही है।

रज्जू भैया राज्य विवि में 36 अतिथि प्रवक्ताओं की होगी भर्ती

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। प्रो. राजेंद्र सिंह (रज्जू भइया) राज्य विश्वविद्यालय में सत्र 2023-24 से कई नए व्यावसायिक पाठ्यक्रम शुरू होने जा रहे हैं।विश्वविद्यालय के पास यह विषय पढ़ाने के लिए स्थायी शिक्षक उपलब्ध नहीं हैं, इसलिए अतिथि प्रवक्ताओं की भर्ती की जाएगी। यह प्रक्रिया छह से 10 अगस्त तक पूरी कर ली जाएगी। इस बाबत विश्वविद्यालय प्रशासन ने विज्ञापन जारी कर दिया है। विश्वविद्यालय के नैनी स्थित मुख्य परिसर में सत्र 2023-24 से विधि की पढ़ाई शुरू होने जा रही है। इसके साथ ही बीबीए, बीसीए, बीफार्मा, बीएससी कृषि, बीएससी बायोटेक, एमसीए, एमएससी कृषि आदि विषयों की पढ़ाई भी शुरू होने जा रही है। विश्वविद्यालय परिसर और संघटक महाविद्यालयों में पहली बार प्रवेश परीक्षा के माध्यम से व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में दाखिले होंगे। इससे पहले सीधे मेरिट के आधार पर दाखिले होते थे । विश्वविद्यालय परिसर में व्यावसायिक पाठ्यक्रम की पढ़ाई पहली बार शुरू होगी। प्रवेश परीक्षा पांच एवं छह अगस्त को प्रस्तावित है, जबकि प्रवेश परीक्षा का परिणाम नौ अगस्त को घोषित होगा। सभी पाठ्यक्रमों में दाखिले की प्रक्रिया 22 अगस्त तक पूरी हो जाएगी। दाखिले के बाद कक्षाओं का संचालन तुरंत शुरू कराया जा सके, इसके लिए विश्वविद्यालय अतिथि प्रवक्ताओं की भर्ती करने जा रहा है।कुल 36 अतिथि प्रवक्ताओं को नियुक्त किया जाएगा। इनमें से 26 अतिथि प्रवक्ताओं को स्ववित्तपोषित विभागों में रखा जाएगा। सर्वाधिक 10 अतिथि प्रवक्ता कृषि विषय, सात-सात अतिथि प्रवक्ता विधि एवं बीफार्मा और चार अतिथि प्रवक्ता कंप्यूटर अप्लीकेशन की पढ़ाई के लिए रखे जाएंगे। विधि एवं कंप्यूटर अप्लीकेशन के लिए आठ अगस्त और बीफार्मा एवं कृषि विषय के लिए 10 अगस्त को इंटरव्यू होंगे। इसके लिए अभ्यर्थियों को आवश्यक दस्तावेजों के साथ बुलाया गया है।

नए विषयों में जल्द ही स्थायी भर्ती की तैयारी : कुलपति प्रो. अखिलेश कुमार सिंह का कहना है कि अगस्त से नए विषयों की कक्षाओं का संचालन शुरू होना है और समय कम बचा है। इस वजह से अतिथि प्रवक्ताओं की भर्ती की जा रही है। शिक्षकों के स्थायी पदों पर भर्ती में थोड़ा समय लगता है। जल्द ही स्थायी भर्ती की प्रक्रिया शुरू की जाएगी।

अतिथि प्रवक्ता को 35 हजार मानदेय : राज्य विवि की वित्त समिति ने निर्णय लिया है कि अतिथि प्रवक्ता को प्रति लेक्चर एक हजार रुपये और प्रतिमाह अधिकतम 35 हजार रुपये मानदेय के रूप में दिए जाएंगे।

न्यूज झरोखा

उमेश पाल हत्याकांड में अतीक के वकील विजय मिश्र को जेल

प्रयागराज। में बहुचर्चित उमेश पाल हत्याकांड में प्रयागराज पुलिस ने माफिया अतीक अशरफ के अधिवक्ता विजय मिश्र को रविवार को जेल भेज दिया। बरेली और प्रयागराज पुलिस ने शनिवार रात अशरफ की पत्नी जैनब फात्मा और एक लाख के इनामी सद्दाम की लोकेशन मिलने पर लखनऊ के विभूतीखंड इलाके में स्थित होटल हयात के पास घेराबंदी की। घेराबंदी के दौरान होटल के बाहर से अतीक के वकील विजय मिश्र को गिरफ्तार कर लिया गया। हालांकि जैनब और उसका भाई सद्दाम पकड़ में नहीं आ सके। अधिवक्ता विजय मिश्र को प्रयागराज लाकर धूमनगंज थाने में पूछताछ की गई। पुलिस का कहना है कि उमेश पाल हत्याकांड की पूरी साजिश में अधिवक्ता खान सौलत हनीफ की तरह ही वकील विजय मिश्र भी शामिल था। उसके खिलाफ सबूत जुटाने के बाद उसे गिरफ्तार किया गया। कड़े सुरक्षा इंतजाम के बीच धूमनगंज पुलिस ने रविवार सुबह सवा ग्यारह बजे के करीब विजय मिश्र को कचहरी में रिमांड मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया। अदालत के आदेश पर विजय को 14 दिन की न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया गया। इसके बाद पुलिस विजय को नैनी सेंट्रल जेल में दाखिल कर आई उमेश पाल हत्याकांड में अतीक- अशरफ समेत सभी शूटरों, वकील खान शौलत हनीफ, साजिशकर्ता, मददगारों पर जो गंभीर धाराएं लगीं थी वही सारी धाराएं अधिवक्ता विजय मिश्र पर लगी हैं। विजय मिश्र पर धारा 147/148/149/ 302/307/506/34/120बी के साथ तीन विस्फोटक पदार्थ अधिनियम और 7 सीएलए एक्ट व 3 (2)श एससी/एसटी एक्ट के तहत विधिक कार्रवाई की गई है।

इलाज के दौरान हेड कॉन्स्टेबल की मौत

प्रयागराज। हंडिया कोतवाली में तैनात हेड कॉन्स्टेबल की पुलिस लाइन में आज सुबह अचानक तबीयत बिगड़ गई। उन्हें स्वरूपरानी नेहरू चिकित्सालय ले जाया गया। जहां इलाज के दौरान रविवार देर शाम उनकी मौत हो गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया।गाजीपुर जनपद के बहरिया बाग थाना क्षेत्र के मिजार्पुर छपरा गांव निवासी देवेंद्र कुमार (50) चार भाइयों में तीसरे नंबर के थे। वह उत्तर प्रदेश पुलिस में हेड कॉन्स्टेबल थे। वर्तमान में उनकी पोस्टिंग प्रयागराज के हंडिया कोतवाली में थी। लेकिन इस समय वह पुलिस लाइन प्रयागराज में ड्यूटी कर रहे थे। आज ड्यूटी के दौरान सुबह की तबीयत बिगड़ गई। उन्हें सहकर्मियों ने स्वरूपरानी नेहरू चिकित्सालय ले जाकर भर्ती कराया। जहां इलाज के दौरान देर शाम उनकी मौत हो गई। उनके साथ उनके सरकारी आवास पर उनकी पत्नी सरोज देवी, दो बेटे और दो बेटियां रहती हैं। चारों बच्चे पढ़ाई करते हैं। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम हाउस भेज दिया है। उनकी अचानक मौत से घर में कोहराम मच गया। पत्नी और बच्चों का रो-रोकर बुरा हाल है।

सेंध लगाकर अज्ञात चोरों ने की देसी शराब की दुकान में लाखों की चोरी

अखंड भारत संदेश

उतरांव। उतरांव थाना क्षेत्र के यासीनपुर स्थित सरकारी देसी शराब की दुकान में अज्ञात चोरों ने बीती रात सेंध लगाकर अंदर रखें दो दर्जन से ज्यादा पेटी देसी पव्वा चुरा ले गए वहीं सुबह सेल्समैन ने जब देखा तो पुलिस को सूचना दी । पुलिस जांच पड़ताल में जुट गयी। यासीन पुर थाना स्थित शिवाकांत मौर्य की देशी शराब की दुकान है। जिसमें फरीदपुर गांव निवासी सुरेश कुमार सेल्समैन का काम करता है। शाम निर्धारित समय पर दुकान बंद करके खाना खाने घर चला गया खाना खा कर वही सो गया । और रात में ही अज्ञात चोरों द्वारा दुकान के पीछे से दीवार में सेंध लगाकर अंदर प्रवेश किया। सेल्समैन के मुताबिक अंदर रखें 38 पेटी देसी पव्वा, सीसीटीवी कैमरा, डीवीआर, चुरा ले गए। वही जब सुबह दुकान पर सेल्समेन पहुंचा।दुकान के पीछे उसने सेंध लगा देख उसके होश उड़ गये। वही फौरन अपने मालिक शिवाकांत मौर्या को सूचना दी तथा पुलिस को भी सूचना दी। सूचना पर पहुंची पुलिस जांच पड़ताल में जुट गयी। सेल्समैन के मुताबिक लगभग 38 पेटी शराब का दाम एक लाख तेरह हजार तक तथा डीवीआर कैमरा स्कैनर सीसीटीवी का दाम छब्बीस हजार

बताया गया। 1 पेटी में 45 पीस पव्वा रहता है। दुकान के मालिक ने अज्ञात चोरों के खिलाफ स्थानीय थाने में लिखित तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है ।पुलिस मामले की जांच गंभीरता से कर रही है सेल्समैन ने बताया कि इसके पहले भी चार बार ऐसी वारदात हो चुकी है लेकिन आज तक खुलासा भी नहीं हो सका है ।लगातार एक ही दुकान में चोरी होना प्रश्न चिन्ह बना हुआ है अब देखना यह है कि पुलिस की सक्रियता से कब तक ये चोर पुलिस के हत्थे लग सकते हैं। यह बहुत बड़ा सवाल है। फिरहाल दुकान में चोरी होने से क्षेत्र में दहशत का माहौल बना हुआ है।

बसपा नेता फजलुर्रहमान की जमानत हाईकोर्ट ने की मंजूर

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने 25 साल पुराने हत्या के प्रयास समेत कई अन्य संगीन धाराओं में दर्ज मामले में बसपा नेता फजलुर्रहमान की जमानत मंजूर कर ली। कोर्ट ने उन्हें बेल बॉन्ड दाखिल करने का आदेश दिया है। यह आदेश न्यायमूर्ति राजबीर सिंह ने बसपा नेता की ओर से दाखिल जमानत प्रार्थना पत्र को मंजूर करते हुए दिया।मामला आजमगढ़ के फूलपुर थाना क्षेत्र का है। वर्ष 1998 में बसपा नेता समेत तीन बसपा नेताओं पर हत्या के प्रयास और विरोधी दल के कार्यकताओं पर गोली चलाने के आरोप में एफआईआर दर्ज हुई थी। एफआईआर में नामजद नेताओं के अलावा तीस चालीस अज्ञात कार्यकताओं को भी शामिल किया गया था।इस मामले के सह अभियुक्त आजमगढ़ के पूर्व सांसद रमाकांत यादव, सूर्य प्रकाश यादव, राम सूरत यादव, राम सेवक चौहान, रामकेवल यादव, योगेंद्र कुमार व अरशद को हाईकोर्ट से पहले ही जमानत मिल चुकी है। इस मामले में बसपा नेता जून 2023 से निरुद्ध है। हाईकोर्ट ने प्रार्थी फजलुर्रहमान को सशर्त जमानत पर रिहा करने का आदेश दिया है।

भव्य होगी शहीद चंद्रशेखर आजाद स्मारक समिति द्वारा तिरंगा यात्रा : पार्षद

नैनी। नैनी में रविवार को शहीद चंद्रशेखर आजाद स्मारक समिति द्वारा निकाली जाने वाली तिरंगा यात्रा 2023 की प्रथम बैठक आयोजन समिति के सचिव सुधीर शर्मा समाजसेवी चेयरमैन अरवल बिहार के नैनी बाजार स्थिति आवास पर सम्पन्न हुई। बैठक में तिरंगा यात्रा के रास्ते और प्रस्थान के समय को लेकर मंत्रणा हुई, बैठक की अध्यक्षता समिति के संस्थापक एवम अध्यक्ष रामकृष्ण पाण्डेय आजाद ने किया,बैठक में आये नवनिर्वाचित पार्षद राकेश जयसवाल पार्षद पवन यादव (सोनू), बीजेपी पार्षद मयंक यादव का जोरदार तालियों से स्वागत किया गया तत्पश्चात समिति के संरक्षक गायत्री डिग्री कॉलेज निदेशक अनिल श्रीवास्तव ने बैठक में आये हुए सभी माननीयों को धन्यवाद ज्ञापित किया,समिति के कोषाध्यक्ष सुधीर पाण्डेय और समिति के महामंत्री विपिन पाण्डेय ने यात्रा को भव्य और सुगम बनाने के लिए निवेदन किया,बैठक में आये गोलू ठाकुर ने पिछली बार से भी ज्यादा ताकत से यात्रा में योगदान करने का वादा किया,बैठक में आये भाजपा के अतुल सिंह ने अगली बैठक को जल्द बुलाने की बात कही,इनके अलावा बच्चा गुप्ता, विधायक यादव, रामजी मिश्र, हिमांश रंजन राज सिंह आदि लोग शामिल रहे।

मण्डपम से शिक्षा समागम का हुआ लाइव प्रसारण

स्कूल के मॉनिटर पर बच्चों ने देखा प्रसारण

अखंड भारत संदेश

कटरा गुलाब सिंह, प्रतापगढ़। अखिल भारतीय शिक्षा समागम का प्रधानमंत्री द्वारा उद्घाटन सत्र का लाइव प्रसारण किया गया, जिसको मॉडल उच्च प्राथमिक विद्यालय कटरा गुलाब सिंह के बच्चों ने स्कूल के स्मार्ट क्लास में प्रोजेक्टर के माध्यम से देखा।

प्रधानमंत्री ने प्रधानमंत्री स्कूल राइजिंग ऑफ इंडिया का उल्लेख करते हुए कहा कि नई शिक्षा नीति 2020 के तहत यह योजना बच्चों के लिए बहुत ही लाभकारी सिद्ध होगी। उन्होंने कहा कि देश के भाग्य को बदलने की ताकत सिर्फ शिक्षा में होती है। दिल्ली के नवनिर्मित भारत मंडपम में आयोजित इस कार्यक्रम में बोलते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि इससे देश में एकरूपता आएगी। इसके अंतर्गत पढ़ाई की शुरूआत 3 साल से ही शुरू होगी। कक्षा 3 से 8 तक के बच्चों के लिए फ्रेमवर्क तैयार कर लिया गया है। इस तरह यह कार्यक्रम एक तरह का पाठ्यक्रम होगा। कक्षा 3 से 12 वीं कक्षाओं तक 130 नई किताबें आ रही हैं। इसमें एकरूपता लाने के लिए 22 भारतीय भाषाओं में यह उपलब्ध होगी। मातृभाषा में पढ़ाई होने से सामाजिक न्याय का आवश्यक कदम भी होगा। इसके अंतर्गत सोशल साइंस से लेकर इंजीनियरिंग की पढ़ाई भारतीय भाषाओं में होगी। आज बच्चे दीक्षा, स्वयं और स्वयं प्रभा के माध्यम से पढ़ाई कर रहे हैं। इसे और बेहतर तरीके से संपन्न किया जाएगा। स्मार्ट क्लास में बच्चे लाइव प्रसारण देख कर बहुत खुश हुए। इस मौके पर प्रभारी प्रधानाध्यापक राज्य पुरस्कार प्राप्त शिक्षक मोहम्मद फरहीम, आशा मिश्रा, शिखा श्रीवास्तव, पितामह यादव, बालेंद्र प्रताप सिंह मनोज कुमार आदि शिक्षक व प्रमुख लोग उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री के लाइव प्रसारण को देखते स्कूली बच्चे।

अंतरराष्ट्रीय मित्रता दिवस पर बीबीएफजी ने बांटे पुष्प गुच्छ

प्रतापगढ़। अंतरराष्ट्रीय मित्रता दिवस के मौके पर बच्चा बैंक फ्रेंड्स ग्रुप, बीबीएफजी ने रविवार को असहाय और जरुरतमंद छात्रों की हर तरह से मदद करने वालों को पुष्प गुच्छ से सम्मानित कर उन्हें ऐसे लोगों का सच्चा मित्र बताया है। समाज के अलग क्षेत्र में गरीब छात्रों की मदद कर आगे बढ़कर उन्हें शिक्षित करने में सहयोग कर रहे सामाजिक लोगों को बीबीएफजी की तरफ से सम्मानित किया गया। जिसमें शरद केसरवानी, संजीव आहूजा, हेमंत, प्रदीप यादव, डाक्टर अनिल कुमार, डाक्टर शिव मूर्ति लाल मौर्य, कमलेश अग्रवाल, राजेश चैरसिया, महेंद्र सिंह, इंस्पेक्टर सीपी मिश्रा समेत ग्रुप के कई सदस्यों को भी पुष्प गुच्छ भेंट किया गया।

प्रधानमंत्री यशस्वी छात्रवृत्ति योजना के लिये 10 अगस्त तक करें आवेदन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी ज्योति त्रिवेदी ने बताया है कि प्रधानमंत्री यशस्वी छात्रवृत्ति योजना के अन्तर्गत टाप क्लास स्कूल सार्वजनिक (केन्द्रीय/राज्य/स्थानीय निकाय) या सहायता प्राप्त स्कूल या निजी स्कूलों की कक्षा 9 और कक्षा 11 में पढ़ने वाले ओबीसी, ईबीसी और डीएनटी छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करने के लिये किया जायेगा। केवल वे अभ्यर्थी जिन्होने शैक्षिक सत्र 2023-24 में 8वीं/10वीं कक्षा उत्तीर्ण की है वे परीक्षा में आवेदन करने/उपस्थित होने के पात्र है। छात्र/छात्रायें पीएम यंग अचीवर्स स्कालरशिप अवार्ड स्कीम के अन्तर्गत लाभ हेतु वेबसाइट पर दिनांक 11 जुलाई से 10 अगस्त 2023 तक आवेदन कर सकते है।

परीक्षा में बैठने की आवश्यक पात्रता के सम्बन्ध में बताया है कि आवेदक को भारतीय नागरिक होना चाहिये, उसे ओबीसी या ईबीसी या डीएनटी श्रेणी से सम्बन्धित होना चाहिये, उन्हें टाप क्लास स्कूल कक्षा 9 अथवा 11 में अध्ययनरत होना चाहिये, उन्हें 2023-24 में कक्षा 8 या कक्षा 10 (यथा संदर्भित) उत्तीर्ण होना चाहिये, माता-पिता/अभिभावक की सभी स्त्रोतो से आय रुपए 2.5 लाख प्रति वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिये, लड़के और लड़कियॉ दोनो आवेदन करने के पात्र है। लड़कियों के लिये आवश्यक पात्रता लड़कों के समान ही है। यह परीक्षा 29 सितम्बर 2023 को आयोजित की जायेगी। योजना के अन्तर्गत कक्षा 9 के लिये रुपए 75000 एवं कक्षा 11 के लिये रुपए 125000 अवार्ड के रूप में दी जायेगी। आवेदन के लिये दस्तावेज मोबाइल नम्बर, आधार नम्बर (यूआईडी), आधार से लिंक बैंक खाता, आय प्रमाण पत्र और जाति प्रमाण पत्र आवश्यक है। छात्र-छात्रायें अधिक जानकारी तथा आनलाइन आवेदन वेबसाइट पर कर सकते हैं।

यूनिवर्स लाइब्रेरी में युवाओं का होगा समुचित विकासः हरिप्रताप

नया माल गोदाम रोड पर वातानुकूलित लाइब्रेरी का हुआ उद्घाटन

लाइब्रेरी के लिये उद्घाटन समारोह में मौजूद नपाध्यक्ष हरिप्रताप सिंह

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर पालिकाध्यक्ष हरिप्रताप सिंह ने शहर के नया माल गोदाम रोड पर एक वातानुकूलित यूनिवर्स लाइब्रेरी का उद्घाटन करते हुए कहा कि आज डिजिटल का युग है। ऐसे में डिजिटल लाइब्रेरी युवाओं के लिये प्रेरणास्त्रोत साबित होगी।

उन्होंने कहा कि युवाओं में बदलते परिवेश में कार्य करने की अद्भुत क्षमता है। ऐसे में इस शहर में बच्चों के लिये ऐसी वातानुकूलित स्वच्छ एवं शांत व वातानुकूलित लाइब्रेरी स्थापित करना एक सराहनीय कदम है। ऐसे में नवयुवक-नवयुवतियां अपना लक्ष्य आसानी से प्राप्त कर सकती हैं। कार्यक्रम के आयोजक गोविन्द ओझा व प्रशांत ने नगर पालिकाध्यक्ष हरिप्रताप सिंह को बताया कि नवयुवक-नवयुवतियों को पढ़ाई व तैयारी करने का एक शांत स्वच्छ वातावरण देने का प्रयास किया गया है। इस मौके पर क्षेत्रीय सभासद धर्मशील शुक्ला, डा0 अनुराग मिश्रा, अतुल पाण्डेय, दिव्यांश सिंह, ह्रदय मिश्रा, अनिरुद्ध त्रिपाठी, ओंकार सिंह, राहुल पाण्डेय, ब्रजेश पाण्डेय, सलाउद्दीन, कोमल विश्वकर्मा, रंजना विश्वकर्मा के अलावा वरिष्ठ पत्रकार शैलेन्द्र मिश्र, पत्रकार रमेश त्रिपाठी व सर्वेश शर्मा आदि मौजूद रहे।

जिला उमरवैश्य समाज सभा का 17वाँ छात्र-छात्रा सम्मान समारोह संपन्न

उमरवैश्य समाज के 207 मेधावियो का हुआ सम्मान

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिला उमरवैश्य समाज सभा द्वारा आयोजित 17वाँ छात्र-छात्रा सम्मान समारोह आज रविवार को उमरवैश्य धर्मशाला चिलबिला में आयोजित हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय उमरवैश्य महासभा के अध्यक्ष रामजी उमरवैश्य रहे। अध्यक्षता विश्वनाथ उमरवैश्य ने किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर किया गया। बच्चों ने गीत, भजन और चुटकुले से सभी को तालियां बजाने पर मजबूर कर दिया। समाज सभा के संरक्षक रोशनलाल उमरवैश्य ने बताया कि आज समाज सभा द्वारा आयोजित 17वाँ छात्र-छात्रा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया था, जिसमें 135 छात्राएं व 72 छात्रों को सम्मानित किया गया था। जो हाईस्कूल, इंटर व बीएससी में उत्तीर्ण थे। कुल 207 छात्र-छात्राओं को गोल्ड मेडल, सम्मान पत्र व उपहार देकर सम्मानित किया गया। सम्मान पाकर बच्चों का उत्साह देखते ही बन रहा था समाज सभा के अध्यक्ष गुलाबचंद उमरवैश्य ने सभी छात्रों को सम्मानित करते हुए कहा कि आप सब समाज की धरोहर हैं आपसे समाज को बहुत आशा है। मुख्य अतिथि रामजी उमरवैश्य ने कहा कि छात्रों का सम्मान का कार्यक्रम राष्ट्रीय महासभा पूरे देश में आयोजित करेगी जिससे समाज के भी आने वाली पीढ़ी में शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाए। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वनाथ उमरवैश्य ने कहा कि समाज सभा का यह कार्यक्रम इन बच्चों के भविष्य को संवारने में मील का पत्थर साबित होगा। कार्यक्रम का संचालन स्वपलिन वैश्य ने किया। आभार ज्ञापन महामंत्री शोभनाथ द्वारा किया गया। विचार रखने वालों में मदनलाल, श्रीराम, आशीष कुमार, लक्ष्मीनारायण, शोभनाथ, विश्वनाथ, देवेंद्र गुप्ता एडवोकेट, जवाहर लाल, गुलाब चंद, रमेश कुमार, तीर्थराज, रामविलास, राम अजोर, महादेव, हनुमान प्रसाद, कैलाश नाथ, डा0 श्याम, कन्हैया लाल, राम जी शंकरगंज, जगन्नाथ, पवनेश कुमार, कृष्ण कुमार, विजय कुमार, रवि गुप्ता, आदर्श कुमार, अजय कुमार, महिला सभा की अध्यक्ष पूनम गुप्ता, महामंत्री रेखा उमरवैश्य आदि सैकड़ों की संख्या में पदाधिकारी उपस्थित रहे।

उमरवैश्य समाज द्वारा सम्मानित मेधावीगण।

शिक्षा समागम में राष्ट्रीय स्तर पर डॉ. जी. गणेशम ने बढ़ाया लालगंज का मान

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। क्षेत्र के कटरा बलीपुर निवासी डॉ. जी. गणेशम ने नई दिल्ली में केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा आयोजित अखिल भारतीय शिक्षा समागम में प्रतिनिधित्व कर जिले का नाम रोशन किया है। डॉ. जी. गणेशम इस समय केन्द्रीय विश्वविद्यालय इलाहाबाद में हिन्दी विभाग में अतिथि प्रवक्ता हैं। वह संस्कृत शिक्षक समिति के पूर्व जनपदीय अध्यक्ष आचार्य राजेश मिश्र के छोटे बेटे हैं। यह जानकारी मिलने पर शनिवार को क्षेत्र के विद्वानों में प्रसन्नता देखी गयी। नई दिल्ली के प्रगति मैदान में स्थित आईईसीसी में शनिवार एवं रविवार को आयोजित दो दिवसीय शिक्षा समागम में उन्हें राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर प्रतिनिधि वक्ता के रूप में विमर्श में सहभागिता का आमंत्रण मिला है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सचिव प्रो. मनीष आर जोशी ने डॉ. जी. गणेशम में लिखे पत्र में समागम में प्रतिभाग का आमंत्रण दिया है। संस्कृत विद्वान रहे इनहन भवानी धाम के दण्डी स्वामी वैभवानंद सरस्वती महराज के पौत्र की उपलब्धि को यहां विद्ववत समूह ने क्षेत्र के लिए गौरवपूर्ण कहा है। आचार्य डा. शक्तिधरनाथ पाण्डेय, आचार्य डा. शिवमूर्ति शास्त्री, संस्कृत परिषद के अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल, संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अनिल त्रिपाठी महेश, आचार्य देवानंद मिश्र, आचार्य हरिशंकर मिश्र, आचार्य त्रिवेणीधर शुक्ल, पं. अशोक शुक्ल आदि ने डॉ. जी. गणेशम को क्षेत्र का मान बढ़ाने के लिए साधुवाद दिया है।

मुहर्रम कमेटी ने सीओ सिटी को किया सम्मानित

सीओ सिटी को सम्मानित करते मुर्हरम कमेटी के पदाधिकारी।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। एसपी सतपाल अंतिल के निर्देश पर सीओ सिटी करिश्मा गुप्ता द्वारा मोहर्रम जुलूस के स्थल पर पहुंचकर फ्लैग मार्च किया गया था। आसपास की गतिविधियों पर कड़ी निगरानी करती सीओ करिश्मा गुप्ता नजर आई थीं। मोहर्रम के पर्व को सीओ सिटी शांतिपूर्ण ढंग सकुशल संपन्न कराने हेतु सतर्क एवं अलर्ट नजर आई। प्रशासनिक व्यवस्था को देखकर मोहर्रम का त्योहार मनाने वाले अल्पसंख्यक लोग पुलिस प्रशासन की सुरक्षा व्यवस्था को देखते हुए बहुत ही खुश एवं प्रसन्न नजर आए। मुस्लिम समाज के लोग जिले के तेजतर्रार ईमानदार एसपी सतपाल अंतिल की तारीफ करते नजर आए। इस दौरान मोहर्रम कमेटी की तरफ से सीओ सिटी करिश्मा गुप्ता को सराहनीय प्रशंसा चिन्ह देकर सम्मानित किया।

शिक्षक ने की छात्र की पिटाई, कान का पर्दा फटा

पूर्व माध्यमिक विद्यालय मुन्ना का पुरवा मानिकपुर का मामला

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। मानिकपुर थाना क्षेत्र के अंतर्गत चौकापुर मुन्ना का पुरवा पूर्व माध्यमिक विद्यालय में नए सत्र में अशद का एडमिशन उसके माता पिता ने कक्षा-6 में कराया है।

आरोप है कि स्कूल के शिक्षक ने पहाड़ा सुनाने को कहा जिस पर अशद पहाड़ा नही सुना सका जिस पर शिक्षक ने अशद का एक कान पकड़कर मरोड़ दिया और दूसरे कनपटी पर तमाचा जड़ दिया जिससे अशद असहाय होकर क्लास के अंदर बेंच पकड़कर बैठ गया। दो तीन बाद अशद के कान मे दर्द होने पर कान से पानी निकलने लगा जिस पर मां गुलशन बानो स्थानीय चिकित्सक के यहां दिखाने ले गई जिस पर चिकित्सक ने दवा देकर घर भेज दिया और बताया कि कान का पर्दा फट गया है जिसका ऑपरेशन कम उम्र के चलते अभी नही होगा। 18 वर्ष के होने पर कान का पर्दा का आपरेशन होगा। यह सुनकर मां घबड़ा गई और अशद को स्कूल लेकर शिक्षक के पास गई जहां स्कूल के बच्चों ने मां को अशद की पिटाई के बारे में बताया। घटना को लेकर परिजनों मे शिक्षक के प्रति आक्रोश है। अशद की मां ने मानिकपुर पुलिस को तहरीर देने की बात कही है। अशद के माता पिता की आर्थिक स्थिति काफी दयनीय है।

आई फ्लू से बचाव के लिये अपनाएं स्वच्छता, रहें सुरक्षित

आई फ्लू को लेकर एडीएम ने दी जानकारी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) त्रिभुवन विश्वकर्मा ने जनसामान्य से कहा है कि आई फ्लू से बचाव हेतु किये जाने वाले उपायों को जाने और सुरक्षित रहें, आई फ्लू के सम्बन्ध में दिशा निर्देशों का अनुपालन करें। उन्होने बताया है कि आई फ्लू को पिंक आई या कंजंक्टिवाइटिस भी कहा जाता है जो कि बारिश के मौसम में होने वाली एक आंखों की समस्या है। आई फ्लू आंखों के सफेद हिस्से में संक्रमण हो जाता है।

आई फ्लू के ज्यादातर मामले सर्दी-खांसी वाले वायरस की वजह से बढ़ते है। बरसात में फंगल इन्फेक्शन समेत हवा में प्रदूषण, वातावरण में नमी जैसी समस्या बढ़ जाती है जिसकी वजह से आंखों से जुड़ी परेशानियां होने लगती है। आई फ्लू फैलने के कारण के सम्बन्ध में उन्होने बताया है कि बारिश के गंदे पानी में नहाने या फिर लम्बे समय तक पसीने में काम करने से आंखों में इंफेक्शन की समस्या हो जाती है इसके अलावा आई फ्लू से पीड़ित लोगों के साथ हाथ मिलाने और गंदे हाथों से आंखों को छुने एवं पीड़ित व्यक्ति के कपड़े प्रयोग करने से आई फ्लू होने की आशंका बढ़ जाती है। उन्होंने आई फ्लू फैलने के लक्षण के सम्बन्ध में बताया है कि लाल सूजनयुक्त आंखे हो जाती है, आंखो में सफेद रंग का कीचड़ दिखाई देना, आंखों से पानी बहना, आंखों में दर्द, आंखों में जलन या खुजली होना तथा आंखों के आसपास की त्वचा में सफेद या लाल दाग होना इसके लक्षण है। उन्होंने बताया है कि आई फ्लू होने पर आंखों को गुनगुने पानी से साफ करें, आंखों का साफ करने के लिये साफ और सूती कपड़े का प्रयोग करें, आई फ्लू के लक्षण दिखते ही तुरन्त चिकित्सक से सम्पर्क करें। उन्होंने आई फ्लू से बचने के उपाय के सम्बन्ध में बताया है कि हाथों को नियमित अंतराल पर साबुन से जरूर धोए, आंखों को छूने से पहले व बाद हाथ धोने से संक्रमण का खतरा कम रहता है, संक्रमित व्यक्ति से दूरी बनाकर रखें हाथ बिल्कुल न मिलायें, आंखों में जलन होने और लाल होने पर स्वच्छ पानी से धोयें, गन्दे हाथ आंखों के पास न ले जायें, आंखों को खुजाएं नहीं, आंखों पर चश्मा जरूर लगायें, अपनी निजी चीजों जैसे तौलिया, तकिया आई कास्मेटिक्स (आंखों के मेकअप) आदि को किसी से साझा न करें, अपने रूमाल, तकिये के कवर, तौलिये आदि चीजों को रोज धोएं, टीवी या मोबाइल देखने से बचें।

अपनी धरोहर की रक्षा करना हमारा साझा कार्यः समाज शेखर

सरकार की उपेक्षा का शिकार मानधाता का आठवीं शदी का प्राचीन सूर्य मन्दिर

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्रसिद्ध पांडव कालीन भयहरणनाथ धाम के समीपवर्ती कटरा गुलाब सिंह नगर पंचायत में गौरा ग्राम सभा के स्वरूप पुर राजस्व ग्राम में प्राचीन काल से आठवीं शदी का सूर्य मन्दिर विद्यमान रहा है। वर्तमान में उसका भग्नावषेश मौजूद है। क्षेत्रीय समाज जहां उक्त स्थल से पूरी तरह अनभिज्ञ रहा है वहीं सरकार की घोर उपेक्षा के कारण निरन्तर उक्त प्राचीन स्थल पर अनाधिकार कब्जा भी बढा और यह स्थल उपेक्षा का शिकार रहा है। जनपद के गजेटियर में भी इस स्थान की महत्ता दर्ज है। आज भयहरणनाथ धाम के महासचिव समाज शेखर ने क्षेत्रीय ग्रामीणों की उपस्थिति में सपरिवार सूर्य मन्दिर पर स्थित अति प्राचीन शिवलिंग का विधिवत श्री श्रवण शास्त्री महराज के सानिध्य में विद्वान पंडितों के समूह द्वारा सम्पन्न हुआ।

बता दें कि वर्ष 2010 से भयहरणनाथ धाम क्षेत्रीय विकास संस्थान द्वारा महासचिव समाज शेखर के नेतृत्व में ग्राम पंचायत गौरा द्वारा सूर्य मन्दिर के पुरावषेशों व मूर्तियों का पंजीकरण ग्राम सभा के पक्ष में कराया गया। 2016 में स्थानीय लोगों ने समाज शेखर के मार्गदर्षन में एक जन सहयोग तथा लोक भागीदारी से एक कोश की स्थापना की।

सूर्य मन्दिर के प्राचीन रास्तों की सफाई व अतिक्रमण मुक्त कर रास्ता बहाल किया गया। यहां के बढ रहे अतिक्रमण को रोका गया। अब यहां छठ व पर्वों तथा नियमित पर श्रद्धालुओं का आगमन होना प्रारम्भ हुआ। अब नगर पंचायत कटरा गुलाब सिंह के अर्न्तगत उक्त स्थल जुड गया है। हाल ही में नगर पंचायत अध्यक्ष मुन्ना यादव ने स्थल का भमण कर विकास किए जाने का निर्णय लिया है।

सैकडों साल बाद आज इस उपेक्षित स्थल पर सामाजिक कार्यकर्ता समाज शेखर ने पत्नी श्रीमती प्राति समाज व पुत्र यथार्थ शेखर मिश्र के साथ विधिवत सामूहिक पूजन में प्रतिभाग कर मन्दिर के विकास हेतु अपने संकल्प को दोहराते हुए सभी के अति शीघ्र सहयोग व भागीदारी का आहवाहन किया।

रूद्राभिषेक कार्यक्रम में प्रमुख रूप से भयहरणनाथ धाम के अध्यक्ष राज कुमार शुक्ल, सूर्य मन्दिर विकास समिति के मोती लाल पटेल, भयहरणनाथ धाम के मेला उप प्रबन्धक राज किषोंर मिश्र, अंजनी तिवारी, निखिल शुक्ल, प्रभाकर राय, रमेश श्रीवास्तव, अनुज सिंह आदि शामिल रहे।

प्राचीन सूर्य मंदिर पर पूजन-अर्चन करते समाज शेखर।

मानव तस्करी दिवस पर पुलिस ने चलाया चेकिंग अभियान

प्रतापगढ़। रेलवे स्टेशन पर विश्व मानव तस्करी दिवस के अवसर पर संस्था द्वारा आयोजित कार्यक्रम में आरपीएफ थाना प्रभारी चंद्र प्रकाश मिश्र ने कहा कि मानव तस्करी एक बहुत बड़ा अपराध है इससे प्रभावित ज्यादातर बच्चे होते हैं। जीआरपी प्रभारी रामजीत ने अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा कि बच्चों को अगवा करके देह व्यापार एवं भीख मंगवाने जैसे कार्यों के लिए यह घृणित कार्य किया जाता है इसमें समाज के हर वर्ग का सहयोग बहुत आवश्यक है। इस मौके पर पुलिस टीम द्वारा ट्रेनों में चेकिंग अभियान चलाया गया। कार्यक्रम में भरत कुमार मिश्र, रंजय मिश्रा, प्रवीण, उमेश, आशुतोष ओझा और अनीता समेत कई ने अपने विचार रखे।

रेलवे प्लेटफार्म पर चेकिंग करती पुलिस टीम

तहसील पट्टी में राहत चौपाल का हुआ आयोजन

सर्पदंश सप्ताह का किया गया आयोजन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) त्रिभुवन विश्वकर्मा की अध्यक्षता में तहसील पट्टी सभागार में राहत चैपाल एवं सर्पदंश सप्ताह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में अपर जिलाधिकारी ने सर्पदंश से बचाव हेतु क्या करें-क्या न करें के सम्बन्ध में चर्चा की और बताया कि सर्पदंश होने पर सांप से दूर हो जाये और घबराये नहीं, जिस जगह पर सर्पदंश है वहां से सभी प्रकार के आभूषण जैसे घड़ी, अंगूठी आदि को निकाल दें। सर्पदंश वाले अंग को न मोड़े, पीड़ित व्यक्ति का सर ऊंचा करके लिटायें या बैठायें, घाव को तुरन्त साबुन या गर्म पानी से साफ करें, काटे हुये अंग को पट्टी या सूती कपड़े से बांध दें, दंश को साफ व सूखे कपड़े से ढक दें, पीड़ित व्यक्ति को स्थिर और शांत अवस्था में रखें तथा पीड़ित व्यक्ति को तुरन्त नजदीकी अस्पताल लेकर जायें जहां पर एंटी स्नैक वेनम इंजेक्शन की उपलब्धता है जिसमें समय के अन्तर्गत जान बचाने की सम्भावना रहती है।उन्होंने कहा कि सर्पदंश के लक्षणों के सम्बन्ध में बताया गया कि सर्पदंश वाले स्थान पर तेज दर्द होना, बेहोशी आना, दंश वाले हिस्से में सूजन, पलकों का भारी होना, पसीना आना, उल्टी महसूस होना, सांस लेने में तकलीफ होना, आंखों में धुंधलापन छाने लगता है। सांप द्वारा काटे जाने पर यह बिलकुल न करें जैसे डंक की जगह पर किसी धारदार वस्तु से काटकर या दबाकर जहर को निकालने का प्रयास न करें, डोरी या रस्सी कसकर न बांधे, गर्म पट्टी का उपयोग न करें।

सर्पदंश से बचने के लिये किसी भी कूड़ा करकट वाली जगह, खलिहान में, पशु शालाओं में एवं अनाज के ढेर में जाने से पहले सावधानी बरतने की आवश्यकता है, साथ ही रात में निकलते समय टॉर्च एवं लाठी को लेकर निकलना चाहिये जिससे किसी भी दुर्घटना से बचा जा सके। सांप को अपने आस-पास देखने पर धीरे-धीरे उससे पीछे हटें, सांप को पकड़ने या मारने की कोशिश न करें, मलबे या अन्य वस्तुओं के नीचे सांप हो सकते है सतर्क रहे। सांप काट ले तो झाड़-फूक के बजाए सरकारी अस्पताल में तुरन्त जाये। उन्होने लेखपाल, राजस्व निरीक्षक एवं अन्य राजस्व कर्मियों के मोबाइल में आकाशीय बिजली एवं वज्रपात से बचाव हेतु दामिनी एप एवं सचेत एप को डाउनलोड करवाया गया। उन्होने उपस्थित लेखपाल, राजस्व निरीक्षक एवं अन्य राजस्व कर्मियों को निर्देशित किया कि सर्पदंश के दौरान जनसामान्य को क्या करें-क्या न करें के सम्बन्ध में जागरूक करें तथा आकाशीय बिजली एवं वज्रपात से बचाव हेतु दामिनी ऐप एवं सचेत ऐप के सम्बन्ध में लोगों जानकारी दें तथा अधिक से अधिक लोगों के मोबाइल में इन दोनो एप को डाउनलोड करायें। इस अवसर पर उपजिलाधिकारी पट्टी एवं तहसीलदार भी उपस्थित रहे।

हत्या के प्रयास के दो वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

प्रतापगढ़। पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल के निर्देशन में थाना कंधई के उ0नि0 राहुल कुमार मय हमराह द्वारा थाना स्थानीय पर पंजीकृत मुकदामे में वांछित अभियुक्तगण नीतीश उर्फ निक्के पुत्र सुरेश वर्मा व आदर्श उर्फ सनी पुत्र धर्मराज निवासीगण वारीखुर्द थाना कंधई जनपद प्रतापगढ़ को उनके घर से गिरफ्तार किया गया। तथा अभियुक्तों की निशानदेही पर घर से घटना में प्रयुक्त दो अदद बाँस के डण्डे बरामद किये गये।

कौशाम्बी संदेश

खबर संक्षेप

नारी सुरक्षा स्वावलंबन की दिशा में चलाया जा रहा मिशन शक्ति अभियान

कौशाम्बी। जिले के करारी मंझनपुर चरवा सैनी संदीपन घाट पिपरी कोखराज सहित विभिन्न थाना पुलिस टीम द्वारा महिलाओं बालिकाओं को नारी सुरक्षा स्वावलंबन की दिशा में चलाए जा रहे मिशन शक्ति अभियान के तहत अपने-अपने थाना क्षेत्र में महिला पुलिस कर्मियों द्वारा चौपाल लगाकर महिलाओं बालिकाओं की समस्याओं को सुना गया व महिला सुरक्षा संबंधी हेल्पलाइन नंबरों के बारे में महिलाओं बालिकाओं को जागरूक किया गया।

सैनी कोतवाली में आयोजित हुआ सैनिक सम्मेलन

कौशाम्बी। सैनी कोतवाली के नए प्रभारी ने थाने का कार्यभार ग्रहण करने के बाद रविवार को थाना पर नियुक्त अधिकारी कर्मचारीगणों के साथ सैनिक सम्मेलन कर उनकी समस्याएं सुनीं एवं उचित निराकरण किया तथा क्षेत्र की स्थितियों की जानकारी ली इस मौके पर उन्होंने कहा कि सरकार के निर्देशों के अनुसार कार्य किए जाएंगे उन्होंने मातहतों से कहा कि अपराध और अपराधियों पर कड़ी नजर रखी जाए।

हमारी महान संस्कृति से है विश्व में भारत की पहचान : अवधेश

चायल कस्बे में हिन्दू जागरण मंच की बैठक सम्पन्न, नगर कार्यकारणी घोषित
राजू भारतीय नगर अध्यक्ष मनोनित, सैकडो की संख्या में मौजूद रहे कार्यकर्ता

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। भारत की पहचान पूरे विश्व में हमारी हिंदू संस्कृति चलते ही है पूरे विश्व में आज सनातन को उस धर्म का के रूप में देखा जाता है जो पूरी तरह से वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है। आज विदेश को बड़ी-बड़ी यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर हिंदू धर्म पर पीएचडी कर रहे हैं। हमने हमें अपने देश की गौरवशाली संस्कृति पर गर्व है उक्त बातें हिंदू जागरण मंच के जिलाध्यक्ष अवधेश नारायण शुक्ला ने नगर पंचायत चायल में आयोजित बैठक के दौरान कही। इस मौके पर उन्होंने चायल नगर की कार्यकारिणी की घोषणा भी किया जिसमें राजू भारतीय को नगर अध्यक्ष मनोनीत किया गया। इस मौके पर अध्यक्ष अवधेश नारायण ने कहा कि देश में हिंदुओं पर विभिन्न तरीके से हमले करके परेशान करने का काम किया जा रहा है। भारत देश पूरे विश्व में मात्र एक ऐसा देश है जहां हिंदू सनातनी बहुसंख्यक हैं। ऐसे में यहां पर भी हिंदुओं को असुरक्षा महसूस होने लगे तो फिर हिंदू कहां जाएगा। इस मौके पर उन्होंने हिंदुओं का आवाहन करते हुए कहा कि जात पात छुआछूत से बाहर निकल कर हमें एकजुटता दिखानी होगी। इस मौके पर नगर उपाध्यक्ष के रूप में राजू पासी,रमाशंकर,रामबाबू मिश्रा, चंद्र शेखर,बलराम प्रजापति,पंकज प्रजापति,उधव सोनकर,अमन कुशवहा, सोनू कुशवहा, बैजनाथ,संजय कुमार को मनोनित किया गया। इस मौके पर रजत पांडे, शेखर मिश्रा, यशवंत यादव, सर्वेश पटेल, बाल्मीकि पांडे, अंकुर मिश्रा, अजय कुमार,दिलीप,अनुज दिवाकर, विवेक पाल, प्रदीप कुमार, शिवलाल,रमेश गौतम,राम बहोरी सहित सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद रहे।

कौशांबेश्वर संकट मोचन आश्रम में अधिक मास में हो रहा शिव महा पुराण की कथा

कौशाम्बी। ऐतिहासिक प्राचीन कौशांबेश्वर संकट मोचन आश्रम जोटका तालाब कौशाम्बी में सक्षम युवा विकास फाउंडेशन कौशाम्बी के वरिष्ट सालाहकार व मंदिर के संस्थापक पुजारी बाबा बुद्धनदास महराज द्वारा अधिक मास में शिव महा पुराण का पाठ किया जा रहा है जिसमे मंदिर में पंडित रुद्र देव महराज, सोनू महराज द्वारा प्रतिदिन कौशांबेश्वर महादेव का रुद्रा अभिषेक किया जाता है और यहां हर सोमवार को शिव भक्तों द्वारा पूजा पाठ किया जाता है ऐसा लोगो का मानना है कि इस मंदिर में भगवान से मांगी हुई मन्नत जल्द पूरा होता है सक्षम युवा विकास फाउंडेशन के अध्यक्ष एवं मंदिर के संरक्षक कृष्ण कुमार उर्फ राजू केशरवानी यहां आने वाले भक्तो का आभार व्यक्त करते है और सक्षम युवा विकास फाउंडेशन कौशाम्बी के समस्त टीम मिल कर होने वाले कार्यक्रम में अपना सहयोग देते है।

राष्ट्रीय कांग्रेस कमेटी के प्रयागराज मंडल अध्यक्ष बनाये गए डॉ. रामअभिलाष

हर्रायपुर कौशाम्बी। राष्ट्रीय कांग्रेस कमेटी के प्रयागराज मंडल अध्यक्ष डॉ. रामअभिलाष बनाए गए हैं जैसे ही इस बात की जानकारी उनके समर्थकों को हुई कार्यकर्ता राम जी होटल में एकत्रित हुए और डॉ राम अभिलाष को माल्यार्पण कर जोरदार तरीके से उनका स्वागत किया इस मौके पर मानवाधिकार कांग्रेस कमेटी के जिलाध्यक्ष विष्णु कुमार सोनी,मानवाधिकार कांग्रेस जिला उपाध्यक्ष इकरार अहमद मानवाधिकार कांग्रेस कमेटी तहशील अध्यक्ष चायल अनिल कुमार व जितेंद्र शर्मा मो.आरिफ आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

बृजेश मेमोरियल अस्पताल भरवारी में आज उपलब्ध रहेंगे हड्डी रोग विशेषज्ञ

भरवारी कौशाम्बी। नगर पालिका परिषद भरवारी के चिकित्सक एवम हड्डी रोग विशेषज्ञ मयंक केशरवानी 30 जुलाई को भरवारी में नही उपलब्ध रहे वह 31 जुलाई दिन सोमवार को अस्पताल में मौजूद रहेंगे डॉ मयंक हड्डी रोग के संबंधित घुटने हिप एवम फेस से संबंधित सभी का ट्रांस प्लांट यानी प्रत्यारोपण के लिए दिल्ली से एक स्वास्थ टीम के साथ सिंगापुर गए हुए हैं जिसके चलते 28,29 व 30 जुलाई तक वह सिंगापुर में ही रहेंगे। डॉ मयंक सोमवार 31 जुलाई को बृजेश मेमोरियल अस्पताल में उपलब्ध रहेंगे।

भाजपा में जाने की बातों से इंद्रजीत सरोज और पूजा पाल ने किया इनकार

कौशाम्बी। सपा नेता इंद्रजीत सरोज और विधायक पूजा पाल ने भाजपा में जाने की बातों का किया खंडन उन्होंने कहा भाजपा नेताओं की यह साजिश है दोनों नेताओं ने कहा कि समाजवादी पार्टी छोड़कर भाजपा में जाने का कोई सवाल नहीं उठता है इंद्रजीत सरोज ने कहा कि समाजवादी पार्टी के बढ़ते वर्चस्व से भाजपा बौखला गई है और उल जलूल की भ्रामक खबरें प्रकाशित करवा रही है उनके भाजपा में जाने की खबर भ्रामक है और यह भाजपा की साजिश है।

हब्बूनगर सिपाह में बेखौफ लकड़ी माफियाओं ने काट दिया विशाल महुआ शीशम का हरा पेड़

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। कड़ा धाम थाना क्षेत्र के बेखौफ लकड़ी माफियाओं ने विशालकाय महुआ शीशम आदि हरा पेड़ काट दिया है और वाहन में भरकर हरे पेड़ की काटी गई लकडियो को लकड़ी माफिया क्रेन व मजदूरों के सहयोग से उठा ले गए हैं विशालकाय हरे पेड़ को काटने में लकड़ी माफियाओं ने पेट्रोलिंग आरा मशीन का प्रयोग किया है बेखौफ तरीके से मशीनें चलती है ट्रकों में लकड़ियां ले जाई जाती हैं फिर भी सरकारी मशीनरी अनजान बनने का ढोंग कर रही है पौधारोपण की लंबी चौड़ी बात करने वाले अफसर भी हरे पेड़ों के कटान रोकने के लिए प्रयास नहीं कर रहे हैं बताया जाता है कि विशालकाय हरा पेड़ को काटने में लकड़ी माफियाओं ने दर्जनों मजदूरों को लगाया था खुलेआम हरे पेड़ काटे जाने के बाद भी वन विभाग से लेकर थाना पुलिस तक अनजान बनी रही खबर लिखे जाने तक लकड़ी माफियाओं और उनके मजदूरों पर मुकदमा दर्ज करके लकड़ी बरामद करने का प्रयास पुलिस और वन विभाग ने शुरू नहीं किया है। जानकारी के मुताबिक कड़ा धाम थाना क्षेत्र के

हब्बू नगर सिपाह में बेखौफ लकड़ी माफियाओं ने काट दिया विशाल महुआ शीशम का हरा पेड़, हरे पेड़ों पर बेखौफ चलती है मशीनें ट्रकों से जाती हैं लकड़ियां विभाग बना अनजान, दर्जनों मजदूरों को लगाकर पेट्रोलिंग आरा मशीन से पेड़ काटने वाले लकड़ी माफिया और मजदूरों पर मुकदमा दर्ज करने की मांग

ग्राम पंचायत हब्बूनगर सिपाह में कई विशालकाय महुआ शीशम का हरा पेड़ लकड़ी माफियाओं ने काटकर ध्वस्त कर दिया है पेट्रोलिंग आरा मशीन से हरा पेड़ को काटने के बाद लकड़ी माफियाओं ने वाहन में लकड़ियां भर कर उठा ले गए हैं पेड़ कट जाने और लकड़िया ले जाने के बाद भी वन विभाग से लेकर कड़ा धाम पुलिस अनजान बनी रह गई। इलाके में लकड़ी माफियाओं का हरे पेड़ को काट कर उठा ले जाने का प्रतिदिन का खेल हो गया है बताया जाता है कि थाने के कुछ पुलिसकर्मियों की लकड़ी माफियाओं से बेहद सांठगांठ है जिससे इलाके में आए दिन हरे पेड़ों को काटकर उसकी लकड़ी भी वाहन में भरकर लकड़ी माफिया उठा ले जाने में कामयाब हो रहे हैं इलाके के लोगों ने डीएम एसपी का ध्यान आकृष्ट कराते हुए लकड़ी माफिया के साथ साथ वाहन चालक वाहन मालिक और दर्जनों मजदूरों पर मुकदमे दर्ज कर जुमार्ना वसूली की कार्रवाई करते हुए हरे पेड़ की काटी गई लकड़ी को बरामद करने की मांग की है ग्रामीणों ने कहा है कि इस मामले में क्षेत्र की एक आरा मशीन संचालक की भी भूमिका सवालों के घेरे में है और आरा मशीन संचालक के कारनामों की जांच करते हुए उसके आरा मशीन से लकड़ी बरामद कराई जाए और आरा मशीन संचालक पर भी मुकदमा दर्ज किया जाए।

सरकार के सपने को साकार करने में असफल हो रहे विद्युत विभाग के अधिकारी व कर्मचारी

बिजली कटौती होने पर विभाग के अधिकारी व कर्मचारी के साथ-साथ सूबे के मुखिया को कोसते हैं ग्रामीण

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। विद्युत विभाग के अधिकारी व कर्मचारी बेलगाम होकर नियम विरुद्ध तरीके से कार्य करते हैं जिसका खामियाजा आमजनमानस को उठाना पड़ता है। सूबे के मुखिया का आदेश विद्युत विभाग के अधिकारी व कर्मचारियों के ऊपर पूरी तरह से लागू होता दिखाई नहीं दे रहा है, इसमें बेहद सख्त सुधार की जरूरत है। उत्तर प्रदेश के योगी सरकार का विद्युत अधिकारियों को साफ शब्दों में आदेश है कि ग्रामीण क्षेत्रों में बिना कटौती किए 18 घंटे बिजली की लगातार सप्लाई होनी चाहिए लेकिन विद्युत विभाग के अधिकारी व कर्मचारियों के ऊपर यह आदेश बिल्कुल लागू होता नहीं दिखाई दे रहा है। उमस भरी गर्मी और धान के फसल की रोपाई के लिए इस समय हर किसी को बिजली की सख्त आवश्यकता है। लेकिन, पर्याप्त बिजली न मिल पाने के कारण विद्युत विभाग के अधिकारी व कर्मचारी के साथ - साथ उत्तर प्रदेश के मुखिया तक को ग्रामीण लोग कोसने से बाज नहीं आते हैं। जबकि, इसका परिणाम भविष्य में देखने को जरूर मिलेगा। उदाहरण के तौर पर मनौरी पावर हाउस का यही हाल है। मनौरी पावर हाउस के अधिकारी व कर्मचारी पूरी तरह से बेलगाम हो गए हैं। सरकार के सपने को साकार होने से पहले ही पानी फेरने का काम अधिकारी व कर्मचारी करते हैं। मनौरी पावर हाउस विद्युत कटौती के मामले में अव्वल नंबर पर है, यहां के कर्मचारी जब चाहें तब बिजली कटौती कर लोगों को परेशान करते हैं। इनके लिए कोई नियम कानून मायने नहीं रखता है। ग्रामीणों के द्वारा विद्युत कटौती के बारे में विद्युत कर्मचारियों से सवाल करने पर टेक्निकल प्रॉब्लम बताकर बात को टाल देते हैं, जबकि सच्चाई यह है कि विद्युत कर्मचारी विद्युत सप्लाई के समय शटडाउन लेकर विद्युत सप्लाई की गड़बड़ी ठीक करने का काम करते हैं। विद्युत सप्लाई के समय शटडाउन लेकर गड़बड़ी ठीक करने के एवज में शटडाउन के नाम पर कर्मचारी ग्रामीणों से रुपए लेते हैं, जिसमें कई लोगों का हिस्सा बाट होता है। यदि विद्युत सप्लाई के समय से पहले विद्युत कर्मचारी के द्वारा किसी भी प्रकार की गड़बड़ी ठीक कर दिया जाए तो विद्युत कटौती से ग्रामीणों को छुटकारा मिल जाए। लेकिन, ऐसा तब होगा जब विद्युत विभाग के अधिकारी जिम्मेदारी के प्रति संवेदनशील होंगे।

आए दिन विद्युत तार में हो रहा फाल्ट

कौशाम्बी। मनौरी बाजार में बिजली के खंभे में लगे केबल में आए दिन फाल्ट होता है जिससे विद्युत तारे जलने लगती हैं नगर के विद्युत खंभों में लगी विधुत केबिल एकदम से जर्जर हो चुकी है जो हादसे को दावत दे रही है बार-बार शिकायत करने के बावजूद भी केबिल नहीं बदली जा रही है शनिवार को फिर विद्युत तार में शॉर्ट सर्किट से फाल्ट हो गया और देखते-देखते विद्युत तार जलने लगी है नगर के लोगों का कहना है कि विधुत तार में इसी तरह आए दिन आग लगती रहती है जिससे किसी बड़े हादसे की संभावना बनी रहती है लेकिन उसके बाद भी जर्जर तार को बदलने का प्रयास विद्युत विभाग के अधिकारी नहीं कर रहे है।

दलित बालक को दबंग ने पीटकर उधेड़ दी चमड़ी

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम रैया देह माफी के रहने वाले एक 11 वर्ष के गरीब दलित को पास के गांव पुरे अयोध्या के रहने वाले दबंग ने केवल इस बात के लिए बुरी तरह से बेरहमी से मारपीट दिया कि बालक की भैंस दबंग के चरी के खेत में चली गई थी। इतनी सी बात को लेकर दबंग युवक ने जल्लाद की तरह नाबालिग दलित बालक को बेरहमी से पिटाई की जिससे उसके शरीर पर गम्भीर चोटे आई है। पीठ की चमड़ी उधेड़ ली जिसकी शिकायत दलित बालक के माता ने चरवा थाना में शिकायती प्रार्थना दिया है। आपकों बता दें की रैया देह माफी की रहने वाली सरिता देवी पत्नी ज्ञान सिंह ने थाने में शिकायती प्रार्थना देकर बताया कि 30 जुलाई को समय करीब 4 बजे दिन में सरिता देवी का लड़काअंशू पासी उम्र लगभग 11 वर्ष अपने मवेशी को खेत तरफ चरा रहा था। अचानक बल्लू यादव पुत्र बीरे यादव निवासी पुरे अयोध्या थाना चरवा के चरी के खेत में मवेशी चली गई इतनी सी बात को लेकर उक्त विपक्षी अंशु पासी को गाली गलौज देते हुए डंडे से बुरी तरह मारा पीटा लड़का रोते हुए अपनी मां सरिता के पास गया तो सरिता देवी उक्त विपक्षी बल्लू यादव व उसके पिता बीरे यादव के पास जाकर उलाहना देने गई तो वह दोनों लोग गाली गलौज की साथ कहा कि यहां से चली जाओ नहीं तो जान से हाथ धोना पड़ जाएगा। पुलिस मामले को गंभीरता से लेते हुए जांच पड़ताल में जुट गई है। विपक्षी के घर छापा मारा गया मगर उक्त विपक्षी घर से फरार हो गया है।

आईटीआई सिराथू के प्रधानाध्यापक पर वसूली का लगा आरोप, शिकायत

अखंड भारत संदेश

प्रशिक्षु इंजीनियर से लिए रुपए खाते से हुआ था पैसा ट्रांसफर हड़कंप शिकायत पर डीएम ने आयुष को सौंपी जांच

कौशाम्बी। आईटीआई से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले युवाओं को प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षु के रूप में विभिन्न विभागों में भेजा जाता है। जहां पर 12 महीने के लिए यह छात्र उसी विभाग में रहकर सीनियर इंजीनियरों से इंजीनियरी का गुर सीखते हैं। इसके लिए सरकार 7 हजार रुपए प्रतिमाह मानदेय भी प्रशिक्षु इंजीनियरों को प्रदान करती है। इसी मानदेय पर सिराथू आईटीआई के प्रधानाध्यापक पर डाका डालने का आरोप लगा है। शिकायत करने वाले छात्र अमित मिश्रा ने बताया कि पहली बार उसके पास 35 हजार रुपए मानदेय के रूप में आए थे। जिसमें से 15 हजार रुपए घूस के तौर पर प्रधानाध्यापक ने एक सहकर्मी के खाते में डलवाए युवक ने जब यह शिकायत जिलाधिकारी से किया तो हड़कंप मच गया। आनन फानन में जिलाधिकारी ने जिला विद्यालय निरीक्षक को जांच कर कार्रवाई के आदेश दे दिए हैं। मामले की शिकायत करते हुए प्रशिक्षु आईटीआई अमित मिश्रा ने बताया कि उसे आईटीआई कॉलेज में अप्रेंटिस प्रशिक्षण के लिए लगाया गया है। लेकिन विद्यालय के प्रचार तथा वहां के एक स्टाफ अजय पटेल ने मानदेय भुगतान के नाम पर 15 हजार रुपए ले लिया है। जिसमें उन्होंने 5 हजार रुपए अपने खाते में तथा नगद लिए हैं। 10 हजार रुपए नगद लेने के बाद अब 35 हजार मानदेय मिलने के बाद इस पैसे को फिर से मांगा जा रहा है। यही नहीं प्रधानाचार्य द्वारा यह भी कहा गया कि यदि पैसे को मुझे नहीं देते तो आगे जो तुम्हारा मानदेय आने वाला है। उसको मैं रुकवा दूंगा प्रशिक्षु ने इसके बाद मामले की शिकायत जिलाधिकारी से किया। मामले की गंभीरता को देखते हुए जिलाधिकारी ने इसकी जांच जिला विद्यालय निरीक्षक को सौंप दिया, जिसमें अब जिला विद्यालय निरीक्षक ने मजिस्ट्रेट जांच की रिपोर्ट जिला अधिकारी को सौंप दी इसके बाद से ही विद्यालय में हड़कंप मचा हुआ है।

लाज बचाने के लिए लेखपाल को निलंबित कर बना दिया गया बलि का बकरा

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। राजस्व विभाग सहित विभिन्न विभागों में घूसखोरी तो रोज होती है लेकिन शिकायत के बाद कार्यवाही नहीं होती है घूसखोरी प्रथा बन चुकी है सिराथू तहसील के लेखपाल विनोद कुमार का घूसखोरी का वीडियो वायरल होने के बाद लाज बचाने के लिए लेखपाल को निलंबित कर बलि का बकरा बना दिया गया घूसखोरी रोकने के लिए मुख्यमंत्री बार-बार निर्देश दे रहे हैं लेकिन अफसर घूसखोरी रोकने को तैयार नहीं है स्थिति इतनी बदतर हो गई है कि अब लेनदेन के मामले में ऑडियो वीडियो वायरल होगा तभी घूसखोर पर कार्यवाही होगी घूसखोरी के मामले में कहां तक वीडियो बन पाएगी तहसील का कोई भी काम घूसखोरी के बिना नही चलता राजस्व विभाग की यह प्रथा बन चुकी है आए दिन शिकायती प्रार्थना पत्रों में फरियादी घूसखोरी की चर्चा करते हैं लेकिन अब उसको रोकने के लिए सबूत चाहिए वीडियो ऑडियो चाहिए और वीडियो ऑडियो नहीं होगा सबूत नहीं होगा तो घूसखोरी पर कार्यवाही नहीं होगी जिससे घूसखोरी बंद होने का नाम नहीं लेती जबकि राजस्व बिभाग में तैनात लेखपालों की संपत्ति रातों-रात अकूत तरीके से बढ़ गई है साइकिल भत्ता लेने वाले राजस्व लेखपाल अफसरों के सामने लग्जरी वाहनों से तहसील पहुंच रहे हैं लेकिन अफसरों को दिखाई नहीं पड़ रहा है। कुछ वर्षों में अकूत संपत्ति के धनी बने घूसखोर लेखपालों की संपत्तियों की जांच करा कर अफसर उनको बेनकाब कर उन पर कठोर कार्यवाही करने को तैयार नहीं दिख रहे हैं जबकि राजस्व लेखपालों की अकूत संपत्तियों की जांच कराई जाए तो दर्जनों लेखपाल पर कठोर कार्यवाही होना तय है लेकिन लचर व्यवस्था के चलते योगी सरकार में क्या घूसखोरी बंद होगी और घूसखोर राजस्व कर्मियों पर कठोर कार्यवाही हो पाएगी या फिर केवल एक लेखपाल विनोद को बलि का बकरा बना कर निलंबित करने के बाद घूसखोरी बंद करने का झूठा प्रयास होगा घूसखोरी के मामले में शासन प्रशासन को कठोर निर्णय लेने की जरूरत है अकूत संपत्ति के धनी राजस्व लेखपालों के संपत्तियों की जांच करा कर इनकी संपत्तियों को जप्त कर इन पर मुकदमा दर्ज करा कर गिरफ्तारी कराए जाने की जरूरत है लेकिन क्या योगी सरकार में यह संभव होगा यदि राजस्व लेखपाल के अकूत संपत्तियों की योगी सरकार ने जांच कराई तो कुछ वर्षों की तैनाती के दौरान दर्जनों लेखपाल करोड़ पति मिलेंगे कई मकान जमीन प्लॉट आलीशान बंगला बड़ा बैंक बैलेंस लग्जरी वाहन सब कुछ इनके पास मौजूद मिलेगा।

राजस्व बिभाग में तैनात लेखपालों की संपत्ति रातों-रात अकूत तरीके से बढ़ गई

सरकारी अस्पताल में समय से नही आते डॉक्टर मरीज परेशान

स्वास्थ्य व्यवस्था को सुधार ना करने वाले मुख्य चिकित्सा अधिकारी पर कार्यवाही की मांग

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। स्वास्थ्य मंत्री बृजेश पाठक के बार-बार निर्देश के बाद भी कौशांबी जिला की सरकारी स्वास्थ्य व्यवस्था नहीं सुधर रही है सरकारी अस्पतालों के लापरवाह चिकित्सक सुधारने को तैयार नहीं है बीते कई वर्षों से बिना काम के वेतन ले रहे चिकित्सक अब निजी नर्सिंग होम छोड़कर सरकारी अस्पताल नहीं जाना चाहते हैं जिससे सरकारी अस्पतालों की स्थिति बदतर है मरीजों को इलाज नहीं मिल पाता है कई कई घंटे सरकारी अस्पताल में इलाज के लिए मरीज इंतजार करते हैं मरीज तड़पते रहते हैं उन्हें देखने वाला कोई नहीं है शिकायत के बाद भी मुख्य चिकित्सा अधिकारी मामले को संज्ञान नहीं ले रहे हैं आखिर ड्यूटी ना देने वाले चिकित्सकों से मुख्य चिकित्सा अधिकारी के क्या रिश्ते हैं इस पर भी स्वास्थ्य मंत्री जांच कर कार्यवाही नहीं कर सके हैं। सरकारी अस्पतालों की चौपट स्वास्थ्य व्यवस्था की हकीकत जानने के लिए शुक्रवार को जब कुछ सरकारी अस्पतालों का जायजा लिया गया तो देखा गया कि मूरतगंज ब्लॉक क्षेत्र के अंतर्गत समुदायिक स्वास्थ्य केंद्र आलमचन्द में दोपहर के 11:00 बजे तक एक भी डॉक्टर नहीं पहुंचे हैं कुछ स्वास्थ्य कर्मी को छोड़कर अन्य स्वास्थ्य कर्मी भी अस्पताल से गायब थे मरीज डॉक्टर के इंतजार में अस्पताल में घंटो बैठे थे लेकिन उनका इलाज नहीं हो सका है जिससे मजबूर मरीज अकुशल अनट्रेंड झोलाछाप क्लीनिक में इलाज कराने को विवश हैं। सरकारी अस्पताल में करोड़ों रुपए सालाना खर्च किए जाने के बाद अस्पताल की दुर्दशा पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी गंभीर नहीं है आखिर ऐसे सरकारी अस्पताल खोलने का क्या मतलब है जिन अस्पतालों में डॉक्टर ना रहे मरीजों का इलाज ना हो सके इस तरह के सरकारी अस्पतालों को बंद करके सरकारी खजाने को बचाया जाना ही सरकार के लिए उचित माध्यम होगा जिले के तमाम ऐसे सरकारी अस्पताल है जहां समय से डॉक्टर नही आते है शुक्रवार को भी दिन में 11:00 बजे तक सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र आलम चन्द्र में डॉक्टर नहीं पहुंचे है यही स्थिति सेलरहा पश्चिम महगांव अमनी लोकीपुर म्योहर टिकरा कोखराज भरवारी कादिल पुर कसेन्दा करारी टेवा उद्दीन सहित विभिन्न सरकारी अस्पतालों का रहा जहां शुक्रवार को दोपहर तक डॉक्टर मौजूद नहीं थे जिससे वहां मौजूद मरीज दर्द और पीड़ा से कराहते रहे कई घंटे इंतजार करने के बाद सरकारी अस्पताल में मरीजों का इलाज नहीं हो सका है सरकारी अस्पताल की चौपट व्यवस्था के बाद मुख्य चिकित्सा अधिकारी स्वत संज्ञान नहीं लेते हैं शिकायत के बाद भी सरकारी अस्पताल की चौपट व्यवस्था को सुधार करने का प्रयास मुख्य चिकित्सा अधिकारी नहीं करते हैं जिससे मुख्य चिकित्सा अधिकारी की मंशा का अंदाजा लगाया जा सकता है लोगों ने स्वास्थ्य मंत्री का ध्यान आकृष्ट कराते हुए स्वास्थ्य व्यवस्था को सुधार ना करने वाले मुख्य चिकित्सा अधिकारी पर कार्यवाही की मांग की है।

संपादकीय

अविश्वास प्रस्ताव लाकर विपक्ष ने ऐसी बॉल फेंकी है जिस पर मोदी छक्का लगा देंगे

विपक्षी गठबंधन ह्यइंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंसह्ण (इंडिया) ने मोदी सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव का निर्णय लेकर अपनी राजनीतिक अपरिपक्वता, नासमझी एवं विवेकहीनता का ही परिचय दिया है, यह प्रस्ताव स्वीकार भी हो गया। अब प्रतीक्षा है उस पर बहस की। आइएनडीआइए भले ही अविश्वास प्रस्ताव को अपनी जीत समझ रहा हो और यह मानकर चल रहा हो कि उसे संसद में अपनी एकजुटता एवं ताकत दिखाने का अवसर मिलेगा, लेकिन एक तो इस प्रस्ताव का गिरना तय है, दूसरा विपक्षी एकता एवं शक्ति के दावे भी खोखले साबित होने है। जब प्रस्ताव का गिरना पहले से ही तय है तो क्यों विपक्ष अपनी किरकिरी कराने पर तुला है। विपक्षी दलों का मणिपुर पर प्रधानमंत्री के वक्तव्य की अपनी मांग पर अड़े रहना भी हास्यास्पद है। क्योंकि प्रधानमंत्री ने पहले ही मणिपुर के हालात पर क्षोभ व्यक्त करते हुए संसद भवन परिसर में कहा था कि यह घटना किसी भी सभ्य समाज को शर्मसार करने वाली है और इससे पूरे देश की बेइज्जती हुई है। बावजूद विपक्ष की जिद्द इसलिये भी बचकानी एवं बेहूदी कही जायेगी क्योंकि कोई भी मामला जिस मंत्रालय से संबंधित होता है, उसके ही मंत्री को उस पर वक्तव्य देना होता है।

सोचने वाली बात है कि विपक्ष यदि वास्तव में मणिपुर पर दुःखी होता तो चार दिन संसद का काम रोक कर न तो नारेबाजी और न हठधर्मिता में अपनी ऊर्जा खपा रहा होता और न ही गृह मंत्री को सुनने से इन्कार कर रहा होता। विपक्षी दलों की चिंता मात्र एक दिखावा ही अधिक प्रतीत हुई है। विपक्ष का चेहरा जनता के सामने बेनकाब हुआ है, जो कुछ बाकी रहा है प्रधानमंत्री अविश्वास प्रस्ताव पर अपने वक्तव्य में उसे उघाड़ देंगे, इस नए गठबंधन की कथित एकजुटता की पोल भी खोल ही देंगे और उसकी आपसी खींचतान को भी उजागर कर ही देंगे। विपक्षी गठन इंडिया के गठन के बाद वे कितने राजनीतिक रूप से शक्तिशाली हुए हैं और प्रधानमंत्री को चुनौती देने की स्थिति कितने सक्षम बने हैं, इन स्थितियों का भी पदार्पाश होगा। बात जब तीर से निकली है तो दूर तक जायेगी, अविश्वास प्रस्ताव की बहस केवल मणिपुर तक सीमित नहीं रहने वाली, क्योंकि हालिया पंचायत चुनावों के दौरान बंगाल में जो भीषण हिंसा हुई, कोई भी उसकी अनदेखी नहीं कर सकता-मोदी सरकार तो बिल्कुल भी नहीं। यह सही है कि अविश्वास प्रस्ताव लाकर विपक्ष ने अपने इस उद्देश्य को हासिल कर लिया कि मणिपुर के मामले में प्रधानमंत्री को सदन में बोलना ही पड़ेगा, लेकिन उसने उन्हें अपनी राजनीतिक हठधर्मिता को बेनकाब करने का अवसर भी दे दिया है। एक तरह से विपक्ष ने अपने पांव पर खुद कुल्हाड़ी चला दी है।

यह पूरे देश की जनता को मालूम है कि इस अविश्वास प्रस्ताव से मोदी सरकार को कोई खतरा नहीं है क्योंकि इसके पास अपने बूते पर सदन में जबर्दस्त बहुमत है और 538 की वर्तमान सदस्य संख्या वाली लोकसभा में भाजपा व इसके सहयोगी दलों के 332 सांसद हैं जबकि इंडिया दलों के 142 व निरपेक्ष या संकट के समय मोदी सरकार का साथ देने वाले दलों के सदस्यों की संख्या 64 है। यह अविश्वास प्रस्ताव सांकेतिक है और इस बात का प्रयास है कि इसके माध्यम से विपक्षी गठबन्धन देश के लोगों के बीच अपने समर्थन में ह्यजन-अवधारणाह्ण का निर्माण कर सके। लेकिन विपक्षी दलों का यह न्यूसेंस भरा ध्येय अधूरा ही रहने वाला है। अविश्वास प्रस्ताव संसदीय लोकतन्त्र में प्रायः सरकारों के खिलाफ जन अवधारणा सृजित करने के लिए ही लाये जाते हैं क्योंकि भारत के संसदीय इतिहास में अब तक 28 अविश्वास प्रस्ताव प्रस्तुत किये गये, जिनमें केवल तीन बार ही सत्तारुढ़ सरकारें इनके माध्यम से सत्ता से बेदखल की गई हैं।

मोदी सरकार अपने इस कार्यकाल में पहली बार अविश्वास प्रस्ताव का सामना कर रही है, इसके पहले 2018 में भी मोदी सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया गया था, तब भी विपक्ष को पराजय का सामना करना पड़ा था और उस समय ही मोदी ने भविष्यवाणी करते हुए कहा था कि 2023 में फिर से अविश्वास प्रस्ताव लाने का आपको मौका मिले। मौका तो विपक्ष को मिल ही गया है, पिछली बार की तरह इस बार भी ऐसा ही सुनिश्चित सा दिख रहा है, कि प्रस्ताव औंधे मुंह गिरेगा। हालांकि लोकतंत्र के सर्वोच्च मंच संसद पर सत्ता पक्ष और विपक्ष की ऐसी रस्साकशी कोई नई बात नहीं है। इसे स्वस्थ लोकतंत्र का लक्षण भी कहा जा सकता है। लेकिन इस तरह की कवायद एवं मंथन से जनता के हित में कुछ निकलना चाहिए, वह निकलता हुआ दिख नहीं रहा है। मणिपुर में जिस तरह के दृश्य पिछले दिनों देखने को मिले, उसके मद्देनजर इस तरह की रस्साकशी की बजाय सार्थक बहस का माहौल बनाकर समस्या के समाधान का रास्ता निकला जाता तो वह आशा की किरण बनता। बेहतर तो यही होता कि विपक्ष और सरकार आपस में बातचीत से सहमति की कोई सूरत निकाल कर मणिपुर पर विस्तृत चर्चा कर लेते और इसके लिए अविश्वास प्रस्ताव की नौबत नहीं आती। अविश्वास प्रस्ताव से तीन बार ही सत्तारुढ़ सरकारें सत्ता से बेदखल की गई हैं। इनमें सभी सरकारें गठबंधनों की खिचड़ी सरकारें थीं और एक बार 1999 में तो अटल बिहारी वाजपेयी की साझा सरकार केवल एक वोट से ही गिर गई थी। जबकि इससे पहले 1990 में वीपी सिंह की ह्यदो खड़ाऊह्ण भाजपा व वामपंथियों के समर्थन पर खड़ी सरकार बुरी तरह लोकसभा में हार गई थी और 1997 में कांग्रेस के समर्थन पर टिकी देवेगौड़ा सरकार का हश्र भी ऐसा ही हुआ था। मगर मोदी सरकार में तो भाजपा के ही 301 सांसद हैं। अब जबकि अविश्वास प्रस्ताव पर बहस होना निश्चित हो गया है तो यह बहस लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित एवं सार्थक बहस हो। आदर्श मूल्यों की वाहक बने। मणिपुर जैसी जटिल समस्या के साथ अन्य समस्याओं के समाधान की प्रेरक बने। संविधान पक्ष एवं विपक्ष को केवल अधिकार नहीं देता, उनसे शुद्ध आचरण की अपेक्षा भी करता है। अब संसद में कामकाज सुचारू ढंग से शुरू हो, इसकी व्यवस्था होनी चाहिए मगर साथ ही ध्यान रखा जाना चाहिए कि उच्च सदनों में विपक्ष के नेताओं को भी अपनी बात रखने का समुचित अवसर सम्मानजनक तरीके से दिया जाये।

टमाटर ने ताव दिखाकर जो सबक दिया है क्या सरकार उससे कोई सीख लेगी?

लगभग हर साल अन्नदाता को रुलाने वाले टमाटर ने इस बार आम नागरिकों खासकर गृहणियों को बुरी तरह से झकझोर कर रख दिया है। अब तक अनुभव यही रहा है कि प्याज आम उपभोक्ताओं को रुलाता रहा है तो सरकार बनने-बनाने में भी प्याज की अहम भूमिका रही है। संभवतः यह पहला मौका होगा जब टमाटर ने भाव दिखाये हैं और यहां तक कि देश के अधिकांश हिस्सों में टमाटर के भाव डेढ़ सौ से दो सौ रुपए तक को छूने व कई स्थानों पर तो इससे अधिक आसमान छूने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। हालात यहां तक देखने को मिले हैं कि मण्डियों से टमाटर की चोरियों के समाचार मिले तो टमाटर की सुरक्षा के लिए बाउंसर्स की सेवाएं भी लेने के समाचार मीडिया की सुर्खियां बने हैं। हालांकि अब टमाटर के भावों में उतार का दौर शुरू हो गया है तो केन्द्र सरकार भी एनसीसीएफ और नेफैड के माध्यम से आगे आई है। हालांकि संभवतः अदरक के भाव भी चार सौ के आसपास जाने का यह पहला रिकॉर्ड होगा पर टमाटर ने सीधे-सीधे आम आदमी को प्रभावित किया है।

पिछले दिनों ब्रिटेन में एकाएक भाव बढ़ने वाली वस्तुओं को कुछ समय तक नहीं खरीदने की सलाह सरकार द्वारा जारी की गई पर मजे की बात यह है कि हमारे देश में हालिया एक सर्वे के अनुसार टमाटर द्वारा लाल-नीली आंखें दिखाने के बावजूद केवल 15 प्रतिशत लोगों ने टमाटर को कुछ समय के लिए रसोई से बाहर रखने यानी की नहीं खरीदने का निर्णय किया, वहीं 82 फीसदी लोगों ने भले ही महंगा रहा हो पर टमाटर की खरीद से परहेज नहीं किया।

दरअसल अब तक का अनुभव यह रहा है कि सीजन में एक समय ऐसा आता है जब टमाटर के मण्डियों में भाव लागत तो छोड़ो मण्डी में लाने ले जाने की लागत भी पड़ता नहीं खाती और हाईवे के किनारों पर टमाटर के ढेर के ढेर बिखरे हुए देखे जाते रहे हैं। हालांकि करीब करीब इस समय टमाटर के भाव बढ़ते हैं पर इतने अधिक भावों में तेजी पहले लगभग नहीं ही देखी गई है। वैसे तो टमाटर की खेती समूचे देश में होती है पर आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु, ओडिशा, गुजरात, पश्चिम बंगाल आदि प्रमुख टमाटर उत्पादक प्रदेश हैं। दुनिया में टमाटर के उत्पादन में चीन शीर्ष पर है और एक मोटे अनुमान के अनुसार चीन में टमाटर का 5 करोड़ 64 लाख टन से अधिक सालाना उत्पादन होता है। चीन के बाद भारत टमाटर का सबसे अधिक यानी की दूसरे नंबर का प्रमुख उत्पादक प्रदेश है। मोटे अनुमान के अनुसार देश में करीब 4 लाख टन टमाटर का सालाना उत्पादन होता है। यदि कुछ दिनों को छोड़ दिया जाए तो टमाटर के भावों को लेकर इतनी मारामारी नहीं रहती है। पर इस साल तो टमाटर ने सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं।

टमाटर दक्षिण अमेरिका के एण्डीज और मैक्सिको से स्पेनिस कॉलोनीज होते हुए दुनिया के देशों में पहुंचा है। बदलते समय में कम से कम हमारे देश में छाछ, केरी, अमचूर, काचरी आदि परंपरागत खटाई की जगह सभी सब्जियों में टमाटर ने बना ली है। टमाटर के बिना सब्जी के स्वाद की कल्पना लगभग नहीं के बराबर रह गई है तो दूसरी और टमाटर केचअप, प्यूरी और शॉश का अपना बड़ा बाजार विकसित हो चुका है। दरअसल औषधीय गुण के कारण भी टमाटर की मांग बढ़ी है। टमाटर में विटामिन सी, बी, के के साथ ही कोलिन आदि प्रचुर मात्रा में है। इसलिए स्वास्थ्य की दृष्टि से भी टमाटर की अपनी अहमियत है। प्याज-टमाटर ऐसे हैं जो आलू आदि दूसरी सब्जियों के साथ तो काम आते ही हैं, केवल और केवल टमाटर और प्याज ही ऐसे हैं जो

गरीब से गरीब की थाली में लगावन का काम करता है तो अमीर से अमीर की रसोई भी इनके बिना अधूरी है। ऐसे में टमाटर के भाव आसमान छूने से सीधे सीधे आम आदमी का प्रभावित होना स्वाभाविक है।

अब सवाल दो टके का यह हो जाता है कि ऐसी सरकारों की क्या बाध्यताएं होती हैं कि एकाएक भाव बढ़ने पर आम नागरिकों को भगवान के भरोसे छोड़कर किनारे हो जाती है। हालांकि लाख उत्पादन बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हों पर अभी भी देश में फसलोत्तर आधारभूत संरचनाओं की कमी बरकरार है। यही कारण है कि किसानों को मजबूरन अपने उत्पाद को सड़क के हवाले करना पड़ता है। हर हालात में फायदा होता है तो केवल और केवल बिचौलियों को होता है। पहले कृत्रिम अभाव पैदा किया जाता है और फिर कोल्ड स्टोरेज से थोड़ी मात्रा में बाजार में लाया जाता है ताकि ज्यों ज्यों भाव बढ़ते जाएं त्यों त्यों इनका मुनाफा बढ़ता जाए और आम आदमी पिसता चला जाए। आखिर ऐसा क्यों होता है? यह इसलिए भी जरूरी हो जाता है कि सरकार की बाजार पर निगरानी रखने वाली टीम आखिर क्या करती रहती है। सरकार के पास बुवाई से लेकर उत्पादन तक के आंकड़े रहते ही हैं, इसके साथ ही कोल्ड स्टोरेज में जमा की भी जानकारी रहती है। फिर ऐसे कौन से कारण होते हैं कि एक समय खुदरा में दस से बीस रुपए किलो बिकने वाला टमाटर दो सौ के आंकड़े को छू जाता है। यह टमाटर ही नहीं आलू, प्याज, लहसुन आदि सभी पर लागू होता है। अब तो सरकार द्वारा बागवानी फसलों के लिए रेल भी चला दी गयी है। इससे बागवानी फसलों को एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाना आसान हुआ है। पर अभी इस दिशा में बहुत कुछ किया जाना है। कोल्ड स्टोरेज की चेन बनानी होगी तो वातानुकूलित कंटेनरों की व्यवस्था भी सरकार को करनी होगी।

टमाटर के भावों में तेजी के साथ ही एक बात साफ हो गई है कि सरकार का कहीं ना कहीं बाजार निगरानी तंत्र कमजोर है। पूरे देश में टमाटर के भावों को लेकर हाहाकार मचा तब जाकर नेफैड और एनसीसीएफ की नींद खुली, नहीं तो बाजार आकलन के अनुसार पहले ही इन्हें सतर्क हो जाना चाहिए था। बाजार हस्तक्षेप पहली आवश्यकता है। उत्पादक किसान और उपभोक्ता आम आदमी दोनों के ही हितों की रक्षा करना जरूरी हो जाता है। दूसरे ऐसी परिस्थितियों में सरकार की उपस्थिति मात्र से ही हालात में सुधार होने लगते हैं। साफ है सरकार के 80 रुपए किलो टमाटर उपलब्ध कराने के दूसरे दिन से ही कौन-सा कमाल हो गया कि टमाटर के मण्डियों में भाव नीचे आ गए। इसलिए समय रहते बाजार हस्तक्षेप जरूरी हो जाता है। अन्यथा कालाबाजारी और जमाखोरी को बढ़ावा मिलता है और उत्पादक और उपभोक्ता दोनों ही पिसते हैं। सरकार की बदनामी का कारण बनता है वह अलग। इसलिए एक प्रोएक्टिव टीम होनी चाहिए जो बाजार के हालातों पर नजर रखे और अप्रत्याशित होने से पहले ही बाजार के हालातों को नियंत्रण में ले सके ताकि आम नागरिक जमाखोरों के चंगुल में ना आ सकें। दरअसल मार्केट इंटरवेंशन के लिए सरकार समय पर सक्रिय हो जाए तो मुनाफाखोरों और जमाखोरों को आसानी से सबक सिखाया जा सकता है वहीं आम नागरिकों को भी समय पर राहत मिल सकती है। इसके लिए मार्केट इंटरवेंशन की सख्त नीति के साथ ही बाजार की मांग के अनुसार समय पर फैसले लेने होंगे ताकि बाजार पर मुनाफाखोरों और जमाखोरों का नियंत्रण नहीं हो सके।

-डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

आज की राजनीति में नैतिकता और मयार्दा को त्यागने वाले ही सफल हो पा रहे हैं

भारत के सन्दर्भ में न्यूजीलैंड में मंत्री के इस्तीफे का यह उदाहरण इतना ही बताने के लिए काफी है कि कानून-कायदे सख्त हों इससे ज्यादा जरूरी यह है कि कानून सबके लिए समान भी हों। अपराध या गलती होने पर राजनेता पहले उदाहरण प्रस्तुत करते हुए अपने पद को त्यागे। यह एक अवसर है कि न्यूजीलैंड से मिली नसीहत और नैतिकता के मापदण्डों पर भारत के राजनेता एवं सत्ता पर बैठे लोगों के लिये खरा उतरने की प्रेरणा लेने का। लेकिन ऐसा न होना एक गंभीर स्थिति है। मणिपुर में 4 मई का एक वीडियो वायरल हुआ, जिसमें कुकी समुदाय की महिलाओं को मैतेई समुदाय के पुरुषों के एक समूह ने नग्न परेड कराया और उनके साथ दरिंदगी की। मणिपुर की घटना पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि दो महिलाओं को नग्न घुमाने की घटना ने 140 करोड़ भारतीयों को शर्मसार किया है, लेकिन प्रश्न है कि वहां के मुख्यमंत्री ने इसकी जिम्मेदारी लेते हुए अपने पद को त्यागने का उदाहरण क्यों नहीं प्रस्तुत किया।

इससे पूर्व लम्बे समय तक बृजभूषण शरण सिंह पर महिला पहलवानों से लगातार यौन उत्पीडन के आरोप लगते रहे, प्रदर्शन होते रहे, उन्होंने सचाई सामने आने तक अपने पद से त्यागपत्र क्यों नहीं दिया। जबकि उन पर भारतीय दंड संहिता की धारा 506 (आपराधिक धमकी), 354 (महिला की शीलता भंग करना), 354-ए (यौन उत्पीड़न) और 354-डी (पीछा करना) के तहत आरोप तय हो गए हैं। इससे पूर्व लखीमपुर खिरी में जिस क्रूर तरीके से मंत्री के बेटे ने हिंसक घटना को अंजाम दिया गया, उसकी वीडियो भी वायरल हुई। इसके बावजूद सम्बन्धित मंत्री महोदय से न तो इस्तीफा लिया गया,

न एक जिम्मेदार पद पर होने की नैतिकता के निर्वहन के लिए इस मामले में न्याय होने तक स्वयं इस्तीफे की कोई पेशकश की गई।

वर्तमान दौर पर निगाह डालें तो राजनीति में संवेदना, मयार्दा और नैतिकता लगातार छिजती जा रही है। जो न केवल राजनीति पर ही सवाल खड़ा नहीं करती, बल्कि मानवीय संवेदना को भी कठघरे में लाती है। अभी तक अमीर बापों की नशे में धुत संतानों द्वारा गरीब लोगों को कुचलकर मार डालने के मामले ही सामने आते रहे हैं। लेकिन जब कभी समाज में अमीर और रसूखदार लोगों द्वारा जघन्य अपराध किये गये, तो पूरे समाज ने विरोध में उतरकर अपने सभ्य होने का प्रमाण दिया। नैना साहनी तंदूर हत्याकांड हो या नितीश कटारा मर्डर केस या निर्भया का मामला, इन मामलों पर पूरे समाज ने एकजुटता दिखाई, लेकिन लखीमपुर खीरी, बृजभूषण की घटना हमें सोचने के लिए मजबूर करती है कि मानवीय संवेदना का स्तर लगातार कम होता जा रहा है या हम एक निष्ठुर और असंवेदनशील समाज होने की दिशा में तेजी से बढ़ रहे हैं?

राजनीति में अनैतिकता तरह-तरह से पांव पसार रही है। दलबदल, नेताओं पर बदले की भावना से हो रही कार्रवाइयां भी अनैतिकता के ही उदाहरण हैं। शरद पवार के भतीजे अजित पवार के नेतृत्व में राकांपा के विधायकों द्वारा दल-बदल कर पिछले दिनों शिंदे की शिवसेना-भाजपा सरकार के साथ जाने से इस बात का पदार्फाश हो गया है कि जो नेता चाहते हैं, वे खुद को सबसे ऊंची बोली लगाने वाले को बेच देते हैं और यह सब काम बड़ी सटीकता से किया जाता है तथा इसमें मनों का मेल, विचारधारा, सिद्धान्त, नैतिकता या व्यक्तिगत पसंद आदि जैसे कोई बहाने नहीं बनाए जाते। नैतिकता एवं मूल्यों की वकालत करने वाली भारतीय जनता पार्टी भी राजनीतिक जोड़तोड़ के लिये मूल्यों से मुंह फेरने लगी है एवं स्मार्ट राजनीतिक प्रबंधन के लिए जानी जाती है। प्रलोभन तथा धमकाने के लिए राज्य तंत्र एवं सरकारी एजेंसियों का इस्तेमाल कर उसने भी नैतिकता को ताक पर ही रखा है।

राजनीति में सब एक ही थाली के चट्टे-बट्टे हैं और मयार्दा के हमाम में सब नंगे हैं- यह राजनीतक का एक कटू सच है। बिहार के नीतीश कुमार, पिछले वर्ष अगस्त तक जब जद (यू) ने पाला नहीं बदला था, वह मोदी का गुणगान कर रहे थे, किंतु अपने मित्र से दुश्मन और दुश्मन से मित्र बने लालू की राजद के साथ सरकार बनाने से उनका रुख बदल गया है। ऐसा लगता है राजनीति में अब नैतिकता भी जीना सीख गई है। वह आधुनिक ख्यालों में पूरी तरह स्वतंत्र, मयार्दा एवं नैतिकताविहीन विचारधारा की हो गयी है। सारे राजनेता राजनीतिक दलों के नंगे बदन को देखकर भी विचलित नहीं होते, फिर भी आम लोग या फटे कपड़ों से ढके भूखे लोगों को आशा हैं कि राजनीति की नैतिकता किसी तरह पूरी तरह ढक जाए।

लाल बहादुर शास्त्री एवं अटल बिहारी वाजपेयी की उच्च राजनीतिक परम्पराओं वाले देश में अपनी जिम्मेदारी को तय करते हुए स्वयं इस्तीफे की उम्मीद तो खैर आज के इस दौर में बेमानी ही समझनी चाहिए, क्योंकि यह वह दौर नहीं है, जब राजनेता अपने विभाग से सम्बन्धित किसी और की गलती पर भी इस्तीफा दे दिया करते थे या एक मत के लिये सरकार को गिरने देते हैं। खुद को कानून से ऊपर समझने की फितरत रखने वाले भारतीय राजनेताओं एवं मंत्रियों के लिए छोटे से देश न्यूजीलैंड से आई खबर निश्चित ही अनुकरणीय है। प्रश्न है कि न्यूजीलैंड की तरह हमारा देश कानून का सख्ती से पालन एवं नैतिक निष्ठा दिखाने में कब तक निस्तेज बना रहेगा? न्यूजीलैंड में न केवल कानून सख्त हैं बल्कि नैतिकता और मयार्दा के मामले में राजनेता दूसरे देशों के मुकाबले कहीं ज्यादा सतर्क हैं। वहां की न्याय मंत्री को छोटी-सी घटना पर न केवल तीन-चार घंटे पुलिस स्टेशन में भी रहना पड़ा था बल्कि इस्तीफा भी देना पड़ा। वहां के प्रधानमंत्री ने न्याय मंत्री का इस्तीफा स्वीकार भी कर लिया है। नजीर पेश करने का यह न्यूजीलैंड में कोई अकेला उदाहरण नहीं है। इस साल के शुरू में ही वहां की तत्कालीन पीएम जेसिंडा अर्डर्न ने यह कहते हुए पद से इस्तीफे का ऐलान कर दिया था कि अब उनके पास काम करने के लिए ऊर्जा नहीं बची है। दुनिया की सबसे कम उम्र में महिला प्रधानमंत्री बनने वाली जेसिंडा ने न केवल कोरोना महामारी बल्कि अपने देश में आतंकी हमलों का बहादुरी से मुकाबला किया था। भारत जैसे देश के लिए तो ये ज्यादा सीख देने वाली हैं जहां कुर्सी पर बैठे लोगों के लिए न कानून कोई मायने रखता है और न ही नियम-कायदे। मामूली सड़क हादसों में हर कोई पहुंच की धौंस देता नजर आता है। नैतिकता की बातें तो हमारे यहां सिर्फ राजनीतिक दलों के चुनाव घोषणा पत्रों में ही नजर आती हैं। इतना ही नहीं, बड़े-बड़े घोटालों में नाम आने पर भी राजनेता सत्ता का रौब दिखाने से नहीं चूकते। ऐसा नहीं है कि हमारे यहां राजनेता नैतिकता के आदर्श स्थापित करने वाले नहीं रहे।

-ललित गर्ग

राहुल ने जो अमेठी सीट गँवाई थी, उसे कांग्रेस की झोली में वापस डालने के लिए खुद लड़ सकती हैं प्रियंका

उत्तर प्रदेश कांग्रेस के लिए बंजर मरुस्थल बन गया है। अब यहां ना कांग्रेस की सीटें आती हैं, ना वोट मिलता है। स्थिति यह है कि कांग्रेस यूपी में सोनिया गांधी की एक मात्र रायबरेली संसदीय पर सिमट गई है। कहने को तो गांधी परिवार से ताल्लुक रखने वाली मेनका गांधी और वरूण गांधी भी यूपी से सांसद हैं, लेकिन वह कांग्रेस की जगह भारतीय जनता पार्टी से चुने गए हैं। कांग्रेस से यूपी दूर हुआ तो दिल्ली भी दूर होते देरी नहीं लगी। कभी कांग्रेस का मजबूत वोट बैंक समझा जाने वाले दलित-अगड़े-पिछड़े और मुसलमान वोटर भाजपा और क्षेत्रीय दलों सपा-बसपा के बीच बंट गए हैं। इसी के साथ गांधी परिवार के लिए यूपी गले की फांस बन गया है ना वह इसे निगल पा रही है ना ही उगलते बन रहा है। वैसे कुछ लोग यह भी कहते हैं यूपी में जिस कांग्रेस को राहुल गांधी ने डुबोया है, उसे प्रियंका गांधी फिर से जीवनदान देंगी। सवाल कैसे तो, कहा जा रहा है कि समाजवादी पार्टी से गले मिलकर। समाजवादी पार्टी और कांग्रेस एक ही गठबंधन का हिस्सा हो गए हैं और अगले वर्ष होने वाला लोकसभा चुनाव मिलकर लड़ेंगे, इससे कांग्रेस को अच्छा खासा फायदा हो सकता है। कांग्रेस जो रायबरेली तक सिमट गई है, वह एक बार फिर अमेठी को जीतना चाहती है। 2019 के लोकसभा चुनाव में राहुल गांधी यहां से बीजेपी प्रत्याशी स्मृति ईरानी से चुनाव हार गए थे।कांग्रेस करीब तीन दशकों से यूपी में उभार की उम्मीद लगाए बैठी है, लेकिन उसके हालात सुधरने की बजाए बिगड़ते जा रहे हैं। आज की तारीख में तो न उसके पास संगठन बचा है और न नेता एवं वोटर। इसके लिए कौन जिम्मेदार है की बात चलती है तो गांधी परिवार ही कुसूरवार लगता है, लेकिन यह बात कहने की हिम्मत पार्टी का कोई छोटा या बड़ा नेता कभी जुटा नहीं पाया। यही वजह है कि कांग्रेस यूपी में गर्दिश में चली गई है। अब कहा जा रहा है कि कांग्रेस के गर्दिश के दिनों को कांग्रेस की महासचिव प्रियंका वाड्रा गांधी दूर करेंगी। कांग्रेसी कह रहे हैं कि भले ही 2022 के विधान सभा चुनाव में यूपी की प्रभारी रहते हुए प्रियंका वाड्रा कुछ खास नहीं कर पाई हों, लेकिन अब हालात बदल गए हैं। प्रियंका ने जिस तरह से कांग्रेस को कर्नाटक और हिमाचल प्रदेश में सत्ता दिलाई है, वैसे ही यूपी से दिल्ली के लिए भी वह रास्ता बनायेंगी। उत्तर प्रदेश की सियासी नब्ज पर नजर रखने वाले कहते हैं कि प्रियंका के प्रति जनता में आकर्षण है। वह हिमाचल, कर्नाटक के बाद मध्य प्रदेश में सक्रिय हैं। जहां भी प्रियंका की जनसभा होती है, लोग उनकी बात को गौर से सुनते हैं। ऐसे में प्रियंका के जरिए पार्टी उत्तर प्रदेश में फिर से खुद को खड़ा कर सकती है। पिछले दिनों प्रियंका ने कहा भी था कि राष्ट्रीय अध्यक्ष का आदेश होगा तो वह अमेठी या कहीं से भी चुनाव लड़ेंगी। प्रियंका अभी चुनावी राज्यों में निरंतर सक्रिय हैं। उम्मीद है कि देर सबेर वह उत्तर प्रदेश में सक्रियता बढ़ाएंगी। लोग प्रियंका गांधी के अंदर उनकी दादी की छवि देखते हैं। उनकी सिर्फ शक्ल ही अपनी दादी से नहीं मिलती बल्कि उनके काम करने का अंदाज भी कुछ वैसा ही है, कांग्रेस की स्टार प्रचारक प्रियंका गांधी उत्तर प्रदेश से लोकसभा के सियासी संग्राम में उतर सकती हैं। जबकि कांग्रेस की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी के रायबरेली से चुनाव लड़ने की संभावना अभी खत्म नहीं हुई है। प्रदेश कांग्रेस कमेटी रायबरेली व अमेठी में पूरी शिद्दत से जुट गई हैं। गांधी परिवार के लिए अन्य संभावित सीटों पर भी गुणा-गणित शुरू हो गया है।

यूपी में दल बदल के खेल में सबसे बड़ा फायदा भाजपा को हो रहा है, नुकसान बहनजी को उठाना पड़ रहा है

अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव से पहले तमाम दलों में भगदड़ जैसी स्थिति नजर आ रही है। इस भगदड़ में बीजेपी की बल्ले-बल्ले हो रही है, वहीं सपा-बसपा और कांग्रेस की स्थिति दयनीय नजर आ रही है। दल-बदल के खेल में बहुजन समाज पार्टी को काफी नुकसान उठाना पड़ा है। इसी कड़ी में आगरा से बसपा के दो बड़े नेताओं ने पार्टी का साथ छोड़ दिया है। दोनों नेताओं ने लखनऊ में भाजपा की सदस्यता ग्रहण भी ग्रहण कर ली है।

आगरा में दक्षिण विधानसभा से बसपा के टिकट पर चुनाव लड़ने वाले रवि भारद्वाज और बसपा से खेरागढ़ से चुनाव लड़ने वाले गंगाधर कुशवाहा ने लखनऊ में भाजपा की सदस्यता ग्रहण कर ली है। इस खबर के मिलते ही बसपा के खेमे में हलचल मची हुई है। लखनऊ में भाजपा के प्रदेश कार्यालय पर प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी, डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक और केशव मौर्य ने बसपा के रवि भारद्वाज और गंगाधर कुशवाहा को पार्टी की सदस्यता दिलाई गई। बता दें कि 2022 में दक्षिण विधानसभा सीट से रवि भारद्वाज ने बसपा के टिकट पर चुनाव लड़ा था। वो यहां पर भाजपा के कैबिनेट मंत्री योगेंद्र उपाध्याय के खिलाफ चुनाव मैदान में थे। वहीं, खेरागढ़ से चुनाव लड़ने वाले गंगाधर कुशवाह ने भी हाथी से उतर कर भाजपा का दामन थाम लिया है। गंगाधर कुशवाहा बसपा में लंबे समय से सक्रिय थे। वो जिलाध्यक्ष भी रह चुके हैं। माना जा रहा है कि आने वाले समय में और कई नेता भी भाजपा का दामन थाम सकते हैं। इससे पूर्व समाजवादी पार्टी के भी कई नेता पाला बदलकर भगवा रंग में रंग चुके हैं।

राजनीतिक जानकार बताते हैं कि लोकसभा चुनाव में हारी 14 सीटों के इतर भी भाजपा रेड जोन की सीटें झटकना चाहती है। इसीलिए विरोधी खेमे के मजबूत पिलर को अपने पाले में लाकर जातीय समीकरण को दुरुस्त करने पर काम कर रही है। भाजपा के एक वरिष्ठ नेता ने बताया कि पूर्व मंत्री दारा सिंह चौहान और सुभासपा अध्यक्ष ओम प्रकाश राजभर को साधने के बाद विपक्षी दलों के कई चेहरों को अपने पाले में लाना पार्टी की इसी रणनीति का हिस्सा है। उन्होंने बताया कि 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने 80 में से 62 और उसके सहयोगी अपना दल (एस) ने मिजार्पुर और राबर्ट्सगंज की दो लोकसभा सीटें जीती थीं। बाकी 16 सीटें बसपा, सपा और कांग्रेस के खाते में गई थीं। उपचुनाव में भाजपा ने आजमगढ़ और रामपुर लोकसभा सीटें सपा से छीन ली थीं। 14 सीटें अब भी पार्टी के कब्जे से बाहर हैं, जिनमें बिजनौर, नगीना, सहारनपुर, अमरोहा, संभल, मुरादाबाद, मैनपुरी, रायबरेली, अंबेडकरनगर, श्रावस्ती, गाजीपुर, घोसी, जौनपुर और लालगंज शामिल हैं।

दुष्कर्म मामले में आज हो सकता है खुलासा

पीड़िता के घर में पुलिस बल तैनात

अखंड भारत संदेश
मानिकपुर/चित्रकूट। तीन दिन पहले हाईस्कूल की छात्रा ने कॉलेज के प्रिंसिपल समेत चार शिक्षकों के खिलाफ पांच माह के अंतराल में दबाव बनाकर कॉलेज परिसर में ही कई बार दुष्कर्म करने के आरोप लगाए हैं। इस मामले में पुलिस ने एक शिक्षक इरशाद के खिलाफ दुष्कर्म का मामला भी दर्ज किया है।

रविवार को एसपी वृंदा शुक्ला ने मामले की जांच के लिए एसआईटी गठित की है। इस टीम ने सभी संभावित स्थलों के सीसीटीवी फुटेज, मोबाइल कॉल डिटेल, संबंधितों व उनके सहयोगियों से पूंछताछ कर रिपोर्ट तैयार की है। एसआईटी व क्राइम ब्रांच की टीम पीड़िता के घर पहुंची और कई सबूतों का मिलान किया। फुटेज आदि दिखाकर जानकारी ली। इसी बीच चर्चा रही कि पीड़िता ने क्षुब्ध होकर घर के अंदर ही हाथ की नस काटकर खुदकुशी का प्रयास किया है। इस संबध में एसपी वृंदा शुक्ला ने बताया कि यह अफवाह है। सुरक्षा के लिए पीड़िता के घर में पुलिस बल तैनात है। पीड़िता पूरी तरह सुरक्षित है।

उधर, जांच टीम ने कई सबूतों के मिलान के लिए पीड़िता के रिश्तेदार ममेरे भाई को पूंछताछ के लिए उठाया है। गौरतलब है कि इसका नाम पहले ही दिन से संदेह के घेरे में था। मोबाइल से कई घंटे देर रात तक बातचीत होना व कई अन्य कारण सामने आए हैं। पुलिस की इस कार्रवाई का माता

पिता ने विरोध जताया। कहा कि जिनका नाम लिया जा रहा है पुलिस उनको नहीं पकड़ रही है। दुष्कर्म पीडिता हाईस्कूल की छात्रा के परिवार से सामाजवादी पार्टी प्रतिनिधि मंडल ने मुलाकात की। पूर्व सांसद बालकुमार पटेल, पूर्व विधायक वीर सिंह पटेल, जिलाध्यक्ष शिवशंकर यादव, महासचिव सत्य नारायण पटेल, उपाध्यक्ष गुलाब खान ने पीड़िता को न्याय का भरोसा दिलाया। आगामी एक अगस्त को पीड़िता से सपा मुखिया अखिलेश यादव के निर्देश पर प्रतिनिधि मण्डल मुलाकात करेगा। इस दौरान कोषाध्यक्ष राजा यादव, जिला सचिव अभिलाष यादव, विधानसभा अध्यक्ष श्याम बिहारी यादव मौजूद रहे।

बिना तैयारी बैठक में पहुंचे महिला अस्पताल के सीएमएस पर बिफरे डीएम

अयोध्या। जिलाधिकारी नितीश कुमार की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में रोगी कल्याण समिति की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक प्रभारी सी.एम.एस. जिला महिला चिकित्सालय डा. आशाराम को बिना तैयारी किये बैठक में आने पर जिलाधिकारी ने कड़ी नाराजगी व्यक्त की तथा भविष्य में पूर्ण तैयारी के साथ सीएमएस को बैठक में आने हेतु निर्देशित किया। उन्होंने चिकित्सालयों में नियमित सफाई व्यवस्था सुनिश्चित रखने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि हास्पिटल मैनेजर चिकित्सालय में सम्बंधित एजेंसी के माध्यम से सफाई एवं अन्य सभी व्यवस्थायें बेहतर रखें। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने मुख्य विकास अधिकारी को जिला महिला चिकित्सालय में उपलब्ध समस्त सुविधाओं एवं उपकरणों के उपयोग की स्थिति, कायाकल्प योजना के कार्यो, आयुष्मान भारत योजना के फण्ड के उपयोग की स्थिति तथा चिकित्सालय में जो व्यवस्थायें वे किस प्रकार कार्य कर रही है।

गंदगी से बजबजा रही नालियां, सड़कों पर दिख रही गंदगी

मानिकपुर में सफाई व्यवस्था धड़ाम

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। नगर पंचायत मानिकपुर मे सफाई व्यवस्था धड़ाम हो चुकी है। सिर्फ कागजों पर ही सीमित हुआ स्वच्छ मानिकपुर सुंदर मानिकपुर। ये तस्वीर भी नगर पंचायत क्षेत्र के गोविन्दनगर मुहल्ले के टिकुरा कोलान की हैं। यहां रहने वाले पूर्व सभासद फूलचन्द कोल, मनोज कुमार, प्यारेलाल, राजकुमार, राजा ने बताया कि इस सड़क पर सालों से झाड़ू नहीं लगा। हम लोग खुद सड़क मे सफाई करते हैं।

रविवार को मोहल्लेवासियों ने बताया कि नालियां गंदगी से बजबजा रही हैं। मच्छरों एवं अन्य संक्रमित बीमारियों के कारण परिवार परेशान हैं। कई बार सभासद समेत मोहल्लेवासी नगर

पंचायत कार्यालय को भी नालियों की सफाई एवं सड़क पर झाड़ू लगाने के लिए कहा है, लेकि कभी भी सफाई नहीं होती है। नालियां और सड़क गंदगी के कारण एक हो गई हैं। लोगों को कीचड़ से निकलने की मजबूरी है।

नगर पंचायत में सफाई कर्मचारियों के नाम पर हर महीने कई लाख रुपये वेतन के नाम पर दिये जा रहे हैं। सफाई व्यवस्था की हालत बहुत खराब है। लोगों ने यही कहा है कि सफाई व्यवस्था सिर्फ कागजों पर ही सीमित है। स्वच्छ मानिकपुर सुंदर मानिकपुर का नारा और सफाई अभियान हवा हवाई है। पूर्व सभासद समेत मोहल्ले वासियों ने जिम्मेदार अधिकारियों से सफाई व्यवस्था सही करवाने की मांग की है। सफाई व्यवस्था के लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

संदिग्ध हाल में किशोरी व युवती लापता

अयोध्या। नगर कोतवाली क्षेत्र से एक किशोरी संदिग्ध हाल में लापता हो गई।परिवार की शिकायत पर नगर कोतवाली पुलिस ने केस दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है। मोदहा क्षेत्र निवासी पीड़ित पिता का कहना है कि उनकी 16 वर्षीय लड़की सिविल लाइन मोदहा निवासी एक शख्स के यहां खाना बनाने का काम करती है। सुबह वह खाना बनाने के लिए जाने की बात कह कर घर से निकली थी, लेकिन फोन आया तो पता चला कि वह खाना बनाने नहीं पहुंची है। उसका मोबाइल भी स्विच ऑफ बता रहा है। वहीं कोतवाली क्षेत्र के ही बेनीगंज इलाके से एक 20 वर्षीय युवती अपने घर से कहीं चली गई। परिवार ने खोजबीन की तो युवती का मोबाइल स्विच ऑफ मिला। शिकायत पर दोनों मामलों में पुलिस ने केस दर्ज कर तलाश शुरू कर दी है।

बाइक चोरी की रिपोर्ट

अयोध्या। नगर कोतवाली के साहबगंज निवासी विष्णु गुप्ता पुत्र पाटनदीन ने बाइक चोरी की रिपोर्ट दर्ज कराई है। शिकायत में पीड़ित का कहना है कि 4 मई की रात किसी ने उसके घर के सामने खड़ी बाइक यूपी 42 वी 4438 पर हाथ साफ कर दिया। मामले में ऑनलाइन शिकायत दर्ज कराई थी। खोजबीन और तलाश के लिए कोतवाली पुलिस को शिकायत दी है। शिकायत पर पुलिस में अज्ञात के खिलाफ केस दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है।

हादसे में शिक्षक बाल-बाल बचे, कार हुई क्षतिग्रस्त

बीकापुर-अयोध्या। विद्यालय जा रहे परिषदीय विद्यालय के सहायक अध्यापक एक हादसे में बाल बाल बच गए। बीकापुर शिक्षा क्षेत्र के कम्पोजिट विद्यालय कोंछा के सहायक अध्यापक आदर्श तिवारी शनिवार सुबह प्रधानमंत्री का लाइव प्रसारण संबोधन सुनने के लिए अपने घर सूरा सराय बीकापुर से विद्यालय जा रहे थे। रास्ते में बीकापुर बाजार के दक्षिणी छोर पर स्थित पेट्रोल पंप के पास प्रयागराज हाईवे पर जब उनकी कार पहुंची तो अचानक ऊपर से जंगली शीशम की डाल कार पर गिर गई। जिससे कार क्षतिग्रस्त हो गई। सहायक अध्यापक आदर्श तिवारी हादसे का शिकार होने से बाल-बाल बच गए। उन्होंने बताया की वन विभाग की लापरवाही के चलते इस प्रकार के हादसे राष्ट्रीय राजमार्ग पर होते हैं जो आम जनमानस के लिए परेशानी का कारण बनते हैं।

यमुना नदी के किनारे के दुर्गम इलाके में महिला पुलिस टीम ने चलाया जागरूकअभियान

कालपी(जालौन)। महिलाओं की सुरक्षा एंव कानूनी जानकारियों तथा अधिकारो से जागरूक कराने के लिए कालपी कोतवाली की महिला सब इंस्पेक्टर संजना सिंह के नेतृत्व मे महिला सिपाहियों की टीम द्वारा विद्यालयों तथा घर घर जाकर मिशन दीदी अभियान चलाया तथा महिलाओं को जागरूक किया। महिला सब इंस्पेक्टर ने बेटियों को शिक्षित कराने और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

यमुना बीहड पट्टी के गाँव शेखपुर गुढा पहुंची और महिलाओं बेटियों को जागरूक किया।श्रीमती पंचवती राजबहादुर इंटर कॉलेज के परिसर मे आयोजित कार्यक्रम में छात्राओ के बीच महिला सब इंस्पेक्टर संजना सिंह ने कहा कि जब कोई समस्या हो तो महिला हैल्पलाइन 1076 ,1090,112,1098,181,108,102 को डायल करने की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि अब वह दिन नहीं है जो डरवश लड़कियां पढ़ने नहीं जा पाती थी। अब सरकार ने खास कर महिलाओं की सुरक्षा हेतु विविध कारगर कदम उठाए हैं। सभी महिलाओ तथा छात्राओ को इसका लाभ लेना चाहिए यदि कही पर जरा सी असुरक्षा महसूस हो तत्काल फोन महिला हैल्पलाइन में फोन करो और पुलिस आपके पास आ जायेगी।

गंदगी फैलाने वालों पर हो कार्रवाई: कमलाकान्त

स्वच्छता अभियान का 80वां दिन

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। जिलाधिकारी श्रीमती वृन्दा शुक्ला की प्रेरणा से स्वच्छ भारत मिशन के तहत कामतानाथ परिक्रमा में 80वें दिन अभियान चलाया गया। कामदगिरि स्वच्छता समिति नगर पालिका अधिशासी अधिकारी लालजी यादव ने बताया कि स्वच्छता का उद्देश्य केवल आसपास की सफाई करना नहीं है, बल्कि लोगों की सहायता कर स्वच्छता को प्रेरित करना भी है। रविवार को कामदगिरि स्वच्छता समिति के अध्यक्ष राकेश केसरवानी ने बताया कि स्वच्छता में सभी का सहयोग जरूरी है। जिलाधिकारी से मांग किया कि मप्र

के हिस्से में ठेला वाले अनियंत्रित हैं। सबसे बड़ा गंदगी का कारण परिक्रमा में यही हैं। इनके कारण जानवर अत्यधिक मात्रा में परिक्रमा में मौजूद रहता है। उप जिलाधिकारी की अगुवाई में एक कमेटी बनाई जाए। नगर पंचायत पुलिस विभाग उस कमेटी में सभी को रखा जाए।

चित्रकूट के साधु-संतों का भी सहयोग लिया जाए। कामतानाथ परिक्रमा का पथ कैसे सुंदर हो इस पर जरूर विचार हो। गंदगी फैलाने वालों पर कड़ी से कड़ी कार्रवाई हो। सभी का प्रयास हो कि चित्रकूट का परिक्रमा स्वच्छ और सुंदर हो। खाद एवं सफाई निरीक्षक कमलाकांत शुक्ला ने बताया कि स्वच्छता के जरिए ही खुद को स्वस्थ रख सकते हैं। स्वच्छ भारत मिशन के जिला समन्वयक शिव कुमार ने बताया कि हमे आसपास सफाई रखनी चाहिए और बच्चों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करना चाहिए। इस मौके पर जितेंद्र केसरवानी, शुभम केसरवानी, कृष्णा शुक्ला, राजेंद्र त्रिपाठी, अंकुर केसरवानी, जानकी कुशवाहा, विनोद कुमार, मिथिलेश कुमार, राजेंद्र गुप्ता, पप्पू व नगर पालिका की टीम मौजूद रही।

स्वर्णिमा एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स से सम्मानित

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। जज्बा हो जब आसमा छूने का तो हौसला खुद-ब-खुद आ जाता है। जिले के मैनहाई माफी गांव की चार वर्षीय स्वर्णिमा ने अपना नाम रोशन कर दिया है। उसे एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स की ओर से सम्मानित किया गया है। ये ऐसा मंच है, जहां इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, वियतनाम बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, इंडो-चाइना बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, लाओस बुक ऑफ रिकॉर्ड्स और नेपाल बुक समेत प्रमुख राष्ट्रीय बुक ऑफ रिकॉर्ड्स के रिकॉर्ड धारक मौजूद हैं। यह वर्ल्ड रिकॉर्ड यूनिवर्सिटी से भी संबद्ध है। स्वर्णिमा के पिता धर्मराज सिंह ने बताया कि स्वर्णिमा को अभी कुछ दिन पहले इंडिया बुक रिकॉर्ड्स के खिताब से नवाजा गया था। उन्होंने कहा कि बेटी स्वर्णिमा का नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हो। स्वर्णिमा से पूंछने पर उन्होंने बताया कि वह पढ़-लिखकर आईएएस बनना चाहती हैं। स्वर्णिमा के स्वर्णिम भविष्य की कामना करते हैं। प्रदेश सरकार व जिला प्रशासन से स्वर्णिमा के बेहतर शिक्षा की मांग की। इसके पहले जिले की पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला स्वर्णिमा से मिली थी। स्वर्णिमा की हर संभव मदद करने का भरोसा दिया था।

अवैध पार्किंग से सराफा कारोबारियों में आक्रोश

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। शहर के शंकर बाजार स्थित ओवर ब्रिज के नीचे सराफा मार्केट में अवैध पार्किंग से लोगों को भारी दिक्कतें हो रही हैं। ब्रिज के नीचे पुलिस सहायता केंद्र के आसपास दिन-रात दर्जनों

वाहनों के खड़े होने से स्थानीय लोगो को आवागमन में दिक्कतें हो रही हैं। अवैध पार्किंग से सराफा कारोबार में पड़ रहे असर से व्यापारियों में आक्रोश है। व्यापारियों ने प्रशासन से अवैध पार्किंग बन्द कराने की मांग की है।

शोक सभा में बुंदेली सेना ने दी श्रद्धांजलि

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। देश के जानेमाने पत्रकार टिल्लन रिछारिया और नगर के प्रतिष्ठित व्यापारी नरेंद्र अग्रवाल के आकस्मिक निधन पर बुंदेली सेना ने शोक सभा कर दिवंगत आत्मा की शान्ति को प्रार्थना और भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

रविवार को बुंदेली सेना जिलाध्यक्ष अजीत सिंह ने शोक सभा में बताया कि कर्वी के पुरानी बाजार में जन्मे टिल्लन रिछारिया ने देशभर में पत्रकारिता की अलख जगाई। उनका आकस्मिक निधन एक अपूर्णीय क्षति है। इसी तरह उद्योग व्यापार संगठन के प्रांतीय संगठन मंत्री रहे स्टेशन रोड कर्वी निवासी प्रतिष्ठित व्यापारी और पत्रकार अमित अग्रवाल के पिता नरेंद्र अग्रवाल का आकस्मिक निधन पीड़ादायी है। नगर के सदर बाजार में शोक सभा कर दोनों दिवंगत आत्मा की शान्ति को प्रार्थना व श्रद्धांजलि दी गई।

शोक सभा में अंकित पहारिया, जानकीशरण गुप्ता, रामनरेश यादव, धर्मेंद्र ओझा, सुरेंद्र शेरा, कर्वी माफी प्रधान बद्री सिंह, अशोक सिंह समेत आदि मौजूद रहे।

गोलीकांड की झूंठी साजिश या फिर हकीकत?

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। जिले में एक युवक को संदिग्ध दशा में पैर में गोली लगने का मामला सामने आया है। पीड़ित युवक ने पुरानी रंजिश के चलते विपक्षियों पर गोली मारने का आरोप लगाया है। जिसके बाद सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस जांच में जुट गई है।

ये मामला राजापुर थाना क्षेत्र के तीर मऊ गांव का है। जहां देर शाम जानकी शुक्ला नाम के व्यक्ति को संदिग्ध दशा में पैर में गोली लग गयी। जिस पर घायल युवक ने अपने विपक्षियों पर पुरानी रंजिश के चलते गोली मारने का गंभीर आरोप लगाया है। घायल व्यक्ति को पुलिस ने इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया है। फॉरेंसिक टीम को मौके पर बुलाकर पुलिस ने मामले की जांच करना शुरू कर दिया है। पीड़ित की तहरीर पर सात लोगों के खिलाफ पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है।

इस मामले में प्रभारी राजापुर सुभाष चैरसिया ने बताय कि घटना संदिग्ध है। दोपहर 12 बजे घायल जानकी शुक्ला का भाई पारसनाथ गांव के ही प्रेमचंद्र त्रिपाठी नाम के व्यक्ति के घर को सुनसान पाकर घर का ताला तोड़कर अंदर घुस गया था। जिसको ग्रामीणों ने पकड़कर पुलिस के हवाले किया था। इस पर गृह स्वामी प्रेमचंद त्रिपाठी की तहरीर पर आरोपी पारसनाथ के खिलाफ शाम को मामला दर्ज किया है। आरोपी पारसनाथ के भाई जानकी शुक्ला को गोली लगने की सूचना मिली थी। ऐसे में ये मामला संदिग्ध लग रहा है।

प्रेमी संग बहू ने सास-ससुर को पीटा

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। सास-ससुर को बहू के दूसरे के साथ अवैध संबंध बनाने का विरोध करना भारी पड़ गया। बहू ने प्रेमी के साथ मिलकर सास-ससुर की जमकर पिटाई कर दी। सास-ससुर गंभीर रूप से घायल हैं। सास-ससुर की शिकायत पर पुलिस कार्रवाई में जुटी है।

ये मामला मऊ थाने के बिहटा गांव का है। पीड़ित सास-ससुर ने बताया कि बेटे रविन्द्र की शादी आठ साल पहले राजापुर की रहने वाली गीता से हुआ था। मेरे बेटे-बहू को तीन बच्चे हैं, लेकिन मेरे बेटे के बाहर कमारे जाने के बाद बहू किसी गैर आदमी के साथ नाजायज संबंध रखती है। बहू का गांव के नीरज नाम के व्यक्ति से पिछले दो सालों से अवैध संबंध चल रहा है। वह खुलेआम बहू से मिलने को घर आता है। विरोध पर बहू ने अपने प्रेमी के साथ मिलकर सास-ससुर की पिटाई कर दी। इस मामले को लेकर पुलिस अधीक्षक कार्यालय आए। आरोपी बहू व उसके प्रेमी के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की है। इस मामले में मऊ थाना प्रभारी ने बताया कि मामला संज्ञान में आया है। जल्द आगे की कार्रवाई की जाएगी।

रानीपुर टाइगर रिजर्व को विकसित करने की तैयारी तेज

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। उप्र का चैथा रानीपुर टाइगर रिजर्व पर्यटकों के लिए खास पर्यटन का केन्द्र बनेगा। साथ ही रोजगार के मौके भी बढ़ेंगे। पन्ना टाइगर रिजर्व से महज 150 किमी में खुले आसमान के नीचे बाघों को खुलेआम घूमते देखा जा सकता है। चित्रकूट में बने रानीपुर टाइगर की तस्वीरें और भी बेहतर बनाने के लिए राज्य सरकार ने पर्यटन विभाग को भी जिम्मेदारी सौंपी है। पर्यटन विभाग के आधिकारी अनुपम श्रीवास्तव ने बताया कि शासन को तरफ से आदेश आ चुका है। जिले के रानीपुर टाइगर रिजर्व मारकुण्डी निरीक्षण गृह और उसके आसपास के स्थानों पर चिन्हित भूमि को पर्यटन विकास परियोजना के निर्माण को पर्यटन विभाग को निःशुल्क हस्तान्तरण के प्रस्ताव को मंजूरी दी है। रानीपुर टाइगर रिजर्व को बेहतर सुविधाओं से लैस किया जाएगा। टाइगर रिजर्व और तेजी से विकसित होगा। भारत का 53वां रानीपुर टाइगर रिजर्व होगा। रानीपुर टाइगर रिजर्व में आज भी तेंदुआ, भालू, सांभर, चित्तीदार हिरण, चिकारा और कई पक्षी तथा सरीसृप पाए जाते हैं। देखभाल को वन विभाग के अधिकारी जुटे रहते हैं, लेकिन इसको बेहतर बनाने को यूपी और एमपी को मिलाकर पूरी तरीके से जमीन को बाउंड्रीवाल की जा रही है। रानीपुर टाइगर रिजर्व तैयार होते ही यहां तेजी से रोजगार के अवसर युवाओं को मिलेंगे। कोल आदिवासी जनजाति के लोग आसपास निवास करते हैं।

अवकाश के बावजूद निर्देश मिलने पर विद्यालय खुले, कई जगह नहीं पहुंचे बच्चे

बीकापुर-अयोध्या। शिक्षा क्षेत्र में शनिवार को मोहर्रम का अवकाश होने के बावजूद प्रधानमंत्री का लाइव प्रसारण सुनने के लिए उच्चाधिकारियों के निर्देश पर सुबह तमाम परिषदीय विद्यालय खुले। कुछ विद्यालय बंद भी मिले। देर शाम को विद्यालय खुलने का आए आदेश को लेकर अध्यापक तो पहुंचे लेकिन सुबह स्कूलों में बच्चे नहीं पहुंचे कुछ स्कूलों में नाममात्र को बच्चे दिखाई पड़े। अध्यापकों द्वारा टेबलेट और लैपटॉप के जरिए प्रधानमंत्री का संबोधन सुना गया। लेकिन संबोधन समाप्त होने के तुरंत बाद दोपहर 12 बजे तक विद्यालय बंद करके अध्यापक चले गए। कुछ स्कूल के अध्यापकों द्वारा नजदीक के बच्चों को घर से बुलाया गया। कमपोजिट विद्यालय शेरपुर पारा में दोपहर 11 बजे प्रधानाध्यापक कृष्ण कुमार सिंह, सहायक अध्यापक संजय उपाध्याय, चेतना गुप्ता आदि बच्चों के साथ प्रधानमंत्री का लाइव संबोधन सुनते हुए मिले।

बांग्लादेश में बीएनपी की रैली में जनसैलाब, सत्तारूढ़ दल से झड़प, 124 कार्यकर्ता हिरासत में

ढाका। बांग्लादेश में सत्तारूढ़ अवामी लीग और विपक्षी बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) के बीच शक्ति प्रदर्शन के दौरान बवाल थमने का नाम नहीं ले रहा। आरोप है कि पुलिस और अवामी लीग समर्थकों ने हुई बीएनपी की रैली को निशाना बनाया।

बीएनपी के वरिष्ठ संयुक्त महासचिव रूहुल कबीर रिजवी ने दावा किया है कि पुलिस ने उनके 124 कार्यकर्ताओं को हिरासत लिया है। साथ ही बल प्रयोग में 500 कार्यकर्ता घायल हो गए हैं। उन्होंने कहा है कि उनकी पार्टी के कार्यकर्ताओं पर जुल्म ढाया जा रहा है। 19 मई तक लगभग 1,450 बीएनपी समर्थकों के खिलाफ लगभग 320 मामले दर्ज किए गए हैं। साथ 1,514 नेताओं और कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया है। इस बीच गृहमंत्री असदुज्जमां खान कमाल ने कहा कि बीएनपी और कुछ राजनीतिक दल बांग्लादेश में अराजकता पैदा करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं। यह दल अपने कार्यकर्ताओं को आगजनी के लिए उकसा रहे हैं। उनके कार्यक्रम करने पर कोई रोक नहीं है। अगर अराजकता फैलाई जाती है तो पुलिस और सुरक्षा बल कार्रवाई करेंगे।

नेपाल में इंजीनियरिंग अनुसंधान पर सम्मेलन का भारतीय राजदूत ने किया उद्घाटन

काठमांडू। नेपाल में भारत के राजदूत नवीन श्रीवास्तव ने इंजीनियरिंग अनुसंधान पर एक सम्मेलन का उद्घाटन किया। कावरे जिले के धुलीखेल स्थित काठमांडू विश्वविद्यालय में आयोजित यह

सम्मेलन इंजीनियरिंग नवाचार और टिकाऊ प्रणालियों पर केंद्रित है। सम्मेलन का आयोजन भारतीय दूतावास और काठमांडू विश्वविद्यालय ने संयुक्त रूप से किया है।

'मेरा रूस में मौजूद रहना ज्यादा जरूरी', ब्रिक्स सम्मेलन में नहीं जाने की पुतिन ने बताई वजह

मॉस्को : रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ब्रिक्स देशों के सम्मेलन में शामिल होने के लिए दक्षिण अफ्रीका नहीं जा रहे हैं। पुतिन ने इसे लेकर कहा कि उनका रूस में रहना ज्यादा जरूरी है। बता दें कि पुतिन वीडियो लिंक के माध्यम से ब्रिक्स देशों के सम्मेलन में शामिल होंगे और रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव सम्मेलन में शामिल होने के लिए दक्षिण अफ्रीका जाएंगे। दक्षिण अफ्रीका ने भी की पुष्टि दक्षिण अफ्रीकी अधिकारियों ने बीती 19 जुलाई को बताया कि पुतिन ब्रिक्स सम्मेलन में शामिल होने के लिए दक्षिण अफ्रीका नहीं आ रहे हैं। दक्षिण अफ्रीकी राष्ट्रपति सिरिल

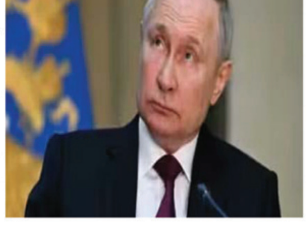

रामफोसा के प्रवक्ता विंसेंट मागवेनया ने जानकारी देते हुए बताया कि 'आपसी सहमति के बाद राष्ट्रपति पुतिन सम्मेलन में हिस्सा नहीं लेंगे।' बता दें कि दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में 22-24 अगस्त के बीच ब्रिक्स सम्मेलन आयोजित होना है।

हिंद-प्रशांत क्षेत्र की सुरक्षा को भारत के साथ सहयोग करेंगे ऑस्ट्रेलिया-अमेरिका

ब्रिसबेन। अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया हिंद-प्रशांत क्षेत्र की सुरक्षा के लिए भारत के साथ सहयोग करेंगे। ब्रिसबेन में 33वें ऑस्ट्रेलिया-अमेरिका मंत्रिस्तरीय परामर्श में दोनों देशों ने कई अभ्यासों के माध्यम से प्रशांत क्षेत्र की सेनाओं के साथ अंतर-क्षमता बढ़ाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की। अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन और रक्षा मंत्री लॉयड जे. ऑस्टिन के साथ ऑस्ट्रेलियाई उप प्रधानमंत्री रिचर्ड मार्ल्स और विदेश मंत्री पेनी वोंग ने वार्ता के दौरान हिंद प्रशांत क्षेत्र की सुरक्षा और स्थिरता सुनिश्चित करने पर जोर दिया। इसके लिए भारत, जापान, इंडोनेशिया, फिलीपींस और कोरिया के साथ सहयोग करने पर सहमति जताई गई। बैठक के दौरान फिजी, इंडोनेशिया, पापुआ न्यू गिनी और टोंगा की पहली बार अभ्यास तालिस्मान सबरे 2023 में भागीदारी के साथ-साथ उद्घाटन पर्यवेक्षकों के रूप में भारत, सिंगापुर, थाईलैंड और फिलीपींस का स्वागत किया गया। दोनों देशों ने पारंपरिक रूप से सशस्त्र, परमाणु संचालित पनडुब्बी क्षमता क्षमताओं के विकास की दिशा में ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन और अमेरिका के बीच त्रिपक्षीय सुरक्षा समझौते के तहत प्रगति का स्वागत किया। पनडुब्बियां खरीदेगा। ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया दोनों एसएसएन-एयूके यूएस पनडुब्बियों को प्राप्त करेंगे,

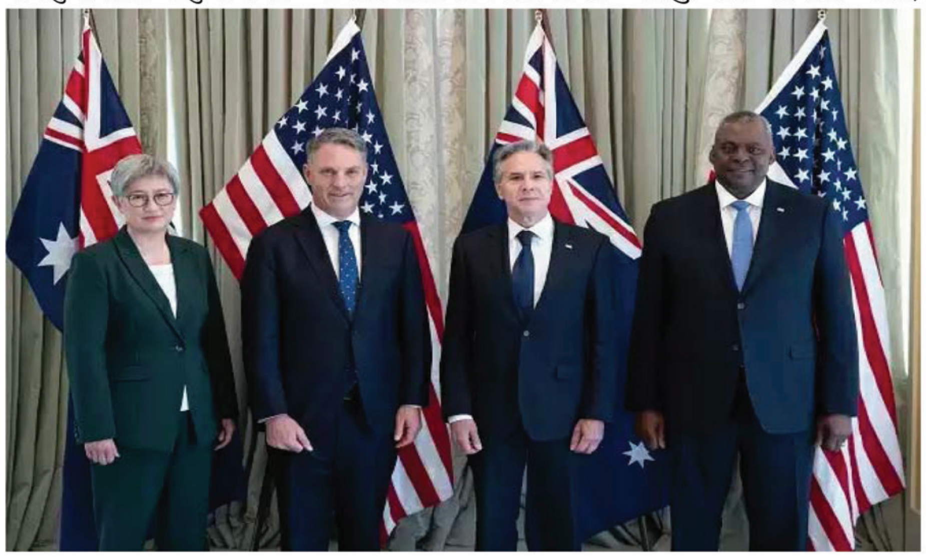

के ऑस्ट्रेलियाई अधिग्रहण और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में स्थिरता और सुरक्षा की रक्षा के लिए उन्नत ऑस्ट्रेलिया शुरू में अमेरिका से तीन वर्जीनिया श्रेणी की परमाणु संचालित हमलावर जिसमें ब्रिटिश उत्पादन ऑस्ट्रेलि या की तुलना में थोड़ा पहले शुरू होगा।

इंटरनेट से हटाया जा रहा है बर्खास्त चीनी विदेश मंत्री का रिकॉर्ड

काठमांडू। चीन के बर्खास्त किए गए विदेश मंत्री किन गैंग से संबंधित सभी अभिलेखों को चीन के सरकारी वेबसाइट और सोशल मीडिया साइट से हटाया जा रहा है। करीब सात महीने तक चीन के विदेश मंत्री रहते जितने भी कार्यक्रमों, बैठकों और सभा-सम्मेलनों में किन गैंग सहभागी हुए थे उन सभी रिकॉर्ड को हटाया जा रहा है। चीनी विदेश मंत्रालय ने अपने आधिकारिक वेबसाइट https://www.fmprc.gov.cn/ से किन गैंग संबंधित सभी सामग्रियों को हटा दिया है। अपने सात महीने के कार्यकाल के दौरान किन गैंग ने कई महत्वपूर्ण द्विपक्षीय मुलाकात करने के साथ कई देशों का भ्रमण भी किया था, लेकिन विदेश मंत्रालय ने उन सभी अभिलेखों को अपने आधिकारिक वेबसाइट से हटा दिया है। इतना ही नहीं, चीन की सबसे बड़ी सोशल मीडिया साइट विबो से भी किन गैंग से संबंधित सभी सामग्रियों को डिलीट करवा दिया गया है। इस साइट पर चीनी विदेश मंत्रालय के आधिकारिक पेज से भी किन गैंग से संबंधित खबर, फोटो, सूचना आदि सभी को हटा दिया गया है। इसी तरह चीन की सबसे लोकप्रिय

सोशल साइट वी-चैट से भी किन गैंग से संबंधित सामग्रियों को हटाने का काम चल रहा है। हालांकि इस साइट में किन गैंग से संबंधित कुछ सामग्रियां अभी भी दिखाई दे रही हैं, लेकिन वह विदेश मंत्री के रूप में नहीं बल्कि जब किन गैंग अमेरिका में राजदूत के पद पर कार्यरत थे उस समय की कुछ सामग्रियां इसमें मौजूद हैं। चीन के स्टेट काउंसलर यानी कैबिनेट मंत्रियों की जानकारी देने वाली आधिकारिक वेबसाइट http://www.gov.cn/ में किन गैंग के नाम के आगे मंत्री या पूर्व मंत्री पद का उल्लेख नहीं है। हालांकि स्टेट काउंसलरों की सूची में अभी भी उनका नाम हटाया नहीं गया है।

चीनी गिरोह के जाल में फंसे नेपाली, विदेश मंत्रालय ने जारी की ट्रैवल एडवाइजरी

काठमांडू। नेपाल के विदेश मंत्रालय ने शुक्रवार को एक ट्रैवल एडवाइजरी जारी करते हुए अपने नागरिकों को विजिट वीजा पर थाईलैंड और म्यांमार ना जाने का आग्रह किया है। विदेश मंत्रालय की तरफ से जारी बयान में कहा गया है कि झूठे आश्वासन और प्रलोभन में पड़ कर थाईलैंड और म्यांमार जैसे देशों में नौकरी के लिए जाने से बचें। हाल ही में नेपाल सरकार को यह शिकायत मिली है कि चीनी आईटी कंपनियों में काम करने के नाम पर दर्जनों नेपाली नागरिकों को थाईलैंड और म्यांमार बुलाकर ना सिर्फ उन सभी के पासपोर्ट जब्त कर लिए गए हैं बल्कि उन सभी को बन्धक बनाकर रखा गया है। कई फर्जी चीनी कंपनियां नेपाल के अखबारों में रोजगार के लिए विज्ञापन प्रकाशित करती हैं और विजिट वीजा दिलाकर उनको थाईलैंड और म्यांमार जैसे देशों में बुला लिया जाता है। बाद में उन्हें ना तो वादे के मुताबिक कोई काम

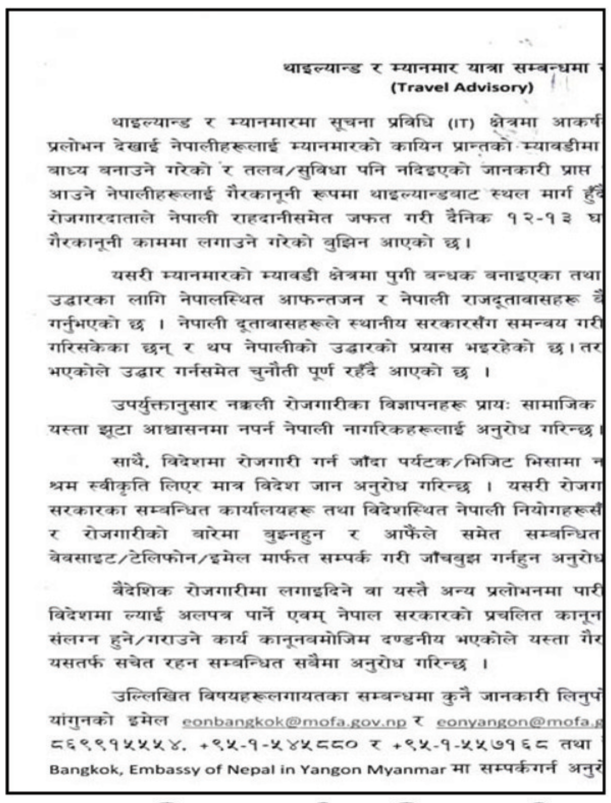

थाइल्यान्ड र म्यानमार यात्रा सम्बन्धमा
(Travel Advisory)

थाइल्यान्ड र म्यानमारमा सूचना प्रविधि (IT) क्षेत्रमा आकर्ष
प्रलोभन देखाई नेपालीहरूलाई म्यानमारको कायिन प्रान्तको म्यावडीमा
बाध्य बनाउने गरेको र तलब/सुविधा पनि नदिइएको जानकारी प्राप्त
आउने नेपालीहरूलाई गैरकानूनी रूपमा थाइल्यान्डबाट स्थल मार्ग हुँदै
रोजगारदाताले नेपाली राहदानीसमेत जफत गरी दैनिक १२-१३ घ
गैरकानूनी काममा लगाउने गरेको बुझिन आएको छ।

यसरी म्यानमारको म्यावडी क्षेत्रमा पुगी बन्धक बनाइएका तथा
उद्धारका लागि नेपालस्थित आफन्तजन र नेपाली राजदूतावासहरू
गर्नुभएको छ । नेपाली दूतावासहरूले स्थानीय सरकारसँग समन्वय गरी
गरिसकेका छन् र थप नेपालीको उद्धारको प्रयास भइरहेको छ। तर
भएकोले उद्धार गर्नसमेत चुनौती पूर्ण रहँदै आएको छ ।

उपर्युक्तानुसार नक्कली रोजगारीका विज्ञापनहरू प्रायः सामाजिक
यस्ता झुटा आश्वासनमा नपर्न नेपाली नागरिकहरूलाई अनुरोध गरिन्छ।

साथै, विदेशमा रोजगारी गर्न जाँदा पर्यटक/भिजिट भिसामा न
श्रम स्वीकृति लिएर मात्र विदेश जान अनुरोध गरिन्छ । यसरी रोजगा
सरकारका सम्बन्धित कार्यालयहरू तथा विदेशस्थित नेपाली नियोगहरूसँ
र रोजगारीको बारेमा बुझ्नहुन र आफैंले समेत सम्बन्धित
वेबसाइट/टेलिफोन/इमेल मार्फत सम्पर्क गरी जाँचबुझ गर्नहुन अनुरोध

वैदेशिक रोजगारीमा लगाइदिने वा यस्तै अन्य प्रलोभनमा पारी
विदेशमा ल्याई अलपत्र पार्ने एवम् नेपाल सरकारको प्रचलित कानून
संलग्न हुने/गराउने कार्य कानूनबमोजिम दण्डनीय भएकोले यस्ता गैर
यसतर्फ सचेत रहन सम्बन्धित सबैमा अनुरोध गरिन्छ ।

उल्लिखित विषयहरूलगायतका सम्बन्धमा कुनै जानकारी लिनुप
यांगुनको इमेल eonbangkok@mofa.gov.np र eonyangon@mofa.
८६९९१५५५४, +९५-१-५४५८८० र +९५-१-५५७१६८ तथा
Bangkok, Embassy of Nepal in Yangon Myanmar मा सम्पर्कगर्न अनुरो

मिलता है और ना ही जितना कहा गया होता है उतना पैसा ही दिया जाता है। विरोध करने पर इनको बन्धक बनाकर यातना दी जाती है। मंत्रालय ने एक बयान जारी कर हाल ही में थाईलैंड और म्यांमार में सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) क्षेत्र में आकर्षक नौकरियों और सुविधाओं का लालच दिखाकर म्यांमार के कायिन प्रांत के म्यावाडी में बंधक बनाकर अवैध काम करने के लिए मजबूर किए जाने की जानकारी दी है। मंत्रालय ने अपने सभी नागरिकों से इस तरह की गैरकानूनी गतिविधियां न करने और इसके प्रति सचेत रहने का भी अनुरोध किया है। बयान में कहा गया है कि किसी व्यक्ति को विदेशी रोजगार या अन्य समान प्रलोभन के लिए विदेश ले जाना और ऐसी गतिविधियों में शामिल होना दोनों ही नेपाल सरकार के प्रचलित कानूनों के अनुसार दंडनीय अपराध है। मंत्रालय ने अपने बयान में कहा है कि नेपाली नागरिकों को प्रलोभन दिखाकर थाईलैंड के रास्ते म्यांमार ले जाना और उनके पासपोर्ट जब्त कर उनसे 12-12 घंटे लगातार ऑनलाइन ठगी का काम कराए जाने की कई शिकायतें मिली हैं। मंत्रालय ने इस तरह की ठगी में फंसे अपने नागरिकों को वहां से सुरक्षित निकालने के लिए बैंकॉक तथा यांगुन स्थित अपने दूतावासों को निर्देश दिया है। साथ ही दोनों देशों में एक हेल्पलाइन नम्बर भी जारी करते हुए वहां फंसे नेपाली नागरिकों से दूतावास में संपर्क करने को कहा गया है।

मशहूर रैपर कान्ये वेस्ट का ट्विटर अकाउंट बहाल, आठ महीने पहले किया गया था निलंबित

वाशिंगटन। रैपर कान्ये वेस्ट का सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स यानी ट्विटर अकाउंट बहाल कर दिया गया है। वर्तमान में 'ये' के नाम से जाने वाले रैपर का अकाउंट करीब आठ महीने पहले निलंबित किया गया था। उन पर ट्विटर के हिंसा भड़काने पर रोक लगाने वाले नियमों का उल्लंघन करने का आरोप लगा था। आखिरी पोस्ट दिसंबर क ी ये के अकाउंट पर आखिरी पोस्ट एक दिसंबर की है। इसके एक दिन बाद ही उनका अकाउंट निलंबित कर दिया गया था। बता दें,

एलन मस्क ने ट्विटर को नया नाम एक्स दिया है। पोस्ट पर नहीं होंगे विज्ञापनमीडिया रिपोर्ट ने बताया कि ये एक्स पर अपने खाते से कमाई करने के पात्र नहीं होंगे और उनके पोस्ट पर विज्ञापन नहीं दिखाई देंगे। गौरतलब है, ये का खाता पहले भी निलंबित हो चुका है। दिसंबर में निलबिंत होने से ठीक दो महीने पहले ही रैपर के अकाउंट को बहाल किया गया था। बताया जा रहा है कि उन्होंने एक पोस्ट किया था, जिसमें स्टार ऑफ डेविड के अंदर एक स्वस्तिक चिन्ह दिखाया गया था। **क्या है स्टार ऑफ डेविड?** बता दें, स्टार ऑफ डेविड जीवन के कई पहलुओं, विश्वास, यहूदी परंपरा और यहूदी राज्य इजरायल का प्रतीक है। यहूदी प्रतीक को अपने धर्म, संस्कृति और राष्ट्र के साथ गर्व और पहचान के प्रतीक के रूप में उपयोग करते हैं। अकाउंट पर नहीं कोई नई पोस्ट मामले से परिचित एक व्यक्ति का हवाला देते हुए रिपोर्ट में कहा गया है कि सोशल मीडिया प्लटफॉर्म ने आश्वासन मिलने के बाद ये का खाता बहाल किया गया है। हालांकि, अकाउंट बहाल होने के बाद भी ये ने अभी तक कुछ पोस्ट नहीं किया है।

अमेरिका में राष्ट्रपति पद के लिए तीन भारतवंशियों ने ठोंका दावा, जानिए इनके बारे में

वाशिंगटन: अमेरिका में अगले साल राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव होने हैं। इसके लिए अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन और डोनाल्ड ट्रंप के बीच अभी से मुकाबला देखा जा रहा है। हालांकि, इस बीच कुछ भारतीय-अमेरिकी नेताओं के नाम भी इस पद के लिए सामने आ रहे हैं, जो अमेरिका को और अच्छा बनाने के लिए ट्रंप को पछाड़ना चाह रहे हैं। बता दें, पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के खिलाफ विवेक रामास्वामी, निक्की हेली और हर्षवर्धन सिंह चुनाव लड़ेंगे। हालांकि, ट्रंप तमाम कानूनी

चुनौतियों के बावजूद 2024 के लिए रिपब्लिकन पार्टी की उम्मीदवारी की दौड़ में आगे चल रहे हैं। अगली साल होगा उम्मीदवार का चयन रिपब्लिकन अपनी पार्टी के अगले राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार को औपचारिक रूप से चुनने के लिए अगले साल जुलाई में एक राष्ट्रीय सम्मेलन करेगा। ये सम्मेलन विस्कॉन्सिन के मिल्वौकी शहर में 15 से 18 जुलाई तक होगा। राष्ट्रपति पद के चुनाव के लिए दावेदारी ठोंकने वालों के बारे में जाने कुछ खास बातें- भारतीय मूल की रिपब्लिकन नेता निक्की हेली दक्षिण कैरोलिना की दो बार की गवर्नर और संयुक्त राष्ट्र में अमेरिका की पूर्व राजदूत रह चुकी हैं।

दुबई में उत्तर प्रदेश के युवक की लॉटरी ने बदली किस्मत, 25 साल तक हर माह मिलेंगे पांच लाख रुपये से ज्यादा

दुबई। दुबई में काम करने वाले भारत के उत्तर प्रदेश के युवक मोहम्मद आदिल खान की किस्मत लॉटरी से बदल गई है। आदिल ने संयुक्त अरब अमीरात में बंपर लॉटरी जीती है। वह फास्ट-5 लॉटरी का पहला विजेता बन गया। उसे अगले 25 साल तक हर माह 5.5 लाख रुपये इनाम के तौर पर

मिलेंगे।
फास्ट-5 लॉटरी कंपनी ने गुरुवार को विजेताओं के नाम की घोषणा की। इसमें आदिल का नाम भी शामिल है। आदिल खान दुबई में एक रियल एस्टेट कंपनी में इंटीरियर डिजाइन सलाहकार है। आदिल को लॉटरी जीतने के बाद प्रति माह 25 हजार दिरहम यानी 5,59,822 रुपये दिया जाएगा। लॉटरी जीतने के बाद से आदिल खुश है। उसका कहना है कि वह अपने परिवार में कमाने वाला इकलौता व्यक्ति है। कोविड 19 महामारी के दौरान उसे भाई का निधन हो चुका है।
फास्ट-5 मेगा पुरस्कार का आयोजन करने वाले टाइचेरोस के मार्केटिंग प्रमुख पॉल चैडर ने कहा कि आठ सप्ताह से भी कम समय में फास्ट-5 के विजेताओं की घोषणा करते हुए खुशी हो रही है। पॉल चैडर ने कहा कि पुरस्कार विजेता को हर साल अगले 25 वर्ष तक नियमित पांच लाख रुपये से अधिक का भुगतान हम करेंगे।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

मॉस्को में फिर ड्रोन हमला, यूक्रेन पर लगा आरोप, एयरपोर्ट किया गया बंद

मास्को। रूस की राजधानी मॉस्को में फिर से ड्रोन हमला हुआ है। इस हमले का आरोप यूक्रेन पर लगा है। खास बात ये है कि यह हमला उस वक्त हुआ, जब रूस की एयर डिफेंस सिस्टम भी सक्रिय था, इसके बावजूद रूस ड्रोन हमले को नहीं टाल सका। हमले में दो इमारतें क्षतिग्रस्त हुई हैं। ड्रोन हमले का वीडियो भी सामने आया है, जो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। मॉस्को के मेयर ने भी हमले की पुष्टि की है।

एयरपोर्ट किया गया बंद रूस ने एहतियातन अपना नुकावो एयरपोर्ट बंद कर दिया है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, मॉस्को की आईक्यू क्वार्टर नामक हाई राइज बिल्डिंग पर हमला हुआ। इस इमारत में रिहायशी अपार्टमेंट्स और सरकारी कार्यालय हैं। रिपोर्ट्स के अनुसार, इस हमले में एक व्यक्ति घायल भी हुआ है। मॉस्को में एक अन्य इमारत पर भी ड्रोन हमले की खबर है। एक वीडियो सामने आया है, जिसमें एक महिला अपने अपार्टमेंट सोते नजर आ रही है, तभी उसकी इमारत से एक ड्रोन आकर टकराता है। इसका वीडियो भी सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है।

मॉस्को के मेयर ने की हमले की पुष्टि मॉस्को के मेयर सर्गेई सोबयानिन ने भी मॉस्को की दो इमारतों पर ड्रोन हमले की पुष्टि की है। हालांकि उन्होंने हमले में ज्यादा नुकसान नहीं होने की बात कही। हमला रविवार सुबह हुआ। रूस के रक्षा मंत्रालय ने बताया है कि रूस के एयर डिफेंस ने एक यूक्रेनी ड्रोन को पश्चिमी मॉस्को

में तबाह कर दिया। बीते हफ्ते भी मॉस्को में दो ड्रोन हमले की खबर है। इसका भी आरोप यूक्रेन पर लगा था।

राजधानी मॉस्को पर लगातार हो रहे ड्रोन हमले हाल के महीनों में रूस की राजधानी मॉस्को पर कई ड्रोन हमले हुए हैं। बीती तीन मई को भी रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के आवास पर ड्रोन हमला हुआ था। रूस ने इसका आरोप यूक्रेन पर लगाया था। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, इस साल रूस और रूस द्वारा नियंत्रित क्षेत्रों पर सौ से ज्यादा ड्रोन हमले हुए हैं। रूस का कहना है कि चार जुलाई को भी राजधानी मॉस्को में अलग-अलग जगहों पर पांच ड्रोन हमले हुए थे।

रूस-यूक्रेन युद्ध में ड्रोन निभा रहे अहम भूमिका ब्रिटेन के एक थिंक टैंक रॉयल यूनाइटेड सर्विसेज इंस्टीट्यूट ने बीते दिनों एक रिपोर्ट जारी की थी, जिसमें बताया गया कि रूस यूक्रेन युद्ध में भारी संख्या में ड्रोन्स का इस्तेमाल किया जा रहा है। रिपोर्ट के अनुसार, यूक्रेन अब युद्धक्षेत्र में हर महीने करीब 10 हजार ड्रोन्स का इस्तेमाल कर रहा है। यूरोपीय देशों, अमेरिका और अन्य देशों से यूक्रेन को बड़ी संख्या में ड्रोन्स मिल रहे हैं। अब रूस की सेना भी बड़ी मात्रा में ड्रोन्स की खरीद कर रही है।

बांग्लादेश में चटगांव-10 सीट पर उपचुनाव के लिए मतदान शुरू

ढाका। बांग्लादेश के चटगांव-10 निवार्चन क्षेत्र के उपचुनाव के लिए आज सुबह आठ बजे मतदान शुरू हो गया। इस निर्वाचन क्षेत्र में डबलमूरिंग, पहारताली और हलीशहर के इलाके शामिल हैं। निर्वाचन क्षेत्र के

156 मतदान केंद्रों के 1,261 बूथों पर 2,110 ईवीएम के जरिए शाम चार बजे तक मतदान होगा। सुबह बूथों पर मतदाताओं की संख्या कम रही। निर्वाचन अधिकारियों का मानना है कि जैसे-जैसे दिन चढ़ेगा मतदाताओं की उपस्थिति बढ़ेगी।

चटगांव-10 निर्वाचन क्षेत्र के रिटर्निंग ऑफिसर और चटगांव क्षेत्रीय चुनाव अधिकारी मुहम्मद हसनुज्जमां ने कहा है कि 4,106 मतदान अधिकारियों की देखरेख में वोटिंग शुरू हुई है। मतदान केंद्रों पर 1,407 सीसीटीवी इंस्टाल किए गए हैं। यहां अवामी लीग के मोहिउद्दीन बच्चू (नाव चुनाव चिह्न), स्वतंत्र मंजुरुल इस्लाम भुइयां (रॉकेट चुनाव चिह्न), जातीय पार्टी के मोहम्मद शमसुल आलम (हल चुनाव चिह्न), बीएनपी के दीपक कुमार पालित (गोल्डन फाइबर चुनाव चिह्न) और बांग्लादेश सांस्कृतिक मुक्ति जोत के राशिद मिया (छड़ी चुनाव चिह्न) मैदान में हैं। आयोग ने अगरगांव स्थिति निर्वाचन भवन में मतदान पर नजर रखने के लिए नियंत्रण कक्ष की स्थापना की है। आयोग के जनसंपर्क सहायक निदेशक मो. अशादुल हक ने कहा कि अभी तक कहीं से भी अप्रिय घटना की सूचना नहीं है।